श्रीजी

बाणी

श्री नेही नागरीदास जी

प्रकाशक :

श्री किशोरी चरण रजलिप्सु

बाबा किशोरीशरण

श्यामाकुञ्ज, दुसायत, वृन्दावन

श्रीजी

वाणी

श्री नेही नागरीदास जी



प्रकाशक :
श्री किशोरी चरण रजलिप्सु
बाबा किशोरीशरण
:
श्यामाकुञ्ज, दुसायत, वृन्दावन

प्रकाशक :
श्री किशोरी चरण रजलिप्सु
बाबा किशोरीशरण
श्यामा कुञ्ज, दुसायत, वृन्दावन

सम्पादक :
नन्दकुमार शर्मा एम. ए
श्रीमद्भागवत धाम, सेवाकुञ्ज-वृन्दावन

प्रथमवार
१०००

न्योछावर : सात रुपये पचास पैसे

श्रीधामवृन्दावन-पाटोत्सव
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी, २०३५
१२ नवम्बर १९७८

मुद्रक :
रतन प्रेस, अठखम्भा
वृन्दावन

वाणी के सम्बन्ध में

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय में वाणी साहित्य की प्रचुरता है। वाणी-कार, महानुभाव अपनी साधनाओं में जिस रस का समास्वादन करते थे, उसी का वर्णन अपनी आत्मनिष्ठा से स्वरचित पद्यों में करते रहते थे।

इन अनुभवी संतों की वाणी का प्रभाव भवाटवी व्यथित सांसारिक जनों के हृदय पर आज भी प्रत्यक्ष होता है।

श्री नेही नागरीदास जी महाराज की वाणी भी उनके श्रीहित रस रीति समाविष्ट चित्तका अनुपम दर्शन है। इसमें प्रिया प्रियतम के दिव्याति-दिव्य रस सिद्धान्त का वर्णन किया है। वे अपने में जितने एकान्त सेवी, भजननिष्ठ, निस्पृह, निर्भीक, स्पष्ट वक्ता हैं, वे सभी गुण इनकी भावमयी वाणी में मुखरित हुए हैं।

श्री हरिवंशचन्द्र महाप्रभु के नित्य विहार में निज भावना को स्थित करके श्री नागरीदास जी ने पद, दोहावली के द्वारा श्री राधावल्लभ जी की विविध केलि का सरस एवं हृदयग्राही वर्णन किया है। श्री हरिवंश को सर्वो-परि तत्त्व, श्री सेवक जी की भाँति मानते हैं :—

बानी श्री हरिवंश की धर्मी धर्म प्रतीति।
करी नागरीदास जू भगवत मुदित सु रीति॥

—श्री भगवत मुदित

आपने अपने उज्ज्वल चरित्र और वाणी के माध्यम से रसिक समाज को नवीन चेतना प्रदान की है तथा राधावल्लभीय सम्प्रदाय के आधार को सुस्थिरत्व प्रदान किया है। उपासना मार्ग के गाम्भीर्य को स्पष्ट करने में नागरीदास शिल्पकार माने जाते हैं :—

मारग रसिक नरेश के निपट विकट है चाल।
तन मन औंटि, सिराय, गरि, वृथा बजावत गाल॥

मूरति नैननि में रमी हिय मधि गुन रहे पूरि।
दसा न कोऊ समुझि है प्रेम पहुँचनौ दूरि॥

प्रेम भजन की चटपटी ताहि सुहाइ न आन।
कल काहे की रैन दिन रति जब पकरयौ प्रान॥

नागरीदास जी द्वारा रचित पद ३३० एवं दोहा ६३७ तथा एक हिताष्टक भी उपलब्ध है। वह प्रस्तुत प्रकाशन में प्रकाशित हैं। इनके पदों में व्रजभाषा का प्रवाह देखने योग्य है। कहीं-कहीं बुन्देलखण्डी के शब्दों का भी बड़े ढङ्ग वे प्रयोग किया है। किन्तु प्रत्येक पद में इनके निजी अनुभव की छाप लगी मिलती है। पद पढ़ने से हृदय पर चित्र सा चित्रित हो जाता है। श्री ध्रुवदास जी ने लिखा है :—

नेही नागरिदास अति जानत नेह की रीति।
दिन दुलराई लाड़िली लाल रँगीली प्रीति॥

—भक्त नामावलि

[इनकी वाणी का रचना काल विक्रम संवत् १६२० से १६६० तक मान सकते हैं।]

इन्होंने अपनी वाणी में युगल विहार का वर्णन किया है, और उसके साथ प्रेम-अनन्य-भजन के भावों का भी सूक्ष्म रीति से सुवोध वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री सेवक जी महाराज के हित कल्पतरु को श्री नागरीदास जी ने पल्लवित, पुष्पित, फलित किया है। इनकी रचनाओं में हित महाप्रभु की वाणी का जितना उत्कर्ष प्राप्त है, अन्यत्र कहीं देखने में नहीं आया।

एक सवैया में इन्होंने अपनी दृढ़निष्ठा, का परिचय दिया है :—

सुन्दर श्री वरसानौ निवास और बास बसौं वृन्दावन धाम है।
देवी हमारैं श्री राधिका नागरी गोत सौं श्री हरिवंश को नाम है॥
देव हमारैं श्री राधिकावल्लभ रसिक अनन्य सभा विश्राम है।
नाम है नागरिदासि अली बृषभानु लली की गली कौ गुलाम है॥

इनके विरक्त जीवन का परिचय ग्रन्थ के साथ संलग्न है उसे भी अवश्य पढ़ें।

यह ग्रन्थ सर्व प्रथम प्रकाशित करके रसप्लुत रसिकों के कर-कमलों में समर्पित करते हुए आज मुझे अपार हर्ष है। इस ग्रन्थ रत्न में जितनी विशेषतायें हैं उसके अनुसार इसका प्रकाशन वहुत पहले ही हो जाना था, परन्तु पता नहीं क्यों? यह प्रकाश में नहीं आया। वैसे हितधर्मी तथा व्रज-रसवेता महानुभावों में इस ग्रन्थ का सदा से समादर होता आया है। समाजगान में भी समय-समय पर इनकी पदावलि वड़े चाव से गाई जाती रहीं हैं। सत्य तो यह है कि जव राधावल्लभ लाल चाहें तव ही सभी दुर्लभ कार्य भी सुलभ हो जाते हैं।

इसके प्रकाशन—सम्पादन में जो हस्तलिखित वाणियाँ प्राप्त हुईं, उनमें भी बहुत से पाठ भेद थे, हमने उन पाठ भेदों को नीचे टिप्पणी में लिखा है। टिप्पणी में कठिन शब्दों के यथा संभव अर्थ भी दिये गये हैं। जिससे सरलता से अर्थ लग जाता है। इस कठिन शब्दार्थ शृङ्खला खोलने में शब्द कोश ग्रन्थों का आश्रय लिया गया है। कहीं-कहीं संतों के भाव के अनुसार भी शब्दार्थ किये गये हैं। जिन महानुभावों की कृपा से यह प्रकाशन सम्भव हो सका है उस कृपा को भी हम अपनी दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते। १००८ गो० श्री ललिताचरण जी महाराज, गोस्वामी श्री प्रीतमलाल जी आदि जिन्होंने उदारता-पूर्वक हस्तलिखित वाणी प्रदान की तथा समय-समय पर प्रकाशन सम्बन्धी परामर्श भी देते रहे। श्रीबाबा ध्रुवालिशरण जी, श्रीभगत जी धर्मचन्द जी, श्री बाबा तुलसीदास जी, आदि सभी महानुभावों के सहयोग से यह कार्य संपन्न हो सका है। मेरे ऊपर आचार्यवृन्द, रसिक जन सदा से कृपा करते आये हैं, और सदा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से कृपा करते रहेंगे, उन सभी का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

यह प्रकाशन की सेवा श्रीहित महाप्रभु की असीम अनुकम्पा से संभव हुई है, उन्होंने पहले अपनी वाणी श्रीराधा सुधानिधि की लगभग तीन सौ वर्ष प्राचीन "रसकुल्या" टीका दो भागों में प्रकाशित कराई है। जो अपने में एक अनूठी है। श्री रूपवाणी, स्फुटवाणी, इन सब प्रकाशित वाणियों का रसिक साधु समाज ने बहुत आदर किया है। अब यह प्राचीन रस उपासक नागरीदास जी की वाणी भी उन्हीं संतवाणी अध्येताओं को आनन्दित करे। यही श्रीहित महाप्रभु से प्रार्थना है। कामना है।

श्री किशोरी चरणरज लिप्सु
बाबा किशोरीशरण
श्यामा-कुन्ज, वृन्दावन.

श्री नेहीनागरीदास जी

का

जीवन-परिचय

श्रीनेही नागरीदास जी का नाम हित चरणैकनिष्ठ रसिक सन्तों में बड़े आदर से लिया जाता है। इन्होंने अपने जन्म से मध्य प्रदेश के बेरछा* नामक ग्राम की भक्ति भावमयी भूमि को पावन किया है। इनका जन्म पवित्र भगवद् भक्त राजवंश क्षत्रिय कुल में हुआ था। बाल्यकाल से ही इन्हें सन्त चरणों में प्रगाढ़ अनुराग था। कहीं भी सन्त दर्शन होते, ये लपक कर बड़ी निष्ठा से उनके चरण पकड़ लेते थे। इनके मन में अपने लिये गुरु की गवेषणा थी, और इसी लिये प्रत्येक साधु का संग करते और उनकी दिनचर्या उपासना आदि को बड़े ध्यान से देखते रहते। इनके इस संत-सेवी स्वभाव से संयोगवश एक दिन इन्हें स्वामी चतुर्भुजदास जी के दर्शन हो गये। श्री स्वामीजी महाराज के सद्-उपदेशों का प्रभाव इनके सरल, सुबोध, चित्त पर गहरा हुआ। 'सत्संगति कथय किं न करोति पुंसाम्।'

इनके चरित्र के मूल लेखक महात्मा भगवत्मुदित ने अपने ग्रन्थ "श्री रसिक अनन्यमाल" में लिखा है :—

धर्मी श्री हरिवंश के, तिनको भयौ जु संग।
रसिक नागरीदास उर, चढ़चौ प्रेम कौ रंग।।

उन दिनों श्रीस्वामी चतुर्भुजदासजी* हित संतमण्डली (जमात) को साथ लेकर देश भर में भगवत् भक्ति के प्रचार के लिये घूमते रहते थे। उनकी रसमयी वाणी तथा उनके दिव्य आचरणों का प्रभाव, तत्कालीन भावुक समाज के हृदय पर तुरन्त होता था। श्री नागरीदास के भक्ति भाव से पवित्र हुए हृदय पर, स्वामीजी के संग का रङ्ग गहरा चढ़ गया था।

चतुर्भुज गौड़ देश अनुरक्त।
देवी, चोर, प्रेत. किये भक्त।।

---

* यह ग्राम मध्यप्रदेश में भोपाल के समीप है। * रासमण्डल के ये प्रथम महन्त थे।



इस सत्संग में नेही नागरीदास जी का चित्त श्यामा-श्याम की नित्य नवीन रसोपासना से परिचित हुआ। अब इनका मन एकान्त चिन्तन के लिये आकुल हो उठा, और वे वृन्दावन आ गये। इनके साथ इनकी भावज भागमती भी आईं थीं। उनका हृदय भी विरक्त एवं हरि भक्ति से परिपूर्ण था। ये अपनी सच्चरित्रता के लिये उस समय बहुत प्रसिद्ध थीं। वृन्दावन पहुँच कर इन्होंने श्री हिताचार्य महाप्रभु के पुत्र गोस्वामी श्री वनचन्द्र जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की। जो धन घर से लाये थे, वह इन्होंने गुरु सेवा और साधु सेवा में लगाकर धन संग्रही वृत्ति से भी निश्चिन्तता प्राप्त कर ली। वृन्दावन के अनन्य निष्ठ विरक्त समुदाय में इनका नाम प्रमुखता से लिया जाने लगा।

इनका जीवन आधार श्रीहित वाणी में वर्णित नव-दम्पत्ति विहार विचार ही बन गया था। श्रीहित महाप्रभु की वाणी में ही इनके तन-मन-प्राण तन्मय से हो गये थे। हित वाणी के अतिरिक्त और कुछ सुनना बोलना या मनन करना इनको प्रिय नहीं लगता था। प्रातःकाल चतुरासी वाणी के किसी एक पद को पढ़ते और दिन रात उसी की भावना में छके रहते।

इनकी भावना नवधा भक्ति के नव सोपानों से ऊपर स्थित हो चुकी थी, अतः उन्हें भागवत आदि की वे कथायें जिनमें इनके सुकुमार प्यारे को थोड़ा भी श्रम होता हो, अच्छी नहीं लगती थीं।

ठीक ही है निकुञ्ज लीला भावना में जिनका प्रवेश नहीं है, उन्हें व्रज-लीला के माध्यम से भक्ति मार्ग का ज्ञान भागवत से सुगम हो जाता है। किन्तु जिन्होंने प्रेम के पूर्ण रूप रसोपासना के मार्ग को प्राप्त कर लिया है, उनके मन में व्रजलीला के प्रति उतना लोभ नहीं होता। इसी कारण नेही नागरीदास जी को निकुञ्ज लीला के अतिरिक्त और कुछ भी सुनना प्रिय नहीं लगता था। इस रस से अपरिचित लोग इन्हें बार-बार श्रीमद्-भागवत सुनने का आग्रह करते, तब ये लीला रस निमग्न मौन ही रह जाते, वे इनकी मौन धारणा से क्षुब्ध होकर इनके गुरुजी से चुगली तक भी कर देते, संत नागरीदास कुछ भी न कहते चुपचाप सुनते रहते।

एक दिन मार्ग में आते हुए इनके गुरु पुत्र गोस्वामी श्री नागरवर जी ने कुछ भागवत कथा प्रेमी भावुकों के आग्रह से श्री नागरीदासजी से कहा–

कि आज तो भागवत कथा सुनने के लिये चलो और अन्य अवतार कथाओं में भले ही आपका मन न लगता हो, किन्तु आज तो दशम स्कंध की कथा होगी।

गुरु पुत्र भी गुरु सदृश ही वन्दनीय और पूज्य-सेव्य होते हैं, यह विचार कर इन्होंने उनकी आज्ञा स्वीकार कर कथा सुनने चले गये। कथा प्रारम्भ हुई, व्रज लीलाओं के प्रसंग सुने जब धेनुकासुर बध लीला का प्रसंग आया, उस में उन्होंने सुना कि प्रभु ने धेनुकासुर को पछाड़ दिया। यह प्रसंग सुनते ही धड़ाम से गिर पड़े और उदास हो गये, थोड़ी देर मौन रहे और उठ कर वहाँ से चल दिये।

श्री गोस्वामी जी महाराज ने आग्रह एवं शपथ पूर्वक रोकते हुए पूछा कि आप क्यों जा रहे हैं ?

नागरीदास जी ने भाव विभोर होकर अपने नित्य चिंतन, तत्व को स्पष्ट करते हुए कहा :—

"चिबुक सुचारु प्रलोइ प्रबोधित।
तिन कर कहुँ गदहन पद सोभित ॥"

सुनते ही हित तनय गोस्वामी जी समझ गये कि नागरीदास जी की भावना 'हित-चौरासी' के सातवें पद पर चल रही थी। वे चुगुली करने वालों को बहुत ही फटकारते हुए बोले, भावना लीन साधकों की छेड़छाड़ करना ठीक नहीं। इस घटना से उत्तम रसिक जन नागरीदास के भावना पूर्ण हृदय को भली-भाँति समझ गये थे। सारे मानसिक विकारों को त्याग कर—

'सब सों हित निष्काम मति वृन्दावन विश्राम।
राधावल्लभ लाल को हृदय ध्यान मुख नाम ॥'

के अनुसार हित महाप्रभु प्रदर्शित भावनाओं में इनका चित्त रम चुका था। इनके सरस-सरल चित्त एवं उदात्त विचारों से इनके गुरुजी इनपर बहुत प्रसन्न रहते थे। किन्तु कुछ लोगों को इनके दिनों दिन बढ़ते भजनोत्कर्ष को देखकर श्री नागरीदास के प्रति अधिक जलन होती थी। इस नेही को कोई भी पराया नहीं लगता था।

एक दिन प्रातःकाल जब आप श्रीहित-चौरासी जी के ४९ उन्नचासवें पद की भावना कर रहे थे :—

देखि सखी राधा पिय केलि।
ये दोऊ खोरि, खिरक, गिरि गहवर विहरत कुँवर कंठ भुज मेलि ॥

पद में गह्वर वन की लीला भावना से प्रवाहित होकर आप बरसाना ग्राम गह्वर वन में जाकर पर्वत मानगढ़ की ऊपरी गुफा में निवास करने लगे। वहाँ के मनोहारी दृश्यों ने इनके मन को वश में कर लिया। गह्वर वन के चारों ओर हरी भरी लताओं में चाहे जब श्याम आ जाते हैं कभी भी श्री श्यामा जी भी आ जाती हैं। कभी-कभी दोनों गलवहियाँ डालकर आ जाते हैं। कभी फूल लेने, कभी नये-नये खेल-खेलने, युगल किशोर पधारते रहते हैं।

पर्वत पर निवास करते इन्हें बिना भोजन के तीन दिन व्यतीत हो गये थे। नयी-नयी भावनाओं से उन्हें देखने के लिये बेचैन हो गये थे। एक बार रात्रि में अचानक लता निकुञ्ज की झुकी हुई डाली को उठाकर श्री व्रजमणि श्री श्यामा जी प्रकट हो गईं। श्री नागरीदास के नेत्र अधीर होकर अपलक दर्शन करने में मुग्ध हो गये थे। जैसे इन्हें जीवन का सर्वस्व मिल गया हो। श्रीराधा बोलीं ! लीजिये प्रसाद पाइये–कहकर अमृत तुल्य प्रसाद निज कर-कमलों से प्रदान किया। पुनः आज्ञा की कि–हठ छोड़ कर ग्राम से मधुकरी करके ले आया करो। तुम्हारे भूखे रहने से हमें बहुत कष्ट होता है अन्यथा हमको ही प्रतिदिन प्रसाद देने आना पड़ेगा।

जहाँ अपने हृदयेश मिल जायँ भला वहाँ किसका मन न लगेगा। अब इनके नेही मन में उनका रूप देखने की लालसा तीव्र हो गई थी। रह रहकर याद आती थी :—

'ये दोऊ खोरि, खिरक, गिरि गह्वर, विहरत कुँवर कंठ भुज मेलि।

बरसाने में निवास कर नित्य दम्पति की नव नव केलियों का नव नव भाँति अवलोकन करने लगे।

एक दिन प्रभात से सायंकाल पर्यन्त भजन-भावना में डूबे रहे। रात्रि में विश्राम भी नहीं किया क्योंकि आज भावों का सिन्धु उमड़ रहा था। आधी रात बीत गई किन्तु नेही की नेह भरी प्रीति में कोई कमी नहीं आई। उस समय इन्होंने एक अनुपम कौतुक के दर्शन किये—आपने देखा कि समस्त गह्वर वन एक दिव्य महा प्रकाश से दीप्तिमान हो रहा है, वीणा की मधुर झंकार सुनाई दे रही है, मृदंग की मधुर तालों का सुख मिल रहा है इस प्रकार वाद्यों के मधुर घोष पृथक्-पृथक् श्रवण का आनन्द दे रहे थे। सखीगणों के अनंत कंकण, किंकिणि एवं नूपुरों के शब्दों से समस्त वन बोल उठा था, हर वृक्ष लता गुल्म से आनन्द टपकने लगा था।

इस दिव्य दर्शन आनन्द से विमूर्च्छित होकर वे गिर पड़े। तब प्रीति विवस श्रीराधा ने अपनी महा मधुर वचन माधुरी से सींचते हुए सचेत किया। नेही नागरीदास से श्री प्रियाजी बोलीं ! हम प्रति दिन इसी गहवर वन में विचरण करती रहती हैं, तुम में प्रीति अधिक देख के सखियों सहित दर्शन दिया है। इस समय हमें भूख लगी है, इस समय यदि कुछ भोग लगाओ तो हम वहुत सुखी होंगे, तब रसिक श्रेष्ठ नागरीदास जी ने उसी समय निशीथ भोग लगाया, प्रिया-प्रियतम दोनों तृप्त होकर बोले! हमें प्रतिदिन इस अर्ध रात्रि के समय निशीथ भोग लगाया करो, और यहाँ बरसाने में एक मन्दिर बनवाओ तथा प्रतिवर्ष मेरा जन्मोत्सव मनाया करो।

इतना आदेश करके वह नवल किशोरी जोरी साँकरी खोर की ओर से पर्वत के नीचे उतर गयी। तभी से मन्दिर में अर्ध रात्रि में निशीथ भोग के लिये शयन के समय अमनिया रख दिया जाता है, वहाँ मन्दिर भी बनवाया गया तथा प्रतिवर्ष श्री राधिका जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाने लगा। वह आज तक चलता है।

इनके यहाँ उत्सव के आनन्द में वस्त्र, आभूषण समागत याचकों को, बिना किसी भेद भाव के सभी को दिये जाते थे। भोजन-प्रसादी भी उसी प्रकार उदार वृत्ति से सबको पवाई जाती थी।

एक दिन इनके यहाँ एक चोर चोरी करने आया। उसने देखा कि द्वार पर सिंह पहरे पर बैठा है, उसकी दहाड़ सुनकर चोर उल्टे पैर भाग गया। इनके यहाँ सिंह और सर्प निरन्तर निस्संक भाव से रहते थे। यहाँ तक कि सिंह ने मांस भोजन करना छोड़ दिया था। सामान्य आहार पर ही साधु वृत्ति से रहता था।

जब कभी कोई श्री नेही नागरीदास को सताने को आता तो यह भयानक रूप से शब्द करने लगता था। जिससे इनके भजन में कोई बाधा न आती और विपदा शांत हो जाती। इन्होंने अनेकों सिंह सदृश दुष्ट प्रकृति के पुरुषों को सत्पुरुष बनाया था।

जब रसिकजनों का सत्संग होता था वह सिंह भी बड़े शांत भाव से सत्संग का आनन्द लेता तथा समय-समय पर मस्तक हिलाकर कथा का अनुमोदन करता।

एक दिन कुछ रसिक उपासक सन्त इनकी कुटी पर पधारे, उनकी सेवा के लिये आप समीप के ग्राम में अन्नादि लेने को गये। इनके पीछे पीछे सिंह भी पालतू की तरह चल दिया। वहाँ से सामान लेकर जब स्वामी आने

लगे तब सिंह सामने आड़ा खड़ा हो गया, नेही जी ने खुरजी बनाकर सामान सब सिंह की पीठ पर लाद दिया और साथ-साथ चल दिये। कुटों पर पहुँच कर प्रभु को सयन भोग लगाया और सब सन्तों को प्रसाद वितरित करके आनन्दित हुए।

नेही नागरीदासजी के जीवन में जैसी हित धर्म की निष्ठा है। वैसा ही सीधा-साधा सरल सुवोध अनुरागी चित्त भी है। इसी प्रभाव से सिंह सर्प आदि भी अपनी हिंसक कुटिल वृत्ति को छोड़कर साधु स्वभाव के हो गये थे। मानसी भावना परायण रहने से इनके तन-मन वचन-कर्म सब एक ही हो गये थे। इनकी साधना प्रशस्ति करते हुए विशिष्ट वाणीकार श्रीहित चाचा वृन्दावनदासजी ने लिखा है—

हित सरनागत होत भावना भक्ति प्रकासी।
बसे साँकरी खोरि भये बानैत उपासी॥
ब्रजवासिन यौं भजैं जुगल- परिकर ब्रज सगरौ।
यही भाव दृढ़ होत प्रेम उर परस्यौ अगरौ॥
गुनगन बानी विचित्र कथि श्रीहरिवंश प्रसादबल।
वृषभानु कुंवरि पद दृढ़ सुरति करी नागरीदासभल॥

श्रीहरिवंश चरणों की अनन्य निष्ठा तथा उनकी वानी के गाम्भीर्य मर्म को प्रगट करते हुए, चरित्र की झाँकी प्रस्तुत करते हैं—

श्रीहरिवंश चरण दृढ़ अटकी मति अरवीली।
अक्षर रस कौ गहर गूढ़ बानी गरवीली॥
लाल लड़ैती दरस चाह जिन यह व्रत लीनौ।
त्याग दियौ जल-पान कृपानिधि दरसन दीनौ॥
रच्यौ बरस गांठ उत्सव कुंवरि जुगल रहस पाई लवधि।
श्रीनागरीदास रस भजन हद गुरु मारग नेही अबधि॥

'चाचा हित वृन्दावनदास कृत'—"रसिक अनन्य परचावलि"

\+ + +

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय के अन्य वाणीकारों ने भी इनकी प्रशंसा करते हुए कहा है—

अंतरंग में मगन रहैं सन्तत सब जानै।
सुनि धेनुक परसंग गिरे भूपर मुरझानै॥
बन उठि बरसाने बसे जहाँ नरहरि संजोग।
लियो आपु मुख माँगि कै प्रगट निशीथी भोग॥

वनमाली गुरु पाइकें व्यास सुवन गुन ही भनैं।
रसिक नागरीदास की वानी हित निजु रुचि सुनैं।।

'गोविन्द अलि कृत—"अनन्यरसिक गाथा"

रसिक सन्त श्री ध्रुवदासजी भी इनके गुणों के प्रशंसक हैं—

नेही नागरिदास अति, जानत नेह की रीति।
दिन दुलराई लाड़िली, लाल रंगीली प्रीति।।
व्यास नन्द पद कमल सौं, जाकें दृढ़ विश्वास।
जिहि प्रताप यह रस कह्यौ, अरु वृन्दावन वास।।
भली भाँति सेयौ विपिन, तजि बन्धुन सौं हेत।
सूर भजन में एक रस, छाड़्यौं नाहिन खेत।।

"भक्त नामावलि"

इनके चरित्र के उपसंहार में भगवत् मुदितजी ने इन्हें द्वितीय सेवक के समान माना है—

हित धर्मिन में उत्तम निवट्यौ। मनहु दूसरो सेवक प्रकट्यौ।।

+ + +

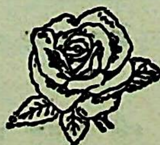
चरित अनंत कहाँ लगि गाऊँ। गुन सागर को अन्त न पाऊँ।।

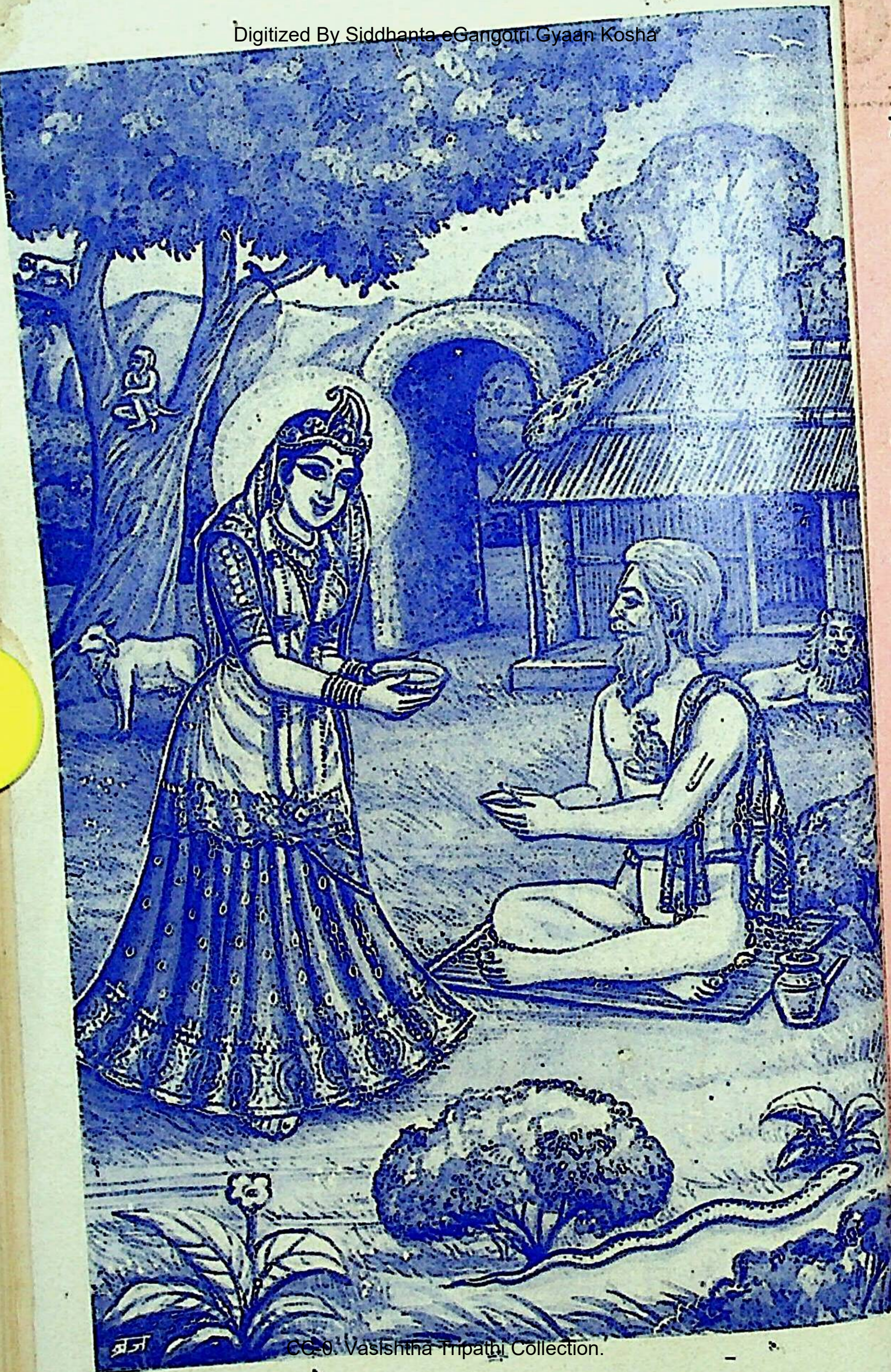
इस प्रकार इनके चरित्र से अनन्य धर्म की दुर्लभ स्थिति स्पष्ट होती है, तथा प्रियतम की प्राप्ति कितनी तादात्म्य वृत्ति से होती है। यह स्पष्ट है—

श्रीकिशोरी चरण रज लिप्सु

बाबा किशोरीशरण

श्यामाकुँज, दुसायत





चित्र परिचय :—

श्री नागरी दास जी की रहनी

राग सारङ्ग

सुनि रहनि नागरीदास की ।
कर करवा गूदर तन जीरन मधुकर वृत्ति पुनि तास की ॥
महा विकट वैराग लही जिन सम्पति रास विलास की ।
युगल रहसि भावना परायन मनु अलि दम्पति पास की ॥
गिरि कन्दरा रहैं वन गह्वर जग मन वृत्ति निरास की ।
सिंह सर्प जिनके ढिग खेलैं रञ्चक सङ्क न तास की ॥
बिना अहार तीन दिन बीते दरसी मणि व्रजवास की ।
दियौ प्रसाद तक्र पुनि बोली बोलनि परम हुलास की ॥
माँगि खाय नित ह्याँ को लावै तजि हठि बैठनि आस की ।
लेत प्रसाद प्रेम अति सरस्यौ भई मति विपुल प्रकास की ॥
जान्यों चरित कुंवरि को जब तब बानी भई अकास की ।
कर विस्तार जनम लीला सुदि आठैं भादों मास की ॥
लली जनम सोहिलौ प्रगट भयौ वानी फुरी अनियास की ।
वृन्दावन हित व्यास सुवन दई खोलि लवधि रस खास की ॥

—"चाचा वृन्दावन दास जी कृत"
"भक्त प्रसाद बेली"
पद संख्या—९७

श्रीराधावल्लभो जयति

श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति



॥ जै जै श्रीहरिवंश ॥

❀ श्रीराधावल्लभो जयति ❀

❀ श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ❀

अथ वाणी

श्री नेही नागरीदास जी महाराज

सिद्धांत

[१] राग-रामकली

स्वाह्रा शक्ति होम की जैसे अैसे ही रति दम्पति जान।
आकरषत निज अलि समाज सुख राखत उर अभि अन्तर आन ॥
ऐसे ही अनुमान जान जिय जैसे पीजत पानी छान।
नागरीदास गुरु पद प्रसाद तैं परै जिय सरस सलौनी बान ॥

[२]

मनुआ मैं तू बहुत जतन करि सिखयौ।
रसिक सिरोमनि व्यास सुवन जू विमल भजन तोहि दिखयौ ॥
अब तौ और चलन नहि बनिहैं अपनौं करि प्रभु रखियौ।
नागरीदास भजन ढँग ढरि है असँगति चितवत विषयौ ॥

[३]

सहै को सुहृद भजन की भीर।
रहै न काहू की माम मामलें विराजत धरमी धीर ॥
वे पर वाही भक्ति कौ पात्र हियें धरि वस्तु गम्भीर।
नागरीदास अंलक लड़े अविचल सोमित सुकृत सरीर ॥

[४]

सुद्ध सरीरी साधु सजाती ।
तेई सुहृद भजन के पात्र विमल वस्तु भरी छाती ॥
धरमी मरमी मेरे मन मिल मंगल मत मति माती ।
नागरीदास बड़भागन पईये सुकृती सुजन सजाती ॥

राग-गौरी

[५]

प्रान प्रिया मम सुकृतन[१] कौ फलु ।
सर्वस मेरी जिय की जीवन और नहीं मन क्रम वच ते बलु ॥
ज्यों फणि मणि आधार सिंगार सब अँखियनि जिन ओट होहु पलु ।
नागरीदास प्रिया सुख संपति जैसे मीन दीन पुनि-पुनि जलु ॥

[६]

दंपति विलास वारि[२] मन मीन वृत्ति है ।
व्यास सुवन सुहृद[३] बल उपजत अलक लड़े की कौन कृत्ति है ॥
मोद विनोद भोगवत भोगी अवगुन गति रति दसा तिरत है ।
अकह अगाध अगम निरवधि निधि कापै ऐसी अघिर घिरत है ॥
मङ्गल मय मकरंदी मृदु मधु पान मुदित मति मत्त फिरत है ।
रसिक नरेस वचन वर सदिका[४] नागरीदास निज लीन भृत्त[५] है ॥

[७]

भजन पहुँच की कठिन खरी है ।
सावधान मति रति सौं चलनौं पग धरि गाढ़ी प्रेम गरी है ॥
दसा समेंटि ढरै ढँग यहई यहई टोट[६] प्रकृति विगरी है ।
श्री गुरु प्रसाद वस्तु सौं जोरै रहि सँभार में मन भगरी[७] है ॥
श्री रसिक नृपति के पाछैं लागैं सुखद भक्ति सद संपति धरी है ।
और न बल वित नागरीदास श्रीव्यास-सुवन जू निधि सगरी है ॥

१- पुण्यों के, २- जल, ३- उपकारक, ४- वलिहारी, ५- दास, सेवक,
६- कसर, ७- भागने वाला ।

[८]

व्यास सुधा रस सागर तें प्रगटे शशि श्रीहरिवंश गुसाईं ।
न घटै छिन ही छिन होत उदोत जु कीरति तीनहुँ लोकन छाईं ।।
चकोर अनन्यन कौं मधु प्याय दिखावत केलि ज्यों दर्पन झांई ।
भईं सब नागरीदासि खवासि श्रीराधिकावल्लभ जू मन भाई ।।

[९]

अति निविड़ कलि कलुष तिमिर हारी,
उदित वृन्दाविपिन व्यास कुल दीप जै ।
जगत मंगल करन जे तव पद सरन
उदित नित रसिक वरदान दीनौ अभै ।।
लाड़िलीलाल कलकेलि विस्तारनी
सुमुख वानी विदित जगत कीनी ।
विविध रस भेद गुण नगन मंजूसिका[१]
गरुव गुरु जननि कौं सुनिधि दीनी ।।
कर्म धर्मन खंड वृत्ति नेमन दण्ड थापि
परसाद रति गति न दूषित भई ।
चले भागौत मत गूढ़ श्रुति सार मथि
पेलि पंडितन मान ठानि अद्भुत ठई ।।
कुंवरि वृषभानु नँदनँदन आधीनता
उमगि हिय प्रीति की रीति गाई ।
मित्रजा[२] पुलिन दुलराय अनुरागिनी
नागरीदास बहु भाँति भाई ।।

[१०]

कल कालिंदि कुंवरि करुना कर ।
अतुलित आनँद रासि रमीलो विविध विनोद विहार सार सर ।।
ललना लाल मराल मोद मद सेवत कोमल ललित केलि घर ।
मृदु माधुरी मकरंद अंवुकन छिन छिन छुवत नवन[३] नव सुख भर ।।

१- पेटी, २- यमुना, ३- नम्रता ।

कमल पराग प्रेम रस पागे खेल सुहेल पवित्र पुलिन पर।
हितकारी प्यारी प्यारे की नागरीदास ललित पाइन तर॥

[११]

व्यास सुवन पद प्रीति बढ़ावत।
रसिक सिरोमनि वर वानी रति तेई तेई कुँवरन भावत॥
करुणा कर श्रीराधावल्लभ वृन्दाविपिन वसावत।
नागरीदास तिन कौं सुख सुल्लभ श्रीहरिवंशहि गावत॥

[१२]

जेजे श्रीहरिवंश निवाजे[१]।
फूले फिरत माधुरी माते वृन्दा - विपिन विराजे॥
निपट निसंक निरसंसै कीने मुदित भजन बल गाजे।
नागरीदास ताहि सुलभ स्यामा सुख जा उर व्याससुवन पद छाजे॥

[१३]

जहाँ श्रीहरिवंश विमल जस नांहीं।
विद्यमान होंहि जो मोहन मेरे चित न खटांहीं॥
वचन विचित्र व्यासनंदन के रमि रहे उर मन मांहीं।
रसिक सिरोमनि पद प्रताप बल नागरीदास सुख छांहीं॥

[१४]

मेरे श्री व्यास सुवन चरनन बलु।
रसिक सिरोमनि सुखद सरन विनु देखे टकटोरि कहूँ नांहीं ललु[२]॥
श्रीहरिवंश सुरस के हीने जरत वरत उवरत नाहीं पलु।
नागरीदास कोऊ सिर न सहाई भटकत फिरत अंध कर्मठ[३] दल॥

[१५]

उदित मुदित मन नैन डहडहे।
वर विहार रस मत्त मधुहि पी प्रगटत सुख मद मोद गहगहे॥

१- कृपा की, २- ललक, ३- कर्माभिमानी।

जागर निसि आगर कल क्रीड़ा घटै न अंग अंग ललक लहलहे ।
नागरीदास न्योछावर छवि पर सुरत सुरङ्ग सुख चिह्न चहचहे ।।

[१६]

व्यास सुवन मो निधने कौ धन ।
क्रम क्रम कष्ट कष्ट करि पायौ जतन जतन कै लगायौ जब मन ।।
रास विलास माधुरो अँचवत कीनौ धाम रुचिर वृन्दावन ।
श्रीहरिवंश कृपा नागरीदास अब पकरचौ वृषभान सुता पन ।।

[१७]

श्रीहरिवंश चरण विश्राम ।
साधन आराधन पुरुषारथ श्रीहरिवंश चरन सुख धाम ।।
सीतल रसद विसद गुन गन मय श्रीहरिवंश भजन निहि काम ।
श्रीहरिवंश सेइबौ स्वारथ सुधा विमल वानी अभिराम ।।
जो चाहै वृन्दाविपिन माधुरी श्रीहरिवंश सुमिर वर नाम ।
श्रीहरिवंश रति कियें नागरीदास सदा सुगम सुख स्यामा-स्याम ।।

[१८]

श्रीहरिवंश चरन कीजै रति ।
व्यास सुवन साधन आराधन मन क्रम वचन यहै उत्तम मति ।।
सोई सब आचार भजन विधि रसिक सिरोमनि तजि न आन गति ।
जौ पै द्रयें अनन्य नृपति जू नागरीदास सुख सुलभ कुँवरि पति ।।

[१९]

श्रीहरिवंश चरन आनन्द घन ।
वरषत संतत सुखन सुजन हित पावन पाँइ प्रान जीवन धन ।।
मङ्गलरूप माधुरी मूरति सुजन अवधि[१] गंभीर गुननि गन ।
श्रीव्यास सुवन पद सद शुभ संपति सदा प्रकासौ नागरीदास मन ।।

[२०]

श्री व्यास सुवन पद रसद रसाल ।
चारु चरन नख मनि मन गुन भर धर वर विमल कंठ कल माल ।।

१- सीमा ।

जसरस सकल सुखन परि पूरन पावन पाँइ प्रनत प्रतिपाल।
श्रीहरिवंश अन्घ्रि[1] जुग जीवन नागरीदास सुचल यह चाल॥

[२१]

प्रथम सु सेवक पद शिर नाऊँ।
करहु कृपा दामोदर मोपर श्रीहरिवंश चरन रति पाऊँ॥
गुन गम्भीर व्यासनंदन के तुव परसादु सुजस रस गाऊँ।
नागरीदास के तुम ही सहाइक रसिक अनन्य नृपति मन भाऊँ॥

[२२] राग—बिलावल

श्री हरिवंश चरन सुखदाई।
अति आनंद सकल गुण आलय सुमिरत ही उर सीतलताई॥
व्यास सुवन सेवन्न पुरुषारथ परमारथ सरसाई।
नागरीदास जे भक्ति नृपति बल वृन्दाविपिन माधुरी पाई॥

[२३]

श्री हरिवंश सुखद रस सार।
नेकही नुकता[2] रीझि देत निधि निपट निसंक उदार॥
भक्त अनन्य सदा प्रतिपालक रसिक सिरोमनि प्रान अधार।
नागरीदास हित श्रवत[3] माधुरी कुँवरि केलि कल ललित विहार॥

[२४]

श्रीहरिवंश विराजमान।
रसिक सिरोमनि समरथ संपति सकल सुख निधान॥
सुन्दर सुकुँवार सुहृद[4] सुजस समूह सुजान।
नागरीदास सब ही कौ सर्वसु व्यास सुवन जू प्रान॥

[२५]

सरन रहत संपूरन आनंद ठाढ़े।
व्यास सुवन पद सेवी संतत फूले फिरत सरस मन बाढ़े।
रसिक सिरोमनि अंघ्रि बलहिं यौं वर नागरीदास गुन आढ़े[5]॥

१–चरण, २- तत्त्व, ३- श्रवित होना, ४- मित्र, ५- अटपटे।

[२६]

विसद रसद सेवहु पद मूल विचारी ।
श्रीहरिवंश चरन मृदु अभयद आनंद घन सब सुख वृन्दावन चारी ।।
जाचैं द्रवत सुभग सुख सम्पति सुधा समूह सुजस रस धारी ।
नागरीदास येई पद हित वित[1] सदाई सुलभ विहार विहारी ।।

[२७]

जे व्यास नंद आनंद गुन गावहिं ।
उत्तम भक्ति भजन परमारथ श्रीहरिवंश चरन सिर नावहिं ।।
सोई आचार विचार सकल मति रसिक सिरोमनि जू मन लावहिं ।
नागरीदास जो यह सुख सर्वस लाल लड़ैती दिन मन भावहिं ।।

[२८]

जिनके व्यास सुवन जू सर्वसु ।
तेई सकल गुनन पर पूरन रहै पीवत वृन्दाविपिन केलि रसु ।।
छिन छिन सुख संपति के भोगी दंपति सहज भये अपने वसु ।
सुख ही सुगम लड़ैती लालन नागरीदास कल[2] किये यहै कसु[3] ।।

[२९]

श्रीव्यास सुवन जू की कोमल बतियाँ ।
ताते जतन जतन कै पकरहु लगहिं ललित मृदु छतियाँ ।।
यह सुख साधन सावधान ह्वै वर विहार की पावौ घतियाँ ।
रसिक सिरोमनि पद आराधन नागरीदास कल उत्तम मतियाँ ।।

[३०]

जे जे श्रीहरिवंश उपासी ।
व्यास सुवन आनँद पद उर धरि, हैं वृन्दावन अविचल वासी ।।
वानी विमल गुसाईं जू की कुंवर केलि रस सुखद निवासी ।
श्रीरसिक सिरोमनि रति नागरीदास सुखही सुवस निकुँजविलासी ।।

१- सम्पत्ति,वैभव, २- चैन, ३- तत्त्व,सार

[३१]

श्री वृषभानु नृपति की चैंटुली[१] ।
करुनासिंधु उदार सिरोमनि विपदा दारिद्र मैंटुली[२] ।।
कहा कहौं सत भाव सहस सखि मोसे कृपन समैंटुली ।
नागरीदास रूप गुन निधि प्रिया लागीयै रहौ मम घैंटुली[३] ।।

[३२]

इहि अनभौ[४] रंग रुचि जाइ ।
स्याम चरण रति सुचि सँभार करि अनभौ सहित विमल गुन गाइ ।।
जहाँ तहाँ सहज विचार सार मथि मनही मन ता मध्य समाइ ।
माया कौ नटवत सब हांसी काक समाज न हँस समाइ ।।
तहाँई चित वित जहाँ जानियै ताही हित करि नैन लगाइ ।
नागरीदास इतनौई जीवन भजन शुद्ध मधि काल विताइ ।।

[३३]

भागन मिले भजन कौ मर्मी ।
संतोषी सुख सुहृद सनेही श्री हरिवंश धर्म दृढ़ धर्मी ।।
कोमल कृपाल कुसल कल[५] करनी सुजन सजाती सँघाती[६] सरमी[७] ।
रीति समीति सभार रसिकमनि नागरीदास जीवन धन जनमी ।।

[३४]

श्रीव्यास सुवन जू कौ अद्भुत पैंड़ौ[८] ।
रीति समीत जीत जहाँ दुर्लभ लाड़ ओहटो[९] ऐंड़ौं वैंड़ौ ।।
मातीचाल ललित लखि भाँतिन लाड़ लड़ी वन रूप उलैंडौ[१०] ।
नागरीदास भर भीर भेदनि की पूरन परम प्यार कौ छैंड़ौं[११] ।।

१- लाड़िली, २- मिटाने वाली, ३- कंठ, गला, ४-अनुभव, ५- सुन्दर, ६-संग देने वाला, साथी, ७- लाज रखने वाला, ८- मार्ग, ९- गम्भीर, गुप्त. १०-उड़ेलने वाला, ११ छोर, सिरा, सीमा

[३५]

लोभ लाहक लाघव कहाँ वनि आवत ।
अद्‌भुत खेल मेल मंगल कौ देखत ही बनै कहत न कहि आवत ।।
परम प्यार प्रीत की रीति रति जिन भाँतिन खिलवार खिलावत ।
रसिक नृपति की बातैं घातैं नागरीदास कोई भेदीय पावत ।।

[३६]

भजनी क्यों डरि है उपहासहि ।
अपनी वस्तु नौहरी काजै सहैं जगत की त्रासहि ।।
सुहृद सनेही अपनी अपनी आतम मान करहु वस वासहि ।
वे परवाही व्यास सुवन कौ बल है नागरीदासहि ।।

[३७]

सहै को सुहृद भजन की भीर ।
रहैं न काहू की माम मामिले विराजत धर्मी धीर ।।
वे परवाही वस्तु कौ पात्र हियें धरि वस्तु गंभीर ।
नागरीदास अलक लड़े अलवेले चाल सोभियत सुकृत सरीर ।।

[३८]

कौन ठौर गायौ कौन लड़ायौ कौन दुलरायौ कहाँ चित अटक्यौ ।
कौन ठौर भायौ कौन पायौ कौन खेल जामहि मन लटक्यौ ।।
अमित अमानौ रमित रमानौ अपेख पेख्यौ चटक्यौ झटक्यौ ।
जाकौ काहू गंध न फरस्यौ सुधा सार लोचन भर गटक्यौ ।।
द्रवत महा मकरंद मधुव्रत पी निसंक कहुँ पल नहि मटक्यौ ।
नागरीदास वलि रसिक नृपति को अलक लड़ौ कहुँ लाड़नि ठटक्यौ ।।

[३९]

जै श्रीव्यासनंदन जू उदार रमित रूप सुख सुढ़ार ।
कोमल कमनीय[1] कुंवर कोविद[2] सुकुंवार ।।

१- कामना करने योग्य, सुन्दर, २- विद्वान्, पण्डित ।

करुना करि कल किशोर करम धरम भंजि जोर,
धर्म धीर गुन गंभीर रसिकनि आधार।
नागरीदास निपुन नेह नव नव रति नाना गति. ललित आगार[१] ॥

[४०]

मेरी अँखियन की पीड़[२] ।
अवलंवित जीवन व्रत सुन्दरि कहत खैंचि हौं ड़ीड़[३] ॥
हौं बलि अंतर्वृति होहु नित चटपटात मन होड़[४] ।
नागरीदास बलि सुधि न औरहि उर धरि रस की वीड़[५] ॥

[४१] राग-केदारौ

अपनी लली यह लाल लड़ावत।
केलि कौतुक श्रीव्यास कुंवर जू ठौर ठौर दुर्लभ दुलरावत॥
महा मुदित मकरंद मधुव्रत धरि अद्भुत अघट अलभ निधि पावत।
प्रेम प्रचार उचार वचन वर नागरीदास बहु वानिक बनावत॥

[४२] राग-विहागरौ

भजन न होई खेल खिलौना।
को काचे डोरे सौं बाँधि खिलावत प्रबल सिंघ कौ छौना॥
अति ही अगम अगाध लग्यौ फल कहि कैसे कर पहुँचे बौना।
नागरीदास हरिवंश चरन भजि मिथुन सुरत अचौना॥

[४३]

भजन मदंधी चाल को पैंड़ौ ।
रसिक नरेस लाल गरवीले कौ क्यों त्नलि आवै ऐंड़ौ बैंडौ ॥
सहसा कैसे चल्यौ जात है खरौई कठिन है प्रेम कौ छैंड़ौ ।
श्रीव्यास सुवन बल बिन नागरीदास परस्यौ न जाइ मंगली मैंडों[६]॥

[४४] राग-अड़ानौ

पुहुप लता गृह सुमन तलप पर लाड़िली विलास परचौ ठिकु।
गौर स्याम दुति गात गुनीले तरल तरंग तैसियै तरनि सुता ढिग॥

१- भंडार, २- पीड़ा, ३- लकीर,आँख का मैल, ४- आकुलता, ५- ढेर, समूह
६- सीमा।

पावन पुलिन नलिन नाना रंग झिल प्रकास भये हैं इकमिक ।
नागरीदास प्रतिबिंब कौ संगम अद्भुत क्रीड़ा अकथ अधिक ॥

[४५]

खरोई कठिन है भजन ढंग ढरिवौ ।
तमक सिंदूर मेलि माथे पर साहस सिद्ध सती कौ सौ जरिवौ ॥
रण के चाइ घायल ज्यों घूमें मुरै न गरूर सूर कौ सौ लरिवौ ।
नागरीदास सुगम जिन जानों श्रीहरिवंश पंथ पग धरिवौ ॥

[४६]

प्रबल प्रेम वर तत्व पायौ ।
जाकौ आदि अंत मधि नाहीं रसिक नृपति जू अदिख दिखायौ ॥
दुर्लभ दुर्घट[१] दुर्गम ठाहर[२] जाकों प्रभु अलि मारग धायौ ।
नागरीदास श्रीव्यास सुवन जू अकह भजन निरवधि पकरायौ ॥

[४७]

श्रीहरिवंश प्रबल वर जोरा ।
हिय बल जिय बल तन मन बाँह बल राखैं फिरत पराक्रम तोरा ॥
लाड़िलीलाल लड़ाइ निरंतर मंगल रूप भजन कौ अमोरा[३] ।
नागरीदास वृन्दावन चारी लाल सेवत रसिक नृपति जू कौ कौरा ॥

[४८]

कर वर भेद सबहि तैं बाँकौ ।
ज्यौं बीन सार पर धरत अंगुरिया सोई सोई सुर उपजत तिहिं ठाँकौ ॥
याही ते अब अब कौ छीवत उमगत सरस सुरत दुहुँ घाँकौ[४] ।
अलि की उक्ति जुक्ति गहि जोरत जैसे कनक सुमंजी टाँकौ ॥
व्यास सुवन उद्धर्यौ अगोचर जग पर जीति बजायौ डाँकौ ।
नागरीदास बलि बलि वानी की विगत व्यक्त कर्यौ रस कौ नाकौ[५] ॥

१- अति कठिन, २- ठिकाना, स्थान, ३- आम का नया निकलता पोधा, अमूल्य, ४- ओर, ५- सीमा ।

[४९]

भजन समझिबौ खरौ दुहेलौ[1] ।
बाँकी दसा प्रेम के पैंड़े चल्यौ लाल अलवेलौ ।।
वे परवाही हियैं वस्तु बल रसिक नृपति कुँवरेलौ ।
नागरीदास श्रीव्यास सुवन सुत सूर सपूत अकेलौ ।।

[५०]

नमो नमो जै श्री वनचंद ।
वृन्दा विपिन विलास माधुरी परि पूरन आनंद के कंद ।।
सब भक्तनि कुल कुमुद प्रकासित श्रीहरिवंश रसिक वर नंद ।
शीश वद्ध उर मंडन नागरीदास सीतल सुभग चरन अरविंद ।।

[५१]

अनन्य कहाइबौ अति ही बाँको ।
सबै दसा जब भजनहि मिलि है नेक न इतकी घाँकौ ।।
मन अवलंव ऊरमी[2] दम है कठिन सुपेच तहाँ कौ ।
नागरीदास कहाँ लौं मूदै पर्‌यौ अकासहि झाँकौ ।।

[५२]

काचौ पारौ खायें न पचि है ।
श्रीहरिवंश भजन गद[3] सेवन जहाँ तहाँ मन ललचे कहा बचि है ।।
रसिक नरेस सुधा साधन बिनु आन सयान न रचि है ।
श्रीव्यास सुवन पद पाछौ न गहैं नागरीदास तरस बहु तचि[4] है ।।

[५३]

लाड़ लहल[5] कौ ओहठौ पैंड़ौ ।
माती दसा गरव गुन भजन की क्यों चलि आवे ऐड़ौ बैड़ौ ।।
धरमी मरमी भेद भीतरे जामहि रति रस रंग उलैड़ौ ।
श्रीहरिवंश चरन वर बिन नागरीदास कोऊ न खखैंड़ौ ।।

१- कठिन, २- तरंग, मन को पीड़ित करने वाली छः उर्मियाँ होती है–सुख, दुःख, शीत, उष्ण, क्षुधा, पिपासा, ३- विष, ४- संतप्त होना, ५- उन्मत्त ।

[५४]

प्राननाथ प्रानजीवन प्रानप्रीतम प्यारे ।
प्रानवल्लभ प्रानरवन प्रान पोखन हारे ॥
प्रान अधार प्रान परम प्राननि में धारे ।
प्रान सिरावन श्रीव्यासनंदन नागरीदास ह्वै द्दग तारे ॥

[५५]

श्रीव्यास सुवन जू के सदिका जी जतु ।
भजन सु अमी कनी के पायें विष कौ मेरु कहा लै कीजतु ॥
परम कृपाल उदार अवधि सुख ऐसो प्रभू छाँड़ि अनत मन दीजतु ।
चिंतामणि प्रिय कलप तरोवर नागरीदास कंठ कठुला कीजतु ॥

[५६]

श्रीव्यास सुवन सर्वस सनमेस[१] ।
भजन अवधि आधार अमल रस इन बिन नहीं कहूँ सुख लेस ॥
श्रीहरिवंश लाड़ सचि राख्यौ ता महि पावै न लेस प्रवेस ॥
श्रीरसिक नृपति वर तत्त्व न जान्यौ नागरीदास सब ऊवट[२] भेस ॥

[५७]

श्रीहरिवंश सुमिरि सुख सीरे ।
सोई महल टहल के मरमी ललना लाल तलप[३] रहै नीरे[४] ॥
वानी विमल विलास निरन्तर सावधान धरि धीरज धीरे ।
नागरीदास श्रीरसिक मुकुटमणि समरथ तिनकी पीरनि पीरे ॥

[५८]

श्रीरसिक सिरोमनि व्यास सुवन ।
अजब अगाध अपरमित अद्भुत कीरति विमल पावन भुवन ॥
भजन उदार अवधि आनंद की विपता भंजन दारिद दवन ।
नागरीदास तिमिर[५] ध्वंसक श्रीहरिवंस चन्द्र सदा उवन[६] ॥

१- आधार, सन्निवेश, २- विपरीत, उल्टा, ३- शय्या, सेज, ४- निकट, ५- अंधकार, ६- उदित ।

[५९]

लाड़िली लाल कृपा कौ परम फल ।
मंगल अवधि रसिक चूड़ामणि सूझै श्रीहरिवंश वस्तु बल ॥
भजन सवाद अगाध आनंद निज निरवधि सुख वरखत तामैं पल पल ।
दंपति प्रीति रीति कौ मुद्दा[1] नागरीदास इन न कहूँ लल ॥

[६०]

दरस प्रकास पिय परस पराक्रम ।
रूप गंभीर गहल गुन गर्वित छवि की निधि पिय अनुसरै क्रम क्रम ॥
प्रापति अन प्रापति सी अलभ लह्यौ अकुलाय गहै मन संभ्रम ।
सौरभ समूह सवाद सुधि परी नागरीदास सिरानैं भ्रम भ्रम ॥

[६१]

प्यारो श्रीहरिवंश न होतौ ।
तौ रस रीति समीत प्रीति कौ भेदु भजन अधिकारी कोतौ ॥
लाड़िलीलाल विमल जस रस बिनु जग अंधेर पर्‌यौ हुतौ सोतौ ।
नागरीदास प्रभु प्रगट पुकार्‌यौ अविवेकिन कौं अजहूं अछोतौ ॥

[६२]

जाके तुम ही तुम सौं मन लागै ।
सोई दास तास कौं सब सुख जीवन सकल जगत में जागै ॥
लाल लड़ैती जू गान यशोमल[2] हेम[3] श्याम छवि हिये अनुरागै ।
गौर सुखद पद मृदु सेवन विन नागरीदास संदेह न भागै ॥

[६३]

विलसियै खसम कौ कमायौ ।
श्रीहरिवंश चन्द्र करुना करि जामहि मन जतन कै रमायौ ॥
अद्‌भुत अति अगाध सुख निर्मल वर विलास रति रंग जमायौ ।
श्रीरसिक नृपति जू कौ सद सदिका नागरीदास बड़भागनि पायौ ॥

१- तात्पर्य, अभिप्राय, २- निर्मल यश, ३- स्वर्ण ।

[६४] राग-केदारौ

श्रीव्यास कुँवर पद पदवी हाथ परै ।
सुहृदी सुजन समीत रीति रस विमल भजन कल कुशल काज सरै ।।
वानी सुभग समूह सार सुख ठौर ठौर भेदनि पकरै ।
गिरा गंभीर माँझ गुन निधि प्रिय नागरीदास कत जतन और करै ।।

[६५]

श्रीहरिवंश गिरा पहिचानी ।
ताकौं और कछू नहिं साधन विमल भक्ति जा हाथ बिकानी ।।
मोद विनोद भेद बहु भाँतिन रूप रंग रस अकथ कहानी ।
नागरीदास सुजन तेई धन नेह निपुन वर वानी मानी ।।

[६६]

गिरा गंभीर गुननि गरवीलो ।
सुजन सनेहिन के मन आवै औरन कौं ओहठ अरबीली ।।
श्रीहरिवंश वचन वर कल कढ़ी[1] स्वच्छ सुछंद सुछैल छवीली ।
नागरीदास मकरन्द माधुरी रूप रंग रस रसिनि रसीली ।।

[६७]

श्रीहरिवंश गिरा मन मान्यौ ।
ता कहूँ भजन रह्यौ न कछु करिवै सुजन सनेहिनु सर्वसु जान्यौ ।
सब जस रति रस सार सच्यौ श्रीव्यास सुवन जू मन पहिचान्यौ ।।
श्रीवृन्दाविपिन विलास रसिकमणि नागरीदास धनि जिन उरआन्यौ ।।

[६८]

श्री वृन्दाविपिन विलास सारु है ।
धोर गंभीर भीर कोलाहल वानी गुन गाढ़ौ विचारु है ।।
रसिकनि कौं रसखान दान सुख औरनि कौं अद्भुत अपारु है ।
श्रीव्यास सुवन पद बल नागरीदास ताही सौं वानी हियहारु है ।।

१- निकली ।

[६९]

वानी मानी जब मन होई ।
श्रीहरिवंश वचन वर भाख्यौ समुझै ततु बड़ भागी सोई ॥
सुकृती सुजन सूर अलि व्रत धरि सरस सुधा सौरभ रहै भोई[१] ।
नागरीदास रसिक मनि जू मत विरलौ कोऊ समझै लोई[२] ॥

[७०]

विरलौ कोऊ जाननि हारौ ।
अद्‌भुत रूप अनूप अनौखौ वानी विमल गरव गुन गारौ[३] ॥
कौतुक कुशल कमनीय रमीली मोद विनोद कोलाहल भारौ ।
लाड़िलीलाल खेल की परावधि[४] नागरीदास अनुराग पसारौ ॥

[७१]

कठिन समझिनौ वानी वर मतु ।
जामहि निरवधि आनंद निरन्तर श्रीहरिवंश सुवचन सार ततु ॥
अविरल[५] सुरनि[६] सम्रूह सुधा मई सुहृदी सुजन होत मन रचि रतु ।
गिरा गंभीर व्यासनंदन जू की नागरीदास रस रंगनि कौ सतु ॥

[७२]

श्रीहरिवंश गिरा पद अष्टक ।
कहत सुनत ताकौ मन सुधरै कपटी होइ कुटिल खलु निष्टक[७] ॥
प्रबल प्रताप ध्वंस अशुभ निकर[८] रहन न पावै कंटक किष्टक[९] ।
सद्गद[१०] नागरीदास रसिक मनि कैसेहूँ करि रमै मिटै मति भिष्टक

[७३]

भीतरी सेवा में मन मानै ।
निपट निरंतर अभिअंतर रति तब हँसि प्रभु पहिचानै ॥
ठौर ठौर लालच लाहक हियें यह बहु ठाने ठानैं ।

१- विभोर, मत्त, २- लोग, प्रभा, दीप्ति, ३- गुण सम्पन्न, ४- सीमा
५- अखंडित, ६- स्वर, ७- दाहक, जलाने वाला, ८- समूह, ९- कष्टकारी
१०- श्रीमहाप्रभु की वाणी, ११- विषय, विकारादि ।

अपनी कसरि छाँड़ि ढिग भजन के खेलै हृदय सिरानैं ।।
श्रीगुरु वचन सँभारि रमै तन और न उर मधि आनैं।
नागरीदास वृषभानु कुँवरि जू तिन्हें अपनौ करि जानैं ।।

[७४]

श्रीहरिवंश जुगल पद जचियतु ।
विविध विनोद मोद की परावधि निर्मल सुजस रंग रस रचियतु ।।
वानी विचित्र विहार सार सुख अद्भुत भर आनँद उर सचियतु ।
श्रीव्यास सुवन वर वैन सुपेसल[१] नागरीदास रंग रस रचियतु ।।

[७५]

जो मुख वर वानी नहीं कढ़ती ।
प्रगटते नहीं विमल मंगल निधि तौ भजनहि क्यौं पानिप चढ़ती ।।
श्रीवृन्दावन रस रीति समीती प्रीत प्रतीति कहाँ तैं बढ़ती ।
श्रीरसिक सिरोमनि वस्तु बिना नागरीदास,
नीरस भक्ति दुनी[२] सब रढ़ती[३] ।।

[७६]

व्रीड़ा[४] वर मरजाद छुड़ावत ।
अब-अब टक टोलनि मधु बोलनि ठौर-ठौर दुर्लभ दुलरावत ।।
काँति भाँति में मगन होत मन चूँबि चरन गहि हियैं लगावत ।
नागरीदास विलास मोद निधि रूप अनूप रोम-रोम मर्म सिरावत ।।

[७७]

यहि वर मन पति राखित करै ।
छिन छिन चित चरचित न नृपति मन पिय बिनु पल न प्रान धीरज धरै ।
सर्वसु जीवन सुभग सुन्दरी कण्ठ कौ कठुला लसत गरै ।
जुगल किशोर नेह की परावधि नागरीदास हिय जिय विहरै ।।

१- सुकोमल, २- जगत्, संसार, ३- रटना, अभ्यास करना, ४- लज्जा ।

[७८]

वानी विमल लाड़की परावधि ।
श्रीहरिवंश वचन वर निकसी बड़भागीनु जो आवै कहाँ सधि ॥
रूप रंग रस कुशल कुलाहल जामहि अमित अगाध लवधि लधि[१]।
नागरीदास भजन कौ मरमी सुख निधि व्यास सुवन पद आरधि[२] ॥

[७९]

अनेक भाँतिन कल खेल खिलाए ।
श्रीव्यास सुवन दाऊ दुलरावन मंगल मृदु मद मेल मिलाए ॥
लाड़ लड़ावन मन के भावन लाड़ली लालन हिलग[३] हिलाए[४] ।
नागरीदास सुरत सागर सुख नागरी नागर झेल झिलाए ॥

[८०]

जा पाछैं सब भजन साज है ।
प्यारी प्यारे प्राननि तें प्रिय मोहि श्रीहरिवंश चंद जू सौं काज है ॥
निसदिन सकल सम्पदा विलसत अलक लड़े कौ इक छत राज है ।
नागरीदास ललितादि संघटी[५] रसिक नृपतिकौ सुहृद सभा समाज है॥

[८१]

हिये गुन गर्वित गर्व गरूर है ।
लाड़ गहेल अलवेले पिय हिय मंडित केलि सूर है।
सौरभ समूह साज सौं फैली उर छबीली छैलपति भाग भूर है ।
नागरीदास रोम रस वरषत पानिप प्रकास प्यारी कौ न फूर[६] है ॥

[८२]

भूलि कोऊ अनत कहावै धर्मी ।
श्रीहरिवंश भजन सदिका कौ जब बड़भागनि ह्वै है करमी ।
अनपाइनी भक्ति कौ फल लहै व्यास सुवन भेदनि कौ मरमी ।
नागरीदास तन हिय ठिक[७] बैठै इहि मद मंगल फिरै न डीठि[८] भरमी ॥

१- प्राप्त करना, २- आराधन कर, ३- लगन, ४- परिचित किये, ५- समूह यूथ, ६- अल्प, थोड़ा, ७- ठिकाने, ८- दृष्टि ।

[८३]

सब सुख मुद्दा हाथ पर्‌यौ।
साध अगाध रसिक मनि पूरन भावै त्यौं वितर्‌यौ ।।
वे परवाह उदार ओहठी[1] अद्‌भुत ठौर अर्‌यौ।
आनन्द अमल अगाध सम्पदा लटे[2] पेच पकर्‌यौ ।।
नित्य विहार अभूत अखंडित श्रीमुख प्रगट कर्‌यौ।
नागरीदास बसौ हिय बानी और रहौ सहजहि धर्‌यौ ।।

[८४]

श्रीहरिवंश हिलगि की अटक है।
लाड़िली लालन लाड़ लड़ावन पलु-पलु प्रति रति प्रीत भटक है ।।
सुभग विहार सुदेश सुन्दरी पानिप प्रबल अंग-अंग चटक है।
नागरीदास गंभीर गरुव गुनमद मंथर[3] गति लाड़ लटक है ।।

[८५]

रूप निधान भावती अति लड़।
जोई छिन जोई पलु निकट पाईयत है जीवन जनम सोई भागनि बड़ ।।
भाँति-भाँति की ठौर-ठौर छबि मन अँखियन में परी रहत गड़ि।
नागरीदास यह अकह बात है हिय ही समझै चौंप चांय चड़ि ।।

[८६]

मेरे नैनाई यह जानै।
जेतिक भीर परत अवलोकत ठौर-ठौर छवि माँझ बिकानै।
रूप अगाध अवधि सखि अंग-अंग रसना वपुरी कहा बखानै।
तन मन बूड़ि जात देखत ही कहा होइ उर भीतर आनै ।।
सुधि बुधि बल बिनु चतुर चातुरी कछू न सरै कोटिक जो ठानै।
प्रान प्रिया सँभराये समझि हैं कहा कहायें आप सयानै ।।
हौं तौ दारु पुतरिया प्रिया कर नचावत हित करि जैसे जानै।
सर्वस सुख थितु[4] जीवन बलुवित नागरीदास हम हाथ बिरानै ।।

१- गर्वभरा, २- दीन, दुबला, ३- मस्त, ४- स्थित।

[८७] राग-विलावल

गौर स्याम अंग-अंग खेलैं छूटि ।
अलक लूम महि रहे झूमि झिल अलभ लब्ध फबी अद्भुत लूटि ॥
बाढ़त रुचि रचि चौंप[1] चिहुठ[2] चित पलु-पलु मुख मकरंदी घूटि ।
नागरीदास प्रात कोलाहल मोद विनोद परत दोऊ टूटि ॥

[८८]

श्रीहरिवंश जू के भजन उजारे ।
श्रीवनचन्द विनोद मोद निधि प्रान नाथ नैननि के तारे ॥
श्रीव्यास सुवन बानी विचित्र रति कौतुक कोलाहल उर धारे ।
परमानन्द प्रीति की परावधि छैल छबीले सुखनि सुढारे ॥
मकरन्दी मृदु मधु अगाध पिय गूढ़ गम्भीर गरब गुन गारे ।
नागरीदास वृषभानु कुँवरि जू की राजकेलि तें निमिष न न्यारे ॥

[८९] राग-कान्हरौ

रच्यो न और दूसरौ लाल करुना कर ।
वानी ललित सुधा-निधि पोखयो दियें हियें फिरत नेह भर ॥
अलक लड़ौ निरमोलक हीरा राख्यौ हिय नेननि प्राननि पर ।
जो तुम्हें चौपचाड़[3] भजन की संतत[4] रहौ नागरीदास पाइन तर ॥

[९०]

जामें मोद विनोद केलि सिधि ।
हरख हेत भरी हंस नन्दनी खेल मेल सब सुख सद की निधि ॥
ललना लाल विलास विचित्र वर रोम-रोम रमि मरम रहे विधि ।
सौरभ सीकर जल रस पोषत नागरीदास मृदु महल टहल गिधि[5] ॥

[९१]

बाढ़ी जमुना जल कल केलि ।
कुँवरि कुँवर सब सँग सखी लै खेलत आनन्द झेलि ॥

१- लालसा, चटपटी, २- आसक्ति, पकड़, ३- चटपटी, ४- सदा, ५- तत्परता से ।

भरत धरत कोलाहल उमगे नागर सुभग नवेलि।
छिरकि चले प्यारी जब प्रीतम पकरे पट गर मेलि॥
उदित उजागर अंग रमीलो भीजे वसन सुहेलि।
मंगल रूप संपदा प्रगटी उपमा सब पग पेलि॥
फैल रही मोहन के नैननि प्रिया प्रेम की बेलि।
नागरीदास बलि विवस जानिकै पति छतियाँ लगि खेलि॥

[६२] राग-रामकली

सब सुख तरनि सुता वरखावत।
कमल विमल सौरभ मृदु सीकर सींचत हियौ सिरावत॥
मंगलकारी प्यारी पिय की पल-पल केलि बढ़ावत।
सकल सुगंध सु सींच नागरीदास छिन-छिन ऊपर छावत॥

[६३] राग-गौरी

जिनकैं श्रीहरिवंश सहाइक।
तेई सुजन भजन अधिकारी श्रीवृन्दावन घन वसिवे लाइक॥
अलक लड़े[1] आनंद भरे डोलत सिर पर व्यास सुवन सुख दाइक।
कुँवरिकुँवर तिन्हैं सुलभ नागरीदास रसिक सिरोमनि केलि गुनगाइक॥

[६४]

श्रीहरिवंश विमल वर वानी।
वृन्दाविपिन विलास माधुरी पूरन रसिक अनन्य सुख दानी॥
फूले फिरत मुदित मन रँगमगे श्रीव्यास सुवन रस जस के गानी।
नागरीदास रसिक वर सेवत सुलभ विहारी विहारिनि रानी॥

[६५]

श्रीव्यास सुवन पद पंकज रति करि।
रसिक सिरोमनि सावधान ह्वै वानी सुजस सुधा उर में धरि॥
रस सागर हरिवंशचन्द्र जू गुन आगर वर आनंद रंग भरि।
सर्वस नागरीदास गुसाईं तौ आवै सहज सुख कुँवरि कुँवर ढरि॥

१- दुलारे।

[९६]

कुशल कुँवर कमनीय किशोरे।
कोमल केतक अंग कनक कौ गुन गन गर्व गहिलरे गोरे ।।
रसिक नरेस प्रताप किरन कन कर्म धर्म मद मान मरोरे।
भजन चाल नव लाड़ लड़ावन जामें मोद बिनोद न थोरे ।।
विपिन विहार विशद जिनके हित ललना लाल फिरत चक डोरे।
लोभ लाभ नौखे[1] नाना विधि नागरीदास वानी नग छोरे ।।

राग-सोरठ

[९७]

बरसानौ हमारी रजधानी रे।
महाराज वृषभानु नृपति जहाँ कीरतिदा सुभ रानी रे ।।
गोपी गोप ओप[2] सौं राजें बोलत मधुरी वानी रे।
रसिक मुकुटमणि कुँवरि राधिका वेद पुरान बखानी रे ।।
खोरि साँकरी मोहन ढूँक्यौ[3] दान केलि रति ठानी रे।
गहवर गिरिवन वीथिनु विहरत गढ़ विलास सुख दानी रे ।।
दूध दही मांखन रस घर-घर रसना रहत लुभानी रे।
पान करन कौं अमृत सार सर भानोखर कौ पानी रे ।।
सदा सर्वदा पर्वत ऊपर राजत श्रीठकुरानी रे।
अष्ट सिद्धि नवनिधि कर जोरें कमला निरखि लजानी रे ।।
दीनें लेत न चार पदारथ जाचक जन अभिमानी रे।
नागरीदास वास बरसाने भागमती जग जानी रे ।।

राग-वसन्त

[९८]

फूलन के नव सत तन साजें।
फूलनि की कंचुकी फूलनि कौ लहँगा फूलनि की सारी अंगअंग बिराजें
कंकन वलय किंकिनी नूपुर फूल बढ़ावन फूल ही सौं बाजें
फूलौ आलिंगन फूल ही के चुंबन फूले मुख मधुपियें फूल ही सौं भ्राजें

१- अनोखे, २- शान से, शोभा से. ३- छिपा।

फूलहीके निकुंजघर फूलको तलपपर फूल की बरखत फूलही के काजैं।
फूल के सहा उलास फूली सखी आस पास,
नागरीदास फूले फूल खेल काजैं ॥

[९९]

वृन्दावन बाग फूली फुलवारी।
कौतुक अवधि कंतकल कौतुकी मुकुलित मन खेलत सुकुँवारी ॥
अंग सुधंग नचाइ नेह निधि विचित्र विलास भेद भर वारी।
खग द्रुम जंगम जन सब तोषे नागरीदास संग सुखकारी ॥

[१००]

विहरत विपिन फिरत रंग ठुरकी।
हरषि गुलाल उड़ाइ लाड़िली सम्पति कुसुमाकर की ॥
कसूँभी सारी सोधें भीनी ऊपर वंदन बुरकी।
चोली नील ललित अंचल चल झलक उजागर उरकी ॥
मृदुल सुहास तरल दृग कुंडल मुख अलकावलि रुरकी।
नागरीदास खेलसुख सनि रहे मननि ललकि नहि मुरकी ॥

[१०१]

रितु वसन्त फूलत वन राजी।
ललित लता मिलि अगनित रंगनि भाँति-भाँति तरु सभा समाजी ॥
मधुप मोर चातक कोकिल कुल मनहर मदन मण्डली साजी।
कौतुक अवधि कुशल कल कानन,
कुँवरि तव नागरीदास संग सुख काजी[1] ॥

फाग-झूमका

[१०२]

सुभग लता सुख सदन में फूलत तलप[2] पर रसैं खेल।
लाल बलि भावती जू ॥

१- किंकरी, कार्यकर्त्ता, २- शय्या।

गौर स्याम अब-अब लुलैं ललक लुभावन मेल।
चुम्बन चौंप चिहुट परिरंभन सुरत सहेलि।
मकरन्दी सुख मधु पियें ललित लाल अलबेल।
छुटक नचे अंग रसमसे ठौर-ठौर उदै खेल।
हरख करख[1] उत्करष सों अतुलित आनन्द झेलि[2]।
झूल फूल सद मदमते अवलंवित हार हमेल।
छुटो अलक आनन सुभी[3] सौंधे सगवगी फुलेल।
अटक भटक रति लटक में मटकि पगन की पेल।
मनौ मतंग[4] खिरखट[5] करैं उर सुख उरज उठेल।
अद्भुत वपु पराग कढ़ै थानिक[6] मानिक सफेल।
परम प्यार पूरन प्यारी जू पिय दारिद्र पछेल[7]।
झपक झमक झलमलन वसत तन पानिप प्रभा उथेल[8]।
सीत मन्द मारुत पुरवै स्वास वास सु वसेल।
झपक झकोर मती गतें उड़लित रूप अलेल[9]।
नागरीदास पिय हिय ओहठी विलसत गरव गहेल[10]।
लाल बलि भावती जू॥

[१०३] राग-पूरबी

लाल लड़ैती दोऊ मिलि खेलत दुर्लभ फाग।
परस्पर क्रम प्रीतम गुननिधि गौरी राग॥
तामें कुशल कुलाहल सनि स्याम सुभग सुहाग।
पति प्रापति परि पूरन गति मति अद्भुत भाग॥

१- आकर्षण, २- सहना, ३- शोभित, ४- हाथी, ५- क्रीड़ा, ६- स्थान, फेन झाग, ७- दूर करना, पछाड़ना, पीछे हटाना, ८- उठना, ९- अपार, असीम, १०- उन्मत्त।

ठौर-ठौर ठटे ठाटनि वरखि सुधा अनुराग।
प्यार परावधि मन परे लोभ लाह की लाग।।
लालन लाड़ तरल तन खेल मेल खगि खाग।
चौंप चमक बिच श्रीमद ताकौं लगन न पावै लाग।।
जद्दपि खेद भेद मदमाते आवैं आनन्द पाग।
नयौ-नयौ नेह अति फैलत रति रंगनि कौ जाग।।
भोर भीर भरि चाव चिहुट लसि लगै न आलस दाग।
रोम-रोम हिय जियहूँ सौंप्यौ प्रबल प्रीति दृढ़ ताग।।
गुन सलौन त्रैसंगम न्हाय दिये दान प्रयाग।
लाल अतिथि पोष्यौ पाल्यौ छुटि नट कुल नच्यौ नाग।।
विसद विलास विलसि नवल वर-वर वृन्दावन बाग।
जामें सकल सुखन की सामा श्रीव्यास सुत सदिका माँग।।
रूप झकोरा विष के वोरा नाना रंग छबि झाग।
नागरीदास वारि दिन पाछैं परै न आग।।

[१०४] राग-गौरी

अपने-अपने संग करि जूथ[1] जुगल नव बाल।
दुहूँ दिसि दुंदुभि बाजत मृदंग मुरज ढफ ताल।।
रुन्ज भेरि सहनाई मुहचर मुरलि रसाल।
भरि पिचकैं पिय सन मुख चलत मत्त गज चाल।।
डगत चरन नूपुर धुनि कृश कटि किंकिनि जाल।
कंचन तन नीलाम्बर कुमकुम रँगित गुलाल।।
मधि जराइ[2] की वैंदी मृग मद तिलक सुभाल।
करनाइत[3] कजरारे लोचन चपल विशाल।।
विहँसत स्याम दसन दुति अरुन अधर प्रतिपाल।

१- समूह, २- जड़ाव की, ३- कानों को छूने वाले।

चिबुक चखौंड़ा[१] मोहन कठिया[२] कंठ मणि माल ।।
कौतुक रूप निहारत औसर विथक्यौ[३] हाल ।
धरिवौ भरिवौ भूल्यौ विवस कुँवर तिहि काल ।।
लै पाइन तरनाये पुलकित प्रेम प्रवाल ।
मुख मधु प्याय अंक भरि प्यारी परम कृपालु ।।
ग्रीवा भुज गहि लटकत जोरी जनु जुगल मराल[४] ।
सेज सदन सुकुँवार मदन मते मृदु पाल ।।
अगनित गुन गति उपजत रंग अनेक उछाल ।
चतुरबाहु[५] कंठनि गसि मनु मिलि उरग[६] मृनाल[७] ।।
नागरीदास हेम की वल्ली[८] अरुझी स्याम तमाल ।।

[१०५] जैत-श्री

लाल लड़ैती जू रंग भरे नीकौ बहु नीकौ बन्यौ समाज ।
सकल सहेली संग लियैं साखजवादि⊛ सौंज[९] रची आज ।।
जूथ-जूथ जुवती जुरीं कीनी वहाँ दुहुँ ओर बनाइ ।
अप अपने बरनन मिली गोहन[१०] जू अब लई लगाइ ।।
सूथन[११] कछिनी कटि कसैं श्याम की कोद[१२] सावरे अंग ।
विविध विनोद विचच्छनी[१३] गोरी बह्रो गोरी सुन्दरि संग ।।
उत गुलाल जेरी लई इत पिचकारी सटकारी साट ।
उत कोपर चोबा भरे इतहि बजू कुमकुम के माट ।।
उभै वृन्द सनमुख जुरे चरचत छन्द वॅन्द कै बहु दाव ।
मध्य विराजत भाँवते रहसि रहसि खेलन कौ चाव ।।
फाग विपिन वीथिनु मची उमड़े जूथ तन मन में मोद ।

१- डिठोना, २- सुडौल, पहलूदार, ३- स्तब्ध, ४- हँस, ५- युगल को चा भुजायें, ६-सर्प, ७- कमल का नाल, ८- लता, वेल, ९- सामग्री, १०- साथी ११-पजामा, १२- ओर, १३- विवेकशीला, प्रवीणा ।
⊛ पंच पल्लव-यवांकुर आदि ।

छिरकत भरत धरत लसैं कोलाहल उपजै विवि कोद ॥
ताल पखावज डफ बजैं बीन किन्नरी अवज उपंग।
गजक कमाइच कुण्डली महुवर मुरली मृदु मुख चंग ॥
अति कौतुक कहत न बनै दम्पति सम्पति सने सुरंग।
निरखि नाहु विथकित भयौ उदित हास मुख उरज उतंग ॥
हार झमकि कृश कटि डलै लटकि-लटकि पद मद गज गैन।
सबै सुघरता पाइयै उमड़ी पानिप की निधि ऐंन ॥
कंचन तन छवि अति फबी सौंधैं बुड़े कसूँभी चीर।
नव कपूर वन्दन उड़ै केसरि रंजित कृष्ण शरीर ॥
भींज वसन झीने लगे रहे शुभ अंग उजागर होइ।
भूषन पट न सभारहीं मोद मुदित आनन्द मन भोइ ॥
अरगजा कीच अवनि भई सौरभ बन कानन रह्यौ छाइ।
पिय प्यारी रस रसमसे[1] हरखि वह्यो हियैं न समाइ ॥
तब विचार सखियन कियौ समयौ कल क्रीड़ा कौ जानि।
सैननि माँझ चलाइकै कुँवर कुँवरि पग पारे आनि ॥
भुज उठाइ आँकौ भरे चले मुदित हँसि गहवर कुञ्ज।
तलप रुचिर सज्या रची बरनि बरनि कुसुमनि के पुञ्ज ॥
ललित लाल सज्या भये नवल चीर नव-नव सत साज।
चुम्बन परिरंभन करै मुख प्रकास रह्यौ भवन विराज ॥
सुरत सुधा सागर बढ्यौ निज सहचरि के नैनन हेत।
चारु चलत अब माधुरी नव-नव सचु विलसत सुख देत ॥
कोविद कोक कलनि भरे सुलस सुघर सुन्दर सुदेस।
रस तन्द्रा[2] इत लोचना वदन माधुरी मद आवेस ॥
विटरत अधर दसन धरैं आनन मिलि झिलि सुभग सुवास।

१- रस भीजे, २- निद्रायुत।

मण्डित उर कल कंत कै राजत सुन्दर राज विलास ॥
नूपुर किंकिनी धुनि सुनी चतुर चौंप जुग रुचिर उदार ।
हुलसि चाइ पलु-पलु चढे विलुलित कच कमनीय विहार ॥
पुहुपावलि सिर तें गिरैं चोली दरकि विगत स्त्रक[१] वास ।
अमित अघात अघातिनी रजनी रति गति अमित हुलास ॥
हिय जिय भेदनि भिदि रहे सुभग मोर ज्यौं मंगल ठाट ।
यह अलाप अविचल रहौ नागरीदास जियत इहि डाट[२] ॥

अथ अक्षय तृतीया के पद

[१०६]

आज महा मंगल कौ दिन है ।
अखती लाड़ खेल प्यारी जू कौ कोटि कोटि सुख कौ इक छिन है ॥
प्रेम परस लायरस लाल सौं मिलन भीतरौ सखि मिसु खिन है ।
नागरीदास अखैती जुरी रंग हद बिनु है ॥

[१०७]

याही तें अक्षय तृतीया नाँव ।
पहलैं ही तें सकल सजनी मिलि रचि राचियत खेल कौ ठाँव ।
दरस परस रस महा महोच्छव संघट कोलाहली विचित्र बनाव ।
नागरीदास सखियन की मनोरथ पूरन होत केलि कल दाव ॥

[१०८]

सीतल वरकी छाँह परसुला ।
याही तें अक्षय चरित्रा तृतीया खेल मेल रति रंग सरसुला ॥
पूरित प्रीति परस्पर हिय भर अद्भुत रूप अनूप दरसुला ।
नागरीदास समाज आदरी शुभ विहार सद सुखनि बरसुला ॥

१- माला, २- डटे हुए हैं ।

[१०९] राग-मलार

नेह निपुन निरवधि रति जामें ।
यह पावस परिपूरन आनन्द प्रीति समीति थिर चर तामें ॥
चातिक चौंप रटत प्रेम मगन पिक नटवर किलकि जगावत कामैं ।
गरज गंभीर गरव उवराहट उदमद घन निरवत वर भामैं ॥
साज समाज जाहि सब लाग्यौ हित थितु रित वरखा अभिरामें ।
नागरीदास सुनि चली मुदित हँसि बिपिन विलासिनि निकुंज धामैं ॥

[११०]

प्रेम बलि पावस बाँट पर्यौ ।
पसु पंछी थिर चर अनुरागी सब इक मना कर्यौ ॥
प्रीति उमाह ललक के वस परि धीरज रह्यौ धर्यौ ।
नागरीदास इहि वरषा सबकौ तन मन प्रान हर्यौ ॥

[१११]

एकै तक धक जक दुहुँ ओर ।
द्वांगी झमक तार सुर किंकिनी पूरत भवन मध्य मधु घोर ॥
उमड़ि अवनि रस एक मेक भई रैंनि मुख मंगल भोर ।
नागरीदास सर निधि रस लंपट आनंदित मद ललित किशोर ॥

[११२]

रमीलौ साँवन उल्हर आयौ ।
हरित अवनि निरखत मन हरखत घमड़ि गरज घन गगन छायौ ॥
चातिक शब्द उघटत केकी नट कोकिल कुल मंगल गायौ ।
नागरीदास कहि खेलं बलि कानन कोलाहल मन कौं भायौ ॥

[११३]

यह सावन सब सम्पत्ति साहौ ।
नवल अवनि नव वन नव जलधर लागत है तन मनहि उमाहौ ॥
कोकिल चातक गान केकि नट कौतुक विपिन ललक को लाहो[१] ।
खेलहु कुँवरि केलि कल कानन नागरीदास बलि सुख अवगाहौ[२] ॥

१- लाभ, २- अवगाहन करो ।

[११४]

सखी सांवरौ सावरौ शिखर ।
पीत बसन दामिनि जल धरसौ तैसोई सुभग सावल गिरि ॥
नाचत मोर हरखि मुरली धुनि गान करत चातिक पिक पिखरि ।
ठाढ़े त्रिभंगी ललित इकवाई नागरीदास सुध गई बिसरि ॥

[११५]

भींजत दोऊ घन दामिनि तन हेरैं ।
चातिक रटि पिक गान भेद करि सुनत केकि कल टेरैं ॥
पुलकि पुलकि लपटात गात गसि हँसि उरोज उर भेरैं ।
आरज[१] बसन तन अवनि अमित छवि अलि ललितादिक घेरैं ॥
पावस संपति दंपति विलसत कूल कलिंदी नेरैं ।
नागरीदास नव नागर नेही सदाई बसौ मन मेरैं ॥

[११६]

कनक पत्रावलि झूमत घूंघट ।
लहँगा पीत कँचुकी कसूँभी तैसोई गोरे तन लसत नील पट ॥
केसरि की आड़ जराइ कौ वैंदा तैसिय मुख पर रुरत ललित लट ।
वर बानिक छवि रही पिय नैननि नागरीदास धीरज न रह्यौ घट ॥

[११७]

कंचन तन छवि फवी है लड़ैती कसूँभी सुरंग सारी ।
सहज सुहावने झूमे वादर सघन वृन्दावन नव अंकुरित अवनि हरियारी
प्यारी जित चलत तित नचत वरहीं[२]कुल किलकि [२]चातिक किलकारी
गावत गुन गंभीर कोकिल गन वरखि फुही गरजत जलधारी ॥
पल पल पलक पाँवड़े पिय दै तन मन प्रान संपदा वारी ।
नागरीदास कमनीय कुंज मिलि उमगि प्रेम कल केलि सुचारी ॥

१- श्रेष्ठ, २- मोर।

[११८]

आज सुहावनौ कल कानन ।
तैसियै सजल स्याम घटा सघन सुरंग नव ललित उठानन ।।
रटत चातिक नचत मोर आनन्द भरि कोकिल कलगन गानन ।
नागरीदास बलि देखियै आछी हरित अवनि तामें कुँज सुठानन ।।

[११९]

तुम्हारौ बलि सावन है ।
हरित भूमि पर विपिन रमीलौ सजल जलद रहे गगन गरज छै ।।
नाचत मोर कोकिला बोलत चातिक रटत ललक की लै ।
नागरीदास बलि मिलि रति सौ पति करति आलिंगन अधर मधु दै ।।

[१२०]

बदरिया धुर वानी धुकि धुकि ।
ईखत[१] दामिनि दमकति लसि लसि बरखत अमृतधारा रुकि रुकि ।
चातक सतृष्ण तृपति नहि मानत प्रणय प्रकोप झकोरत झुकिझुकि ।
नागरीदास बिथकित डरपत मनोहर बूँद बरावै चित चुकि चुकि ।।

[१२१]

झमकि झलनि झमकति नव गोरी बदरिया उर उल्हर बरसी ।
श्याम भूमि पर झूमि निरंतर अति अति रति सरसी ।।
कच धुरवा पिक वैननि मोहत दसननि दुति दामिनि दरसी ।
नेह मेह झर नागरीदास ज्यौं ज्यौं पति परसी ।।

[१२२]

उनये उनमद उमड़ि सजल घन ।
कोकिल गायन केकि नृत्य की चातक रटि कोलाहल वृन्दावन ।।
विलसत दामिनि मृदु जलधर मधि पूरत पानिप विमल जुगल तन ।
नागरीदास निरुपम निरवधि कहा बनि आवै फूल फैल मन ।।

१- मन्द-मन्द ।

[१२३]

चंपक तन कसूँभी सारी पहिरी।
इक वरनी छवि अंग अंग प्रति पानिप[1] प्रकासित पचरंग गहरी॥
पिय हिय विलसत गुन गरवीली वानिक निरखि परत सिर सहरी।
दरस परस रस बूँद उछारत नागरीदास अद्भुत सुख लहरी॥

[१२४] राग-देवगंधार

झूलत दोऊ संग डोल बने।
अंबर उड़त अमित अगनित छवि किलकत रंग सने॥
निरखत मुख सुख कहत न आवै क्रीड़त रस अपने।
फेरि पियौं जल चटकि आँगुरी सिर नागरीदास वारने॥

[१२५] राग-सारंग

झूलति दोऊ रितु बसंत सुखदाई।
कुसुम खंभ कुसुमन की डांड़ी रचना विविध बनाई॥
मधुरे सुर आलाप लाड़िली राग मलार सुनाई।
लैं बलाइ पद पकरि भाँवते रवकि कंठ लपटाई॥
पहुप पुंज बरखत वृन्दावन समीर सौरभ झरलाई।
आनंद उमगि निरखि सुख सखियनि मुदित गुलाल उड़ाई॥
पिय चकोर चंद्रावर वदनी अधर सुधा अँचवाई।
चौकीहार पटपरी प्रेम ग्रन्थि नागरीदास सिराई॥

[१२६]

झुलवत कुँवरिहि मोहन राय।
रितु बसंत वर रच्यौ है हिंडोरा विविध रंग रंग कुसुम बनाय॥
अद्भुत भाँति भावती देखत आनंद उर न समाय।
सनमुख मगन होत सुख सागर रीझि गहे पिय पाँय॥

१- आभा।

भुज गहि प्रीतम कंठ लगायौ अधर सुधा अचवाय।
वर बंदसि[१] पर बलि नागरीदास निरखि न्यौछावर जाय।

[१२७]

अलक लड़ौ सावन अलक लड़ी लाड़िली झूलत अलक लड़ौ हिंडोल।
कोकिल चातिक गान सुकानन नाचत केकी कल बोल॥
धावत उदमद अलक लड़ौ धरत धरनि धरैं कसूंभी निचोल।
पहिरैं पीत वसन पिय आगै नागरीदास सुवस बिन मोल॥

[१२८] राग-धनाश्री

फूलत झूलत पति हिये हिंडोरना।
बलि दामिनि घन कोटि हिंडोरना॥
लाल ललक लालच बढ़चौ हिंडोरना॥टेक॥
बिलसत पिय निधि पोट[२]। हिंडोरना।
मुक्ता मांग बग पंकती धनुष घूँघट पचरंग।
घुरवा[३] अलक आनन रुरै मनौं घन हिमकर[४]इक संग। हिंडोरना।
कोकिल कूजें चातिक रटैं मेह नेह छए घूमि।
केकी किलक कौतुक नचै घटा दिसि दिसि रही झूमि। हिंडोरना।
गरव गहिल किंकिनी घुरें नूपुर कंकन वलय बाजु।
श्याम दसन चपला दिपैं[५] गंभीर मंगली गाजु। हिंडोरना।
अलक लड़ी लाड़नि लड़ै दुलरावत कल कंत।
दरस परस परिरंभना चुँवन मद मैंमंत[६]। हिंडोरना।
प्रमुदित बदन सुधा पियैं मदन गुमानी बैन।
कुंडल झलक कपोलनी चपल चारु चारौ नैंन। हिंडोरना।
लटकि मटकि कृश कटि डुलै ललित लुलित अवचाइ।
मद मंथर गति गुनवती देखत नैंन लुभाइ। हिंडोरना।

१- चरण ग्रहण करने पर, २- पोटली, ३-बादल, ४-चन्द्र, ५-चमकै, ६-मदमत्त,

विलसत हियें विनोदनी सुलस सुखनि सुकुंवार।
नागरीदासी वारनै[१] आनंद उदित उदार। हिंडोरना।

[१२९] राग-अड़ानं

झूलत मीत मते[२] रति रंग हिंडोरनि को दुमची[३]।
अब अब चालनि रोम रोम सुख भुज दंडनि खुमची॥
मचकत सदमद श्रवत तरुन हद सुभग सुदृढ़ गति नहिं उमची[४]।
बर बिहार पर बलि नागरीदास गूढ़ दशा सुमची॥

—※—

अथ प्रिया जू की बधाई

[१३०]

मंगल है वृषभान राय घर।
जाई कुंवरि कीरतदा रानी छवि अगाध अतुलित आनंद कर॥
नंदी[५] सुरतें सौंज सकल भरि आए वधाये महरि महर।
बड़े भाग वल्लभ कुल मंडन दूव बंधावत भेटि परस्पर॥
सिर दधि ढोरि हरखि मुख माड़त सुकृत समूह फले इहि औसर।
लटकत फिरत रंग रस भीने हरख उछाहु बाहु अंसनि[६] पर॥
गोरस माँट लुटावत आँगन नाचत प्रेम मुदित नारी नर।
घृत मधु माखन दधि अजिर[७] झिले मानहुँ मुदित मराल मानसर।
घर घर बात लुटाइ नंद जू जनम महोत्सव यह सर्वोपर
सुत समेत वारि जसुमति कौं रहे सीस दै सुता पगनि तर॥
धन्य हिता जिन कुँवर कूंखि धरी रूप अनूप कुशल कौतुक कर।
कुल परकास रसिक जन जीवन नागरीदास सिराने थिर चर।

१-वलिहारी जाते हैं, २-मतवाले, ३-झोटा, ४-ढीली, ५-नन्दग्राम
६-कन्धे, स्कन्ध ७-आँगन।

[१३१]

नाचत रंग भरे रावल आये ।
जसुमति नन्द सहित सब गोकुल सौंजनि सकट[१] भराये ।
तोरन कलस जलज मनि झालर धुजा पताकनि द्वार बनाये ।
चंदन गलीन गरकी छिरकी अजिरनु वरन वितान तनाये ।।
जित कित श्रवन सुजस धुनि सुनियतु जनम नक्षत्र विमल गुनगाये ।
शुभ सुकुँवारी प्यारी प्रगटी धन्य हिता जिन संचि हिताये ।।
श्री वृषभानु नृपति जूके घर पूरित मंगल विविध बधाये ।
यह सुख सुपनेहू नहि भैया कहा भयो जो बेटाहू जाये ।।
धन्य कूखि कीरतिदा रानी वल्लभ कुल के तिमिर नसाये ।
सुन्दर सकल घोष परकासक अतुलित आनन्द नैन सिराये ।।
सोभा निधि उर धरी सिरोमनि ब्रज वन दिन दिन कौतुक छाये ।
रूप अवधि है सुता छवीली सुकृत पुँज बड़भागनि पाये ।।
कुमकुम चोवा भरि नर नारी दूध दही के माँट लुटाये ।
निर्तत बाहु परस्पर कंधनि अवकल कारज मन के भाये ।।
हँसत लसत लटकत रंग भीने कोलाहल वर भवन बढ़ाये ।
प्रेम मगन पट भूषन छूटत ओक बोघ गोरसनि बहाये ।।
व्योम विमान अमर गन[१] देखत सकल समूह कुसुम बरसाये ।
जय धुनि कहि धन्य मानि अपुनपौ हरखि हरखि निसान बजाये ।।
अति उदार राजनि के राजा मनि मानिकन सकल अघवाये ।
निपट निसंक दाननहि उसरत हाटक हीर चीर बगराये ।।
भानु नरिंद[२] कुटुम्ब कौ मंडन सुहृदिन पट भूषन पहिराये ।
नागरीदास धनिक भये जाचक गोधन भवन भँडार लुटाये ।।

१-गाड़ी, २-नरेन्द्र, राजा ।

[१३२] राग-गौरी

बजत बधाई वृषभान जू के रावर[१] ।
ब्रज सब सिकल[२] महोछै[३] आयौ भये मनोरथ मन के भावर ।।
नंद जसोदा सर्वसु खरच्यौ पग गहि कुँवर कियौ न्यौछावर ।
कछु न सँभार गोप कुल मंडन फूले फिरत प्रेम लड़बाबर ।।
धन्य कूखि कीरतिदा रानी कुँवरि रूप निधि जनमी जा उर ।
कोउ न कृपन रह्यौ तिहि औसर नागरीदास पोषे जंगम थावर ।।

[१३३] राग-जैंतश्री

आज लली कौ सोहिलौ[४] कुंवरि मेरी प्रगटी है आनन्द कंद ।।टेक
धन्य कूखि कीरतिदा रानी कीनौ कुल परकास ।
कौतुक अवधि कुँवरि यह जाई सफल भयो ब्रजवास ।।
जग उदोत मुदित मुख सुन्दर है सोभा कौ धाम ।
देखी सुनी न ऐसी कन्या अंग अंग अति अभिराम ।।
आज भवन वृषभानु भुवन कौ निज सुख निरख्यौ नैन ।
सब सुकृतनि की संपति आई कहत बनै नहिं बैन ।।
होत कुलाहल गावत मंगल घोष बधायें आयौ ।
पुन्य पुंज वृषभान नृपति कौ देख्यौ मन कौ भायौ ।।
मोतिनु माल चौक मनि बँदन गली सुगंध सँवारी ।
रावल रमित रवानी राजत जनमी है सुकुँवारी ।।
रतन जटित बहु भाँति पताका मारग छाये फूल ।
मानिक चौकनि दिपत दुवारे रोपे है कदली मूल ।।
महा महोछौ गोप राइ घर दूध दही की कांदौ ।
कुमकुम चोवा चँदन छिरकत झर लायौ भर भादौ ।।
गोरस माट लुटावत आँगन नाचत मगन भये ।

१- महल का अन्तर, २- एकत्रित, ३- महोत्सव, ४- जन्म संगीत बधाई ।

वल्लभराज हिता चिरजोरी उपजत मोद नये ॥
घृत मधु माखन झिले गिरारे अजर मुदित 'नव बाल ।
नर नारी हँसि भरत परस्पर मानो मत्त मराल ॥
गद गद सुर तन पुलकि हरखि मन झूमत ग्रीवा बाहु ।
अति आवेस सुदेस सोभियत उमड़यौ प्रेम प्रवाह ॥
गोपी ग्वाल मिले मधि निर्तत लटकत रंग भरे ।
भूषन बसन गिरत नहि जानत कवरिनु कुसुम ढरे ॥
तबहि हरखि रावल रानेजू हाटक[1] हीर मँगाये ।
चीर अमोल विविध पाटंवर वधू बंधु पहिराये ।
तब मागद बंदीजन संग दै जाचक धनिक करे ।
भवन भंडार उखेल सौंज सब बकसे सकट भरे ॥
आयसु भयौ खरिक लख द्वै कौ ग्वाल हंकार लये ।
महाराज राजनि के राजा लहिर विडार दये ॥
पूरन करी कामना सब विधि रसिक सरस आनंदे ।
नागरीदास वास वरसाने गौर चरन रज वंदे ॥

[१३४] राग-गौरी

बजत बधाई वृषभान जू के रावर ।
वर बरसाने सुख सरसाने नाचत मेल मिले नारी नर ।
दही हरद रोचन मुख मांडत हँसि हँसि भरत प्रफुल्ल परस्पर ।
गोपी ग्वाल महा मदमाते गाइ जनम मंगल गदगद सुर ॥
गरे वांह दिये लटकत डोलत महा मुदित अनुराग रंग भरि ।
भूषन वसन गिरत नहि जानत नागरीदास लाग्यौ आनँद झर ॥

१-सोना ।

श्रीलाल जू की बधाई

[१३५] राग-जैतश्री

आज बधावौ ब्रज राज कै । प्रगट्यो है आनंद कंद ।।
स्याम सुन्दर कमल लोचन जायौ जसुमति पूत ।
लाल कुल कौ भाँवतौ री जा बिनु जगत अऊत[१] ।।
कुँवर रूप अनूप पौड़ौ दिपति दीपति धाम ।
ललित मुख के वारने री अँग अँग अति अभिराम ।।
मुदित ब्रजपति भवन आये सकल गोपी गोप ।
दूव बधाई जुहार करि करि भई है कुटुंब की रोप ।।
भुवन मंगल रूप सुत कौ निरखि वारत प्रान ।
तृन तोरि लेत बलाइ वनिता जियौ जसुमति जान ।।
छिरकि दधि मुख माड़ि रोरी माट देत लुढ़ाइ ।
अजिर गोरस पंक पूरित रपट टिक नहि पाइ ।।
पुलक तन नर नारि निर्तत बाहु कंठ लगाइ ।
मत्त गदगद सुरनि गावत हरख हिय न समाइ ।।
कोलाहल कौतूहल मंगल महा महोत्सव द्वारैं ।
नन्द राइ अनुराग मुदित ह्वै रीझि अपुनपौ बारैं ।।
हाटक हीर चीर पाटंवर गोधन कूट लुटाये ।
जाचक धनी अजाची कीने मन कामना सिराये ।।
भूषन बसन बंधु वधू पहिरैं फिर तब पाइ गहे ।
यह सुख सुकृती सुहृद तिहारौ लोचन वारि बहे ।।
नागरीदास कोऊ न गयौ घर सुधि बुधि बिसरी देही ।
अलभ लब्धि प्रापत बड़भागी सनि रहे सजन सनेही ।।

१-पुत्र विहीन, निपूता ।

[१३६] राग-गौरी

श्री हरिवंश सरन जे आये।
श्री वृषभान कुवरि नंदनंदन निजकर अपनी चिट्ठी चढ़ाये ।।
दिये मुकराय[१] कछू नहि गोयौ किये मनोरथ मन के भाये।
व्यास सुवन चरनन रज परसें नागरीदास से रंक जिवाये ।।

[१३७] चर्चरी-ताल

उघरि मुख मुसकि मृदु ललित करताल दे
सुरत तांडव अलग लाग लीनी।
विविध विधि रमित रति देत सुख,
प्रानपति छामु[२] कटि किंकिनी कुनित कीनी ।।
उरप तिरपनि लेत सरस आलाप गति
मुदित मद दैन मधु अधर दीनी।
अमित उपजनि सहित सार सुख संचि
रति भाम हिय लसत रमिरंग भीनी ।।
स्वाद चौपनि चढ़ी लाड़ लाड़नि लड़ी
अवनि दुति तन तड़ित घन छवि सुछीनी।
कोक संगीत गुन मथन की माधुरी
नागरीदास अलि दृगनि भीनी ।।

[१३८]

विलसत लसत पानिप अंग।
गज क्रीडा रत कुँवर दोऊ नचत सुरत सुधंग ।।
लोल कुंडल गंड मंडित भाव भृकुटी भंग।
अधर दसन सहास मृदु मुख लसत विंव वर रंग ।।
मुक्त माल सुढार उर पर दिपति उरज उतंग।
किंकिनी कल कुनित श्रवननि उदित कोटि अनंग ।।

१-मुक्तकर दिये, २-कृष, पतला।

तलप सुरत किशोर कोमल लई कुँवरि उछंग।
दासि नागरी कच सँवारत करनि विथुरी मंग ।।

[१३९] राग-विहागरौ

राति सुहिरती निवड़ जीत भई।
पूरे पैत परे प्यारी जू के हारे पति रति टेक टक ठई ।।
गये दाव फुरै चाव चौगुने सर्वस धरि अंग अंग होड़ दई।
जूवा तन मन हार्‌यौ नागरीदास यामें पिय रुचि रंग अधिकई।।

[१४०] राग-जैतश्री

स्याम सहेली भाँवतौ देखत री मेरे हियें उछाहु।
इन अखियन में रमि रह्यौ रंग मग्यौ रंग नागर नाहु ।।
वरहि मुकट वर सिर धरै कुमकुम हो तिलक ललाट।
करनायत चल लोचना चितवत री छूटत हट घाट ।।
अधर विंव शुक नासिका निरुपम हो मुक्ता मनि चारु।
मणि कुंडल श्रवनन बने राजत सोभा बदन उदारु ।।
दार्‌यौ[1] बीज दसनावली मंद मंद कलहास प्रकाश।
कुटिल अलक छवि मंडना भृकुटिनि री भेद विलास ।।
कंबु[2] कंठ मोतिन लरै गुंजा जुत राजत वनमाल।
अवलंवित आजानु ज्यों सुन्दर री सखी बाहु विसाल ।।
पीत वसन कटि काछिनी किंकिनि री सखी शब्द कराइ।
मत्त चरन गजराज ज्यौं धरत ललित नुपुरनि बजाइ ।।
सुनत सखी की ओट ह्वै गहवर हरषि हृदौ गयौ पूरि।
पुलकित अखियनि जल बह्यौ धाय गहे पद जीवन मूरि ।।
दृगन लाय सिर बंदि कै चूमि लाल धरि हिये मँझार।
जीवन फल धन मानियौ कीनौ जू मधि नायक हार ।।

१-दाड़िम, अनार, २-शंख।

उमगि कुँवर आँको भरे भये कुंज सुख सेज समाज।
केलि कलोलन मन बढ़ै सहचरि सब परिपूरन काज ॥
सुरत सुरस लसै लाड़िले अंग अंग गसि रहे अरुझाइ।
शुभ विनोद दिन दिन करौ नागरीदास न्यौछावर जाइ ॥

[१४१]

विवि[1] आवेस एक तन होत।
कबहुँ इत कबहुँ इत उत भीर परी ओत प्रोत ॥
उमगि सुधा रस श्रवत नेंक विधि सरस सुरत सर्वोपर सोत[2]।
नागरीदास सब रस अलट पलट राजत तन उछोत ॥

[१४२] राग-केदारौ

गोरे गोरी हाथ डंडा खयें उघरत,
कुँवरि भोरी भोरैं खेलत तलप रसु भीने।
परिरंभन चुँवन आलिंगन सुभग अंग साँवल भुज दीने ॥
छूटे केश आवेस सुरतसुख चिवुकटटोरि निहोरि नवीने।
नागरीदास बलि झुकि रद[3] अध रंगहि परसत,
पींडरी जब उरजही पीने ॥

[१४३] राग-सारंग

आज अधर सुधा प्यावे परसावैं कुच मानौ घन दामिनि मोल लयौ।
करत निहोरो तोहि नहि ओरनि जामें पूरन काज भयो ॥
तुम मेरौ अवलंव सपथ करौं याही ते यह पूरन ठाठ ठयौ।
कहि नागरीदास आस मन क्रम वच पाऊ आनंद तेरौई दयौ ॥

[१४४] राग-रामकली

कनक सुकंजरू नील नव झिलिमिलि होत दुरंग।
सौरभ श्रव कल कोश तैं मेटत मद सु कुरंग[4] ॥

१-युगल, २-स्रोत, ३-दशन, दाँत ४-बादामी या ताँमड़े रंग का हिरन

मेटत मद सु कुरंग त्रिविध घन सार सार कौ।
केसरि सरि क्यौं करै सकल सौगंध अंग कौ ।।
सुमुख वमत मकरंद उदित अद्‌भुत सुकिय परस्पर गिलान ।
सरस मेचक छवि कनक की सुरत समर अरे सूर सुजान ।।
तलप खेल कल माड़े खाड़े अधरन पुलक उमगि रतिदान ।
अवनि प्रहार करत उपजत छवि मुरत न छैल अमोर अमान ।।
कोक कला कुशली प्रवली गति पलु पलु बढ़त करत मधुपान ।
जोवन नव उभै जोधन की विरचि बढ़ी दुहुँ ओर समान ।।
कोटि-कोटि भावन की भाँवरि नागरीदास किलकि किलकान ।

[१४५] राग-आसावरी

भानुजा पुलिन वृषभानुजा क्रीडती ।
भानुनंदनि(*)आनंदकारीकुंवरि रमित निरसंक न अनंगरंग ब्रीडती ।।
पुलकि कामिनि चलति ललितगति भेदसौं अवनि मदमेदनी भेदवासै ।
कोक कौशल रूप निधि अंगमें असित रंग वर्तिसी जोति भासै ।।
लंपटी भेद भरि हाव भावन चितै मटक भृकुटिन मटकि मुखमोरै ।
नागरीदास बलि रोकि दृग केलि बलि विमल निगमनअगम मैंड तौरै ।।

[१४६]

सुन्दर वदन निरखि वोई कोजै इहि सुख जीजै मेरी आली ।
सेज समाजे भूषन बाजे तेही तेही ताल नचत वनमाली ।।
हरखि कुंवरि हुरमई लेति हिय और भेद चन्द्र भ्रु व चाली ।
अंग अंग संगम अभिअन्तर मद रस पीवत नाभी नाली ।।
रोम रोम प्रति उदित सरस रस जुव अवराज लाल मुख लाली ।
उमगि उमगि घुरि मिले मिथुन मन नागरीदास प्रान पति पाली ।।

(*)पाठान्तर-भाम नंद नंद ।

[१४७]

नेति नेति मधु मुँच मुँच रव।
कुँवर किशोर कसिपु कुसुमन पर रति विनोद करत राधा धव[१] ॥
रोष परसि करि भुज पुलक सकल तन,
उमगि मिले मद छाड़ि अवमि अव।
आसन गसि बस होत परस्पर तरलित तनन मनन अति अरुझव ॥
मार[२] झार निरमाइ रमित फिर उकति अनेक चित्त गुन नवनव।
फूल न मात गात अलिजन के बात सुनत काननि सुख परिभव ॥
नागरीदास निरखि न्यौछावर इहि जीवन जो जीजै निमेष लव ॥

[१४८] राग-सारंग

पलटि पलटि परे रति भेदन में।
उठे अभूत बहु भाँति अनोखे अति आनंद उदार अमीतैं ॥
फिरि फिरि लेत उपज नाना विधि सुभग जघन सिंहासन वैसें।
कबहुँ कबहुँ रस मगन होत मन राज सुरत सुख बूड़ि उठें ॥
येई न्यौर त्यौर दिन दिन प्रति दंपति अलि हिय जियनि बसे।
नागरीदास अनुरागी नागर अधर दसन गहे रंग रसे ॥

[१४९]

वर अनुराग खेल माड़े है।
अवधि अरुकि अड़ग एक ही तक निरवधि आरजपथ[३] छाड़े है ॥
जा आभास श्रवन भवननि भरि उज्ज्वल ब्रज जुव घर भाँड़े है।
नागरीदास उपासक सोंवा सुहृदी घोष प्रेम ठाड़े है ॥

[१५०]

हलहि चलहि नहि भजनी घंड।
वे परवाही धीर वस्तु गहैं बहे फिरत जग भरमी वंड ॥

१-प्रियतम, पति, २-कामदेव, ३-आर्य पथ।

भक्ति वान करि कपटी कुच्छित[१] परि है कठिन काल के दंड।
नागरीदास बाहाल विकारी पकरि विगोये जम परचंड॥

[१५१]

सखी की पीठ सौं सीस टिकायौ दुहुँ करनि कंधा पकरै।
लटकि आवत खोरि साँकरी अँड़े बैंड़े चरन परै॥
रह्यौ लाल दै देह पाँवड़े समै ठौर गहि घात करै।
हा हा करि सहचरिहि मनावत सोइ करि हिय पाँय धरै॥
रोम रोम पिय हरषत तन मन आइ गई उर पर उलरै[२]।
नागरीदास प्रगट भये हँसि निहारि मुख लगी गरै॥

[१५२] राग-कान्ह

सोई नाइक रस लंपट रसीलौ जा तन नाइकता ठहराइ
विथकै नहीं भेद भाइन में पल पल गर्व गुननि गहराइ।
उपजै और और मद छूटै लहलही उरसि ललक लहराइ
नव नव चौंपनि बलित ललित जति[३] गति अलात[४] में चित ठहराइ
सरस सुरति सनमान दान रति रोम रोम सुख उठै लहराइ
छिन छिन प्रति नव नव छवि नागरीदास नासा जलज मन थहराइ।

[१५३]

बढ़त हित नित नित रति त्यौनार[५]।
नव नव चौंपनि बलित ललित गति छवि पावत मुख मधु ज्योनार।
औरै और तरंग तननि तैं तरलित होत तरुन वर जोर
इहि सुख मगन रहत निसि वासर जानत नहीं नैंक निसि भोर।
स्यामा स्याम धाम आनंद कौ जुव जन नितन करत सदाई
बजत जहाँ नौसान समर कौ नागरीदास वर विपिन बधाई।

१-कुत्सित, २-उमडन, ३-ठहराव ४-आभा, या तेज पुञ्ज का घेरा ५-ढंग,त

[१५४] राग-सूहौ

दंपति कौ धन कानन चारू ।
धनुष धरें अपने पर कर सौं सावधान सेवत नित मारू ।।
जामें नाना भाँतिन राजत राज केलि वैभव विस्तारू ।
गुन लच्छन नव भेद माधुरी अवगाहन कौ वार न पार ।।
मुख में मुख करैं पान अधर मधु सोहत सुभग कंठ भुज हार ।
झूम्मौ रहत सैन सजनी गन नागरीदास पीजे रस सार ।।

[१५५] राग-कान्हरौ

छाजत आज छाम कटि छोभ ।
उपज्यौ अमित स्वाद अँग अँगनि पसर्‌यौ ललक लख गुनौ लोभ ।।
मैथुन मिथुन मथान दान रति वरखत सुखनि अनंगी खोभ ।
नागरीदास निकट निज हेत की कर वर निकर कियै तन थोभ ।।

[१५६] राग-केदारौ

रहि औंगी मोंगी री नाना नेह रचन दै ।
तब कौतुक देखियैगौ नैन भरि सेजढार ढरि खेल मचन दै ।।
लालन पालन भाँति भाँति के वर विहार अंग अंग खचन दै ।
नूपुर किंकिनी धुनि श्रवनन नागरीदास मन फूल सचन दै ।।

[१५७] राग-कान्हरौ

अरुझी सुरझत कैसे बैठी विमल लाल उर ऊपर ।
झनक झमक कटि किंकिनी नूपुर सुन मंगल धुनि छाई कुंज घर ।।
जैसे दामिनि घन पर चमकत छूटि टूटि गिरे भूषन अंवर ।
चमकत दसन अधर दृग कुंडल बैंनी फैली फूल प्रकास उरज वर ।।
लालन पालन बहुबिधि चुंवन स्वाद सद छकी मदंधी चौंप उर ।
रोम रोम सुख बरखत अति रस नदी बढ़ी केलि आनंद झर ।।
विरमावत[१] विरमत नहि प्यारी वर विहार विहरत नागरि अर[२] ।
नागरीदास श्रमजल कन पौंछत पिय चरननि लागि गहै ठौड़ी कर ।।

१- विश्राम देते हैं, २- आग्रह हठ पूर्वक ।

[१५८]

दोऊ पारस भारी अतिलड़ ।
नई निकोर किशोर जोर जुरी परी सुरत स्वादनि गड़ ।
वदन अमोदै बूड़ि उघारत तोरत परम सुदृढ़ निगमनि अड़ ।
नागरीदास निज दासी दिनहीं दिन निरखत रहै सहचरि भागनि बड़ ।

[१५९]

एकामेक तोरि तन मैंड़ें ।
मुख मधु पान सवाद गुमानी गरवीली डुल मन की उमैंड़ें[1] ।
हियें अनूप राग भाग निधि फवि पिय लटकि चाल पग ऐंड़ें बैंड़ें ।
रोम रोम हरखित अकुलाहट मरमनि भेदत उरज उलैंड़ें[2] ।
बगरी मंगल दशा न संभारत बहरावत✿ पति पाँय पलैंड़ें ।
महा मत्त निरधोप[3] निरंकुश गज न समाई छैंड़ी छैंड़ें ।
उपजै दाव उपाव कहौ सखि अब यौं कौन पार है पैंड़े ।
नागरीदास छल बल गरें लाई अधर दसन गहैं तमकि[4] चचैंड़ें[5] ।

[१६०]

उर में उरज वर उदौ किये ।
अति अनुराग समात न अन्तर उमगि कढ़े गहवरे हिये ।।
श्याम सुभग छतियाँ अनुगत ह्वै रूप विवस आदर सौं छिये ।
रति की गति कछु अकह अटपटी लीन अधीन सुदृष्टि दिये ।।
रस की बूड़[6] असूझ अबूझ है प्रेम मगन मादिक सौं पिये ।
नागरीदास गुन पलट कंठ लगि सँभरावत है मुखमधुहि लिये ।।

[१६१] राग-केदार

अद्भुत कौतुक नृत्य होत है ।
कुँवर किशोर रंग रचि माते उमड़त पानिप प्रेम पोत[7] है ।

१- उमंगें, २- उठाव, ३- निरस्त, ४- आवेश पूर्वक, ५- आलिङ्गन कि
६- डुबकी, ७- मोती । ✿ पाठान्तर—बिरमावत ।

कुंडल लोल[१] ललित नासा मणि झवि समूह मुख हास उदोत है ।
बिंब अधर श्याम दसनावलि जगमगात अति ललित सोत है ॥
झमकत हार उरज श्रीफल[२] विच लचक छाम कटि गति निगोत है ।
नागरीदास विलास अकह गति सौरभ सत सद मदनि✻भोतु[३]है ॥

[१६२]

सौरभ सार सुकुमार कलेवर अंग अंग रंग-रंग हिले वर ।
उमड़ी छवि फैली समूह सुवास झिले उर ॥
नव नव मन अहिलाद[४]स्वाद सदमद किंकिनि कंकन पग नेबर[५] ।
नागरीदास घन घ्रांन[६]घूम घट चले जात लच्छन तन तेवर[७] ॥

[१६३]

हो हो हो करि अब टकटोलैं, प्यारी के मद माते डोलैं ।
आलिंगन चुंबन परिरंभन चसक रसिक आनंद रस लोलैं ॥
कबहुँक जकि थकि रहत निरख मुख परिधान[८]फिर विगत निचोलैं ।
नागरीदास रसरासि बढ़ी उरलै बलाइ[९] बयार[१०]अंचल झकझोलैं ॥

[१६४]

अधरनि अधर मिलत अद्भुत रस फैलि परे रुव[११]पावक नांई ।
मैंन मई भई रोम रोम प्रति एते पर नव उकति[१२] उठाई ॥
रमित अमित गति बूड़ि उद्धरन पैरनि[१३]को इनही बनि आई ।
अवनि सुगसि सुंदर नाना विधि कितहूँ की कितहूँ अरुझाई ॥
कही न परत रति प्रीति मरस्पर जोई जोई करी सोई सोई भाई ।
जल अरु जल तरंग एकै हैं न्यारे न्यारे कहे न जाई ॥
कोक[१४]संगीत ताल जुत निर्तन गान सुतान धरी मन भाई ।
भूरि भाग अनुराग नागरीदास व्यास सुवन बानी में पाई ॥

१- चंचल, २- नारियल, ३- बहुत, ४- आह्लाद, ५- नूपुर, ६- नासिका, ७- चितवन, ८- धारण कराते हैं, ९- वलैया, १०- पवन, ११- रुई १२- उक्ति, युक्ति, १३- तैरना, १४- काम । ✻ पाठान्तर—मननि ।

[१६५]

जब तें जावक[१] चरन दयौ।
तन मन चित वित तहीं कौ जू भयौ॥
हियरा हिलग फिरत संग लाग्यौ जियरा ललक रह्यौ।
नागरीदास तन मन धन जीवन मंगल यह बिठयौ[२]॥

[१६६]

भोर भवन में मंगल साजु।
कुशल कुँवर कमनीय केलि बलि कोलाहल कल कौतुक आजु।
नूपुर कंकन किंकिन की धुनि सुनि मिलि झिलि वर बाजु।
अधर पान आलिंगन आशिष नागरीदास बलि सुखद समाजु॥

[१६७]

सुरत श्रमित राजत कोमल तन।
पिय उर ऊपर लसत लाड़िली अधर अदन[३] जुरैं उभै वदन॥
निसि के चतुर जाम जागर करि वर विहार बढ़े ललित मन।
ईषद हास चारु चल भृकुटी आनंद उमगि हियें मृदु वचन॥
नूपुर किंकिनी कल धुनि उपजत सूचत सुपनें केलि कला गन।
यह सुख सादर सखी निहारत नागरीदास सर्वस जीवन धन॥

[१६८]

दोऊ कुँवर रमीले आजु नीके कैं पाए।
सुधारत विथुरी अलकि चमकि अंग अंग दुराए॥
हम साँझ ही तें दीपक साज्यौ इक टक जाम गवाए।
उघरि उभै अब देखे जबतैं नैन लगाए॥
अब कहा गोवहु[४] हमतें अरगजा छिरकि जगाए।
सबै विनोद मोद मद आछैं कैऽव दिखाए॥

१- महावर, अलता, २- बैठा लिया, ३- अधर पान, ४- छुपाते हो।

होहु उजागर नागर हँसि कहा वदन दुराए।
चरचौजौ यहि ओर चैल[१] कौनें पहिराए॥
अब पान कपूर अरु मिश्री लैंहैंगी मन भाए।
कै पिय देहु लड़ैती औरऽव नहीं उपाए॥
अपनौ अपनौ फगुवा आकें अब ही मँगाए।
वारी प्यारी तव हम उठि हैं सबकौ भलौ मनाए॥
तब वृषभानु कुँवरि जू मोहन लैंहि छिड़ाए।
गहने धरि है ललिता जी जो तवहि मिलाए॥
ऐसें झूमि रहे कोऽव इहाँ ते जाए।
चित वित इतही अटक्यो मन रह्यौ लोभ लुभाए॥
सबकौ सर्वस चोरत मंद मृदुल मुसिक्याए।
आई हौं कछु चाहन हमहूँ गईं बिकाए॥
हास हुलास विलासहिं देखत कौन अघाए।
राज सुरत कौ समाज साज उर रहे समाए॥
दिन दिन ऐसें ही विलसौ हरखित है गुन गाए।
वरखत सब सुख✪ अँखियनि लीला वढ़ाए॥
चिरु चिरु नव यह जोरी ऐसे ही समुदाए।
नागरीदास निछावर पल पल लगौऽव बलाए॥

राग-विहागरो

[१६९]

अँखियनि में सुकुँवारी गड़ी है।
तन मन रोम रोम गुन उमड़त भाँति भाँति सुख लाड़ लड़ी है॥
जहाँ तहाँ पूरन गुन पूरित तदाकारता रूप अड़ी है।
नेह नौहरी कुँवरि केलिनिधि नागरीदास चित चाइ चढ़ी है॥

१- वस्त्र। ✪ पाठान्तर—सनमुख।

[१७०]

सब निसि रहे सुरत रन साजैं ।
उमगि उभै तन चाइ चढे मन भूषन वर नीसाननि बाजैं।
अवहीं निपट भोर पल लागे श्रमित सुलस[1] सुख सेज समाजैं।
नागरीदासि वलि देखि ललित छवि अधर दसन गहे वदनविराजैं।

[१७१] राग-सार

अबहीं हिये में उरज उठे हुलसि ।
स्याम सुभग सुकुँवार कलेवर तदाकारता तन मन रही बसि।
अभिअंतर की हिलग प्रगट भई सँभरावन कौं अव न काहू कौ बस
नागरीदास बलि तुमही पै भले सधे
छतियाँ लाय लीजे पति भुज बीच कसि।

[१७२] राग-मला

स्याम सुभग तन पीत वसन छवि कुँवरि गहल रंग कसूँभो सारी
लहँगा पीत रुरत हारावलि चौकी कुचनि बिच कंचुको कारी।
हँसि हँसि बन रितु संपति देखत लसत अंक[2] अंश[3] भुज सुकुँवारी
दोऊ मुदित मलार निबाजत नागरीदास दरस दुति वारी।

[१७३]

यहई कुँवरि जू कौ कल खेल ।
वर बरसानै खोरि सांकरी सखियन संग सब सुखनि सुहेल[4] ॥
सहचरि वेष धरैं मन मोहन ललित लालन कौ छल मेल।
लड़ावन बहु विधि बाढ़ी रसनिधि नागरीदास आनंद रस झेल॥

[१७४]

उरज की जोट पै कहुँ न जान ।
दृष्टि परत ही मार लेत हैं नहीं साहस कौ बान[5] ॥

१- सुशोभित, मनोहारी, २- गोद, ३- कन्धा, ४- मंगल गीत, स्तुति
५-त्रानिक, अवसर ।

कुच जुग तक[1] धकधकी हियें फुरें न उक्ति सयान ।
नागरीदास प्रानपति※ बसि ह्वै पकरचौ कान ।।

[१७५]

रति अलेल[2] जोवन मद झेलि ।
लेत समाइ रोम रोमनि में रस लंपटी पीय बन बेलि[3] ।।
रस सागर में रहसि[4] रसिकनी मैंन[5] तरंग मीन इव खेलि ।
खुलित वसन बल अंग-अंग चल उठत अमित गति पति कल केलि ।।
मुरत न मनकी अनी[6] रैनदिन उमगि रसन[7] पिय मुख मधि मेलि ।
कहत न बनै सुरत सुख वैभव नागरीदास निरखत बनै हेलि ।।

[१७६]

नवल छबीली सुंदरी मम मन कौ मंगल रूप जू ।
चितवत ही चित वित हरचौ बानिक सुखद अनूप जू ।।टेक।।
सीस फूल सिर गूँथि कै सुभग श्रीमंत[8] सँवारी जू ।
बेंदा भाल जराइ कौ मृगमद आड़[9] अन्यारी[10] जू ।।
खुटिला[11] ताटंक[12] श्रुति लसैं नैन ढरारे[13] लोल जू ।
बैनी सुगंधनि सगबगो[14] पहिरें नील निचोल जू ।।
श्याम दसन चौका[15] दिपै मुख मधु ईषद हास जू ।
झलकत मुक्ता नाक कौ भृकुटिनु भेद विलास जू ।।
चिबुक चखौड़ा[16] जगमगै कंठ कंठश्री[17] पोति जू ।
मधि नाइक मोतिन लरैं फैल रही जग जोति जू ।।
कंचुकी कँसूभी खयनि[18] खुभी[19] उरज अन्यारे और जू ।

१- अवलोकन कर, २- असीम, अपार, ३- श्रीप्रिया, ४- एकान्त, ५- काम, ६- नोंक, सेवा, ७- रसना, जिह्वा, ८- माँग, ९- आड़ा तिलक, १०- अनियारी, नोंकदार, ११- कर्णफूल, १२-कुंडल, १३- चलायमान, झुकेझुके, १४- भीगी हुई, १५- सामने के दर्शनीय चार दाँत, १६- डिठौना, १७- कंठाभरण, १८- वाज, १९- गसी । ※पाठान्तर—प्रकास पानिप निधि ।

तिनके मधि चौकी[१] हियें भेदत जोवन जोर जू ।।
रतननि खचित विजाइढे[२] ललित भुजा मृद गोल जू ।
डंडा[३] ढरारे पहुँचियाँ चारि चारि चुरी निरमोल जू ।।
अँगुरिनु मुदरी दमकहीं चलती बाहु ढराइ जू ।
मन लंपट संग हो फिरै तन निरखत होय सिराय जू ।।
त्रिवली नाभि गंभीर है कृश कटि किंकनी जाल जू ।
प्रगटित है मधु माधुरी प्रान प्रिया वर बाल जू ।।
लहँगा लाल नितंबिनी करभ[४] कदली उनिहार जू ।
उपमा जघननि देस कौं रहौं विचारि विचारि जू ।।
चौ पहलू चूरा बने नग रँग रँग रतन जराइ जू ।
भरैं केयूर[५] लसैं इकसरे चितवित रहे समाइ जू ।।
नील मनिन में घूँघरी जावक जुत पद चारु जू ।
गौर हृदै में रसि रहे यहै उपासन सारु जू ।।
सुनि सुनि घैरा[६] आपनौ लीनें छतियाँ लगाइ जू ।
अधर पीयूष पिवाइ कैं मिली मुदित सुख पाइ जू ।।
रस सज्जा नव कुंज में वरखत हरखि विनोद जू ।
आलिंगन अंग अंग सने भीज रहे दुहुँ कोद जू ।।
तान गान मिलि सुर छये भयौ उभय जिय चाव जू ।
मते राज अनुराग में कल रसनावलि राव जू ।।
सहज समाज सुरंग सने सुरत विहार विलासी जू ।
पिय प्यारी वर केलि पर बलि बलि नागरीदासी जू ।।

[१७७]

मेरी ललित लड़ैती उर रमी तन में बरी[७] गुन रहे पूरि ।
रूप रसीली हिय लगी जिय की री सखी जीवन मूरि ।।टेक।

१- गले की चौकोर लटकन, २- अंगद, बाजूबन्द, ३- कड़े, ४- हाथी का बच्चा, ५- आभूषण, ६- उपालम्भ, शिकायत, ७- श्रेष्ठ ।

आलिंगननि सेज लसैं हसित वरी सलौने बोल ।
अधर सुधा पानैं करैं मैंन मते अँग अंग सलोल ।।
चुंबन चौंप चिहुँट खुभे भाँति भाँति के मुख मधु स्वाद ।
विवि वरराज कंठनि गसे झूमत गर्व भरि प्रेम प्रमाद ।।
दरस परस रस अपुन में नेह भीजि देह सिहात ।
नई रति सुख गटकावत अति नव नव भावनि रंग रहात ।।
गौर स्याम अवअव[१] सने कोमल कलेवर नगनि जराइ ।
ललक लपेट परस्पर रंगनि कौतुक राज केलि कौ चाइ ।।
अमित भेद कढ़ि कढ़ि परैं बाढ़त पलु पलु विमल विहार ।
खेल सुहेल चसक विधे क्रीड़ा कोविद कुँवर उदार ।।
सीतल सीकर[२] श्रम हरैं सौरभ सचे[३] समीर ।
याही तें आनन्द अवधि नहीं कल कलिंद तनया[४] कौ तीर ।।
जमुना वन हित वितु सदा ललना लाल विलास भंडार ।
दीरघ लोभ दुहूँ दिसि परे उदित उछाहन मोद अपार ।।
याही सार ढार संतत रहौ मंगल वृन्दावन घन वास ।
नागरीदास निकुंज तलप की निकट प्रवीन बढ़ी रहौ आस ।।

[१७८] राग-गौरी

पिय जिय की जीवन मोहनी सर्वस जीवन प्रान जू ।
दरस परस पद लालना सकल सुखनि निधान जू ।।
करत रहैं परछाया जैसैं फनि[५] मनि संग जू ।
मौन[६] वृत्ति तन की भई झूलत छवि जलधि तरंग जू ।।
रचना रुचिर जावक[७] रचैं मनि घुंघरू पहिराइ जू ।
नखनि चंद्रिका चरचि कैं राखत कंठ लगाइ जू ।।

१- अवयव, अंग अंग, २- जलकण, ३- युक्त, ४- यमुना, ५- सर्प, ६- [illegible]।
७- अलता, महावर ।

कबहुँ चूँमि लोचन दियें कबहुँ परसत भाल जू।
जानि विवस अनुराग में अंक भरे वर बाल जू।।
देत अधर मधु माधुरी प्रमुदित पुलकित देह जू।
आलिंगन अँग अँग सने भीजि रहे दोऊ नेंह जू।।
बाढ़ी केलि सुहावनी ललित कलित कल कुंज जू।
नव नव कोक[1] कलनि भरे बरखत आनँद पुंज जू।।
हरखित रति भई भाँवती राज विलास सुठान जू।
कुँवर मनोरथ दाइनी उदित उदार सु जान जू।।
नूपुर कलरव किंकिनी वलय कंकन झनकार जू।
मृदु मंगल धुनि मननि बढ़ै चारु चल अंग विहार जू।।
चपल दृगनि अलकें रुरैं कवरी छूटे फूल जू।
श्याम दसन हँसी कमोदिन फूले आनन्द मूल जू।।
कुंडल लोल कपोलनी भृकुटि गरव इतरात जू।
अरुन अधर पूरन सुधा वैभव मुख न समात जू।।
वैंदा धसि नासा झुमैं मुक्ता मनि मद ढोर जू।
मृग मद तिलक विशाल विच नैंन पैंन अंचल छोर जू।।
साहस सुधि न सम्हार बलु रहे न चितवत भाँति जू।
कंत ललक बढ़ी लख गुनी चिबुक चखोड़ा कांति जू।।
गलित[2] भयौ पट सीस तैं दरकि[3] कंचुकी बंद टूट जू।
अमित लब्ध लोभी पति पर्‌यौ लेत अमोलक लूट जू।।
उर प्रकाश जगमग रह्यो रहे घूमत झूमत हार जू।
प्रवल चौंप अहुटत[4] नहीं लचकत कृश कटि भार जू।।
सहज समूह सुलभ करे सबै गुपति गुन साज जू।
सुरत स्वच्छ सुधानिधे अतिरस विवस-समाज जू।।

१- काम, २- सरक गया, ३- फट कर, ४- हटना, कम होना।

स्वेद जुक्त मुख तन भये सखि अंचल ढोरत वायु जू।
राखि कुँवरि लै अंक पर विहरावत चित चाव जू ।।
सींचत श्रमित जमुना समै सीतल सीकर[१] वारि जू।
सकल सुगन्ध समीर लै गुदरै[२] निकट सुधार जू ।।
विविध विनोद निसा गई कीरति विमल बढ़ाइ जू।
ऐसे खेल दिन दिन करौ नागरीदास बलि जाइ जू ।।

[१७९]

आज नैनन भरि देखिये नव लाड़िली,
मेरी नव नव नेह हुलास । नव लाड़िली ।।टेक।।
कुसुम सुरंग सज्जा रची नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी सुभग समूह सुवास ।।१।।
ललित लता ग्रह में लसैं नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी तलप सलौने खेल।
हँसत भुजा कंठनि धरैं नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी दरस परसि रस मेलि ।।२।।
आलिंगन चुंवन करै नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी मत्त अधर मधु पान।
बूड़ि बूड़ि सुख में उठैं नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी नई रति उक्ति उठान ।।३।।
कौतुक अवधि कुँवर दोऊ नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी कोलाहल बढ़ै चाउ।
गौर स्याम तन छवि छटा नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी कहत न बनै बनाउ ।।४।।

१- छोटे छोटे जल कण, फुहारें, २- प्रवाहित हो रही हैं, प्रस्तुत कर रहीं हैं।

मंगल मंजुल कुँज में नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी मोहन धुनि मंजीर[१] ।
सुनत चाइ हित चित चढ़ै नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी गर्भित गुन गम्भीर ॥५॥
रीझ भीझ अंग अंग सने नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी भिदे हियनि मधि भेद ।
पियत मुदित मुख माधुरी नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी पल पल प्रेम उमेद ॥६॥
ललकबलक कलकेलि की नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी मैनमते मृदु बैन ।
बिवि[२] आनन अलकैं रुरैं नव लाड़िलो,
लाड़िलो मेरो दीरघ द्दग चलैं सैंन ॥७॥
कुण्डल लोल कपोलनी नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी श्रमित वदन मृदु जोति ।
चरच चतुर चौंपैं चढ़ैं नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी नौखी रुचि अति होत ॥८॥
श्रीफल कुच उच ऊपरैं नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी झलकत हार हमेल ।
सनमुख पिय लालच लगे नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी उदित उरज उठेल ॥९॥
रूप अलेल अलेलनी नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी रोम रोम रस पूरि ।
कोमल कोक कलनि भरे नव लाड़िलो,
लाड़िली मेरी कुँवरि संजीवनि मूरि ॥१०॥

१- नूपुर, २- युगल ।

विविध विनोद विमल परे नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी अव अव अमित सवाद ।
गरव गरूर गहेलरे नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी मैंमद[१] मोद प्रमाद[२] ॥११॥
क्रीडा कोविद किलकहीं नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी झलकत पानिप देह ।
सदि ठाठनि ठेलैं ठिलैं नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी अतिहि अगाध सनेह ॥१२॥
सीत मंद मारुत बहै नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी सौरभ अति भरि चाव ।
मोर मराल बधावनें नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी नचत सचत लै भाव ॥१३॥
खग कुल मिलि चहचरि[३] करैं नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी चातिक पिक जस गान ।
अलिगन गुंजत मिल छए नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी कीरति कीर[४] बखान ॥१४॥
जमुना जल सींकर बहै नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी तोषत पोष[५] विहार ।
सचल सभ्रम नहिं परसहीं नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी महल टहल निस्तार[६] ॥१५॥
समै समै की सम्पदा नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी तरनिसुता[७] के काज ।

१- उन्मत्त, २- भ्रांति, आलस्य, ३- चहचहार, ४- तोता, ५- तुष्ट पुष्ट कर रही हैं, ६- छुटकारा, ७- यमुना ।

कमल पराग वरखैं हरखैं नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी रोचक रुचि सजि साज ॥१६॥
इहि समाज संतत रहौ नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी दम्पति प्रान अधार ।
नागरीदासी वारनै नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी ढिग लागी ढंगढार ॥१७॥

[१८०]

दीपक आज सफल भयौ नैंननि निरखि सहेलि ।
विलसत विमल पीय हियें पाई है अलबेलि ॥
मद मंथर गति मैंमत गुन गन गावत गर्व गहेलि ।
गौर बाहु पति ग्रीवा सुन्दर निसि बन खेल ॥
श्याम तमाल लाल हियें लसत कनक की बेलि ।
नूपुर कंकन वलय किंकिनि धुनि सुनि श्रुति मंगल हेलि ॥
महा माधुरी संपति अँग अँग सुभग सुहेलि ।
यह अद्भुत कौतुक में सब सोभा पग पेलि ॥
अव अव लोल कपोलनि आनन्द सिंधु सुख झेलि ।
मन अहलाद प्रसादी उर उरजनि ठेला ठेलि ॥
प्रेम प्रचंड पराक्रम प्रीति प्रतीत उथेल[१] ।
कोविद कुँवरि कुँवर की छतियाँ छिन छवि सेलि[२] ॥
विपिरति मति साधैं क्रीडत भीर गम्भीर अकेलि ।
नागरीदास निकट निज साची[३] सखी सुकेलि ॥

[१८१]

वृन्दाविपिन सुहावनौ बहु विधि फूल ।
रचना सहज सँवारी श्रीजमुना के कूल ॥

१- भेद की वात को गुप्त रखने वाली, २- बरछी, ३- एकत्रित की ।

नव नव ललित लता द्रुम नाना रंग।
अपनी अपनी बानी बोलत विविध विहंग ॥
अटवी[1] कुसुम बिछाए झूलत गुच्छ।
त्रिविध पवन सुखदायक बहत दिन सुच्छ ॥
चतुर भाँति के विगसित जल थल कंज।
मत्त मुदित भृङ्ग गन मोद मन रंज ॥
कोकिल कल आलापति नाचत मोर।
रीझ गहत जनु डोलत चरन चकोर ॥
मान देत मनौ हंस सारस चहुँ कोद।
ऐसी अमित मंडली विविध विनोद ॥
देखौ कुँवरि कानन छवि तुम्हरे हेत।
प्रात बधौ हौ पीय सौं कुंज संकेत ॥
सुरत करौ हौं वारी चातक लाल।
जाँचत तुव पद पदवी रसिक रसाल ॥
सुहथ सँवारी सेज सुगन्धनि पूरि।
मारग जोवत कुँवर सजीवन मूरि ॥
रसना रट घट रूप जानि यह रीति।
उर लगाइ अधर मधु दै करि प्रीति ॥
सुनत सखी के बैन नैन जल रुँधि गये।
कछु न फुरत मुख बात बाहु ग्रीवां दये ॥
सैंननि माँझ जनायौ बेगि मिलाउ।
अँखियनि कल पिय प्यारौ तुरत दिखाउ ॥

१- वन।

[१८२] राग-कान्हरो

उपधि[1] देत मधुपान मुख में धरि।
आलिंगन अंग अंग मिलावत दावत उरसौं उमगि उरज वर॥
रूप विवस भरि स्वाद स्वादिले बदलि दसा छवि लसत हिये पर।
उमगि परत विवि चोख[2] चसक रस नागरीदास केलि कौतुक कर॥

[१८३]

श्रीहिताष्टक

रसिक हरिवंश सर्वंश श्रीराधिका,
राधिका सर्वंश हरिवंश वंशी।
हरिवंश गुरु शिष्य हरिवंश प्रेमावलि,
हरिवंश धन धर्म राधा प्रशंसी॥
राधिका देह हरिवंश मन राधिका,
राधिका हरिवंश मम श्रुति वतंशी।
रसिक जन मननि आभरण हरिवंश हित,
हरिवंश आभरण कल हंस हंसी॥१॥
रसिक हरिवंश रस लाड़िली लाल बस,
लसत वन अंग इक रंग रंगी।
श्रीराधिका वल्लभो वल्लरी प्राण धन,
सुधन निरखत रहों सुरत रंगी॥
ललित सखि कुञ्ज सुख पुञ्ज वरषत युगल,
ललित मन एक तन चार गौरंगी।
रूप लावण्य अनुराग अँग माधुरी,
केलि कल कलित तरलित तरंगी॥२॥

१- छल, २- तीव्रता, वेग।

रसिक हरिवंश मन लाड़िली लाल तन,
ललित अनुराग वपु करनि लीने।
बाम भुज लाल दक्षिण भुजा लाड़िली,
ललित गति चलत मल्हकत प्रवीने ।।
रसद वृन्दाविपिन मोद मकरन्द सद,
माधुरी प्याय पीवत नवीने।
युग युगल इक रंग चतुरंग पुलिन स्थली,
यमुन कल कुंजरति रंग भीने ।।३।।
रसिक हरिवंश मन एक तन चार हौं तो,
वेणु वाणी विमल मोल लीनी।
बाँह छद्वै छाँह करि छद्वै पद रज सिरधरि,
अँखियाँ छद्वै छकी छवि रहों अधीनी ।।
अल्प पल ओट सत कल्प बीतत जिन्हैं,
दिव्य कैशोर हृदि दृष्टि दीनी।
नागरी नवरंग निकुञ्ज हित कल्पतरु,
तीर छवि भीर भृङ्गिनि नवीनी ।।४।।
रूप हद लाड़िलो लाल लावण्य हद,
नेह हद हरिवंश विपिन आसक्ति हद।
वैसंधि इक वर्ण ऐन वर्ण वरनत वनै न,
तरुण शैशव विभौ विलसैं सौंदर्य सद ।।
नैनामृत मंजरी मृदुल अलिराज युग,
युगल एक रँग रँगे पुलिन कालिंद नद।
नागरी नवरंग निकुञ्ज हित कल्पतरु,
पत्र फल फूल सर्वांग गौरांग पद ।।५।।
युगल रस सिंधु सेवैं पुलिन रस सिंधु कों,
नलिन हरिवंश आनन्द लहरी।

ललित वाणी विमल वार अरु पार नाहिं,
थाह कहूँ नाहिं अति निपट गहरी ॥
अनन्य जन मीन आधीन ह्वै अनुसरैं,
प्रेम अंजन दियें दृष्टि ठहरी।
नागरी नवरंग निकुञ्ज हित कल्पतरु,
पलक पल ललक परी रूप दहरी ॥६॥
रसिक हरिवंश वर विमल कल कल्पतरु,
प्रेम फल कलित अनुराग वाणी ।
केलि कल कलित अति ललित आमोद वन,
श्रवन पुट पिवत नवरंग रानी ॥
रसिक मंडल विमल झूमिका झूमि रहे,
श्रीराधिका वल्लभ अमान दानी ।
परमहंस अधार रस सार धारा श्रवत,
भजन एकान्त जिन मन समानी ॥७॥
रसिक रस सरस सर हंस हरिवंश जू,
केलि मुक्ता चुगत मन नैन दीने ।
प्राणवि के प्राण मेरे प्राण जीवन सुधन,
दृष्टि प्रति दृष्टि आलिंगन नवीने ॥
सकल सुख धाम विश्राम वन विलसि हंस,
यमुन कल कूल अँग अरगजन भीने ।
दिव्य आभरण वसन ललित अंग माधुरी,
प्रेम पर्यंक सुअंकनि में लीने ॥८॥

[१८४]

ये कलिंद कुँवरि वर कुशल किशोर करुना कर ।
ललना लाल विलास संपदा सौरभ सीकर श्रम समूह हर ॥

मेल सुहेल खेल बहु भाँतिन केलि बेलि पोखन सब सुखकर।
हुलसि हुलासनि ललक लालची प्यारी प्रिया विहार सार सर ॥
नव नव लाड़ चाड़ चतुराई उमड़त विसद विनोद विपिन भर।
नागरीदास निज नेह देह सन क्रीड़त पुलिन नलिन सज्या पर ॥

[१८५]

उपजी चौंप अपार सार रति नाइक उतन[१] दाबि बल लीनी।
बैठी सुभग सिंहासन आसन अधर अदन मधु मादक पीनी ॥
मदन मान मलि गरव किंकिनी डिंडिम[२] नदित जयति कटि छीनी।
फैल छैल मरम भेदनि रस जीत कीर्ति पति गति सब कीनी ॥
कोक संगीत मीत मद पोखत राजत राज साज रंग भीनी।
नागरीदास वैभव विलास रस विलसत सकल कला परवीनी ॥

[१८६] राग-विहागरौ

वर विहार चित चाइ चढ़े।
प्रमुदित फूल न समात परस्पर परिरंभन चुम्बननि बढ़े ॥
फैलि परे दृग अब छवि खग मानौ बाज राज जुग कुलह[३]कढ़े।
नागरीदास विवि प्रेम परावधि निज सजनी सुख सुजस रढ़े[४] ॥

[१८७]

श्रीकीरति नृप वृषभानु की चैंटुली[५]।
लाड़ गहेल लली अलबेलो विलसत पिय हिय घैंटुली[६] ॥
हँसि हँसि ठुरकि ठुरकि लगै छतियाँ परिरंभन पति प्रेम समैंटुली[७]।
फैलि फूल मद मोद बढ़ावत नागरीदास दारिद्र मैंटुली[८] ॥

१- उस ओर, २- डमरू, ३-शिकारी पक्षी का सिर ढकने की टोपी, ४-रटती-हैं, ५- लाड़िली, ६- कंठ लगने वाली, ७- समेटने वाली, ८- मिटाने वाली

[१८८]

झलमल झलकै झलक सौं।
पूरन पानिप प्रेम प्रकासिक अव अव नचैं मद मलक सौं॥
अलक लूम लियैं लवधि[१] लाल उर पलक न लागै पलक सौं।
नागरीदास दुर्लभ दुलरावत आनँद आवेसी ललक सौं॥

[१८९]

आज सखि कौतिक झूमक झूमत।
कंकन किंकिनी वलय घूँघरू बाजत कुंज सदन घन घूमत॥
अलि पिक मोर मराल सहित सखिगन कोलाहल में महि[२] खूमत[३]।
पानिप प्रेम प्रवीन लाड़िली लै बलाइ मोहन मुख चूमत॥
हँसत दसन दुति चौंधि मगन मन दै अधर पान आलिंगन टूमत[४]।
केलि कुशल निधि नागरीदास बलि नौखौ अलिक[५]अलोलकु[६]रूमत[७]।

[१९०]

किसोरी कहत न बनै सतभाव।
प्यावत अधर सुधा सुख कंतहि वर बिहार मन चाव॥
झूमत अलक हार उर झमकत लचकत कटि किंकिनि राव।
नागरीदास सेज रस भींजे लसत अंग रंग ललित बनाव॥

[१९१]

सजे कुँवर सज्या पग धारे बाजत भूषन कल रत्न तूर[८]।
सुरत सूर तन वीर चढ़यौ धीर उमगै मननि प्रेम परिपूरि॥
जोर रहे उठि परे लरे रंग रति संग्राम बानैंत[९] सुसूर।
नख प्रहार रद[१०]घात सहत धर[११]नागरीदास मुख महा गरूर[१२]॥

१- प्राप्ति, २- भूमि, ३- खूंदना, ४- उकसाना, ५- ललाट, कपोल, ७- अचं-चल, स्थिर, ६- झूमना, ८- तुरही, ९- योद्धा, १०- दाँत ११- धारण करने वाला, १२- अभिमान।

[१६२] राग-चर्चरी

कलिंद नंदिनी सुतीर विलसत नव कुँवर
धीर नंद नँदन मुदित श्रीवृषभानु नंदिनी ।
उभै कंठ भुजनि धरैं अधर सुधा पान करैं
गौर स्याम अंग मानौं जलद चंदिनी ॥
कोमल जनु कनक बेलि राजतनव रँगनि❀ केलि
गात पिय के लपटि रही आनँद कंदिनी ।
सरस सुरत सुखनि भरैं अधर सुधा पान करैं
नागरीदास न्यौछावर रसिक वंदनी ॥

[१६३]

गौर स्याम अव अव प्रतिबिंवित सुरत सुखनि भर करत कलोल ।
वर विलास रस हुलसि छूटि कच उरझी चंपकली डोल ॥
आधे सीस फूल अटकी छवि अंचल चल ताटंकनि झलक कपोल ।
भृकुटिन पर बैंदा धसि झूमत रुचिर जलज मनि नासा लोल ॥
हँसि हँसि अधर सुधा पी प्यावत अलवेलो काम केलि कलोल ।
नागरीदास वलि विचित्र वानक पर इत गंभीर धुनि उत मृदु बोल ॥

[१६४]

पैने नैना चलत झपकत पलक तऊ खलत[१] ।
चपल कुंडल विलुलित[२]कच आनन पर हलत ॥
चुँबन परिरंभन भर ललित लाड़ अंग लुलित ।
नागरीदास अधर पान प्रिय प्रान पलत[३] ॥

राग-भैंरों

[१६५]

चलत सुदेस[४] लटक मदमाती ।
गरव गँभीर गहिल गुन गन गति छैल फैल छवि छई पति छाती ॥

❀ पाठान्तर—नवरंग नवेलि । १- खटकना, २- झूमते हुये, ३- पलते हैं, ४- सुन्दर ।

लोचन घूरन[१] मद रस पूरन पानिप प्रकासित प्रीति प्रभातो।
नागरीदास भोर कौतिक अव अव सुख लूटें सखी न अघातो॥

[१९६]

जीवत परस्पर रूप रहचटें[२] ।
विवि वसन भूषन जुत अव अव छवि परस सरस सेज समाज ठटें[३] ॥
भोग संजोगी भोगी विलसत प्रमुदित पुलक अनुराग अटें[४]।
चुंबन चख[५]मुख मधु पी नागरीदास लोभी लाल ललक न घटें॥

[१९७]

मस्त घ्रन घ्रान चुम्बन दान मधुपान सुहृद सनमान।
प्रवल प्रकास सुवास समूरि श्रवै द्रवत महा मकरन्द अमान।
रूप अनूप अनौखे कल कढ़त बाढ़त चौंप शिरोमनि जान।
पोष संतोष परस्पर पूरन ठान वान उपजत गुन गान।
मोद मुदित प्रवल प्यार ठौर ठौर पानिप मंगल निधान।
अव अव रमि तन अमित माधुरी नागरीदास विलसत पिय प्रान॥

[१९८]

बेलि बिटप[६] तरु[७] किसलय[८] सैंन[९] ।
अद्भुत रीति समीति समागम विलसै सुघर सुख सुरत चैन॥
वर विहार लसें ईषद वदन गरव मते मृदु मैंन बैन।
नौखी चोखी खेल मेल निज निरखत नागरीदास सफल करि नैन॥

[१९९]

मोहि काज याही एक जीय सौं ।
सर्वसु अर्पि निपट मन अटक्यौ प्रान भाँवती प्रीय सौं ॥

१- टकटकी, २- चसके में, ३- सजाते हैं, ४- पूरित हो रहे हैं, ५- नेत्र,
६- झाड़ी, ७- वृक्ष, ८- कोमल पत्ते, ९- शैया ।

मर्म बिथा मम उर की सजनी गुदरि[1] चतुर वर तीय सौं।
सुनत सजल लोचन नागरीदास उमगि लगावत हीय सौं ॥

[२००]

लाड़ हठील हठ आधी बतियाँ।
देखत ही बनै कहत नहि आवै अनहोते अद्‌भुत सुख छतियाँ ॥
प्यार प्रहार पराक्रम परिरंभन गर्बीलो उपजत गुन घतियाँ।
नागरीदास प्यार की परावधि महा मनोहर मैन मद मतियाँ ॥

[२०१]

अधर मधु माते रे मतवारे।
प्रान प्रबीन परम रस लंपट निमिष होत नहिं न्यारे ॥
विथकित नाहिं विवस रस अति रति पल पल पी निसि दिन नहि हारे।
नागरीदास चित चाइ चढ़ि रहे स्वाद रमैं उतरत न उतारे।

[२०२] राग-सारंग

सुभग बहत रुचि[2] सीतल पवन।
पुलिन नलिन मकरंदी बहुरंग निकट प्रवाह निकुंज भवन ॥
झकोरत लहर अंबुकन बरसत सौरभ मारुत सुख श्रमन दवन।
नागरीदास विलास पोखियत फूल परस्पर लाड़िली रवन ॥

[२०३]

सुघर सिंगारनि कौ यह खैवौ।
मुख मधु पान चुँबन के बिच बिच सुधा सौरभी रीझ अचैवौ ॥
वदन मिठास और ठौर ठौर सुभग सवादु सदु मदु अरझैवौ।
सदा सतृष्ण सरस ये लोभी नागरीदास आतुर[3] अकुलैवौ ॥

[२०४]

परस्पर मुदित समात उरनि में।
अति आसक्त आलिंगन चुंबन ललक[4] बिकाने री मदन ढुरनि में ॥

१- कहाँ, प्रस्तुत करते, २- सुखदाई, ३- अधीर, ४- आसक्ति।

हास विलास हुलास मते मन अगनित नव नव भेद जुरनि में।
नागरीदास राग रंग कौतिक नूपुर किंकिनी बलय सुरनि में॥

[२०५]   राग-गौरी

नागरि निर्तत केलि सुधंगी[१]
पिय के सुभग अवनि[२] आलिंगत अति हरखत गुन गननि अनंगी॥
चुम्बन करत पुलकि परिरंभन लटकत मटक भ्रकुटि-भ्रू भंगी।
अभिअन्तर रस उमड़ गात दुति रति रस बरखत उरज उतंगी॥
छाजत छैल कोक विद्या वर फरकत सुघर गरव अँग अंगी।
नव नव उकति गतिन विलसत बलि नागरीदास नेह नवरंगी॥

[२०६]   राग-अड़ानो

उनए नये घन उदमदे।
अति मन भावन सजल सुहावन उमड़ि उमड़ि अहलाद लदे॥
पिक पपीहा गान केकि कल नचैं ठौर ठौर भरि प्रेम प्रमुदे।
नागरीदास वरखा विलास सुख दृग चकोर मुख चातिक नदे[३]॥

[२०७]

दोऊ पावस वसंत भये रहैं।
विच विच फूल विच विच वरखा प्रमूदित
पुलकि रति रंग छये रहैं॥
सौरभ समीर समह स्वास तन झपक झकोर झर दाउ[४] दये रहैं।
हास हुलास विलास प्रकासी सरद निसा
कोटि उदौ पानिप परे रहैं❀॥
चुंवन परिरंभन परस्पर अति सादर दरसन मान लये रहैं।
नागरीदास संपदादि समागम औरौ रितु रति बीज बये रहैं॥

१- अच्छा ढंग, २- अङ्गों को, ३- शब्द कर रहे हैं, ४- दाव।
❀ पाठान्तर—ये रहैं।

[२०८]

तेरे वदन चटक की मटक मत्यौ प्रेम प्यारौ ।
भाँति अनौखी अनूप दरस सुख रूप गरव गुन गारौ ।।
यह गोरौ सुकुँवार कलेवर प्रिय हिय जिय आँखनि कौ तारौ ।
नागरीदास बलि नेह निरन्तर कुच बिच राखि सम्हारौ ।।

[२०९]

ललित विलास निपट दोऊ भोर ।
उदित उजागर पानिप अव अव दरस परस रति रसनि अमोर[१]।।
गरव गंभीर धीर लगे लाहक[२] सौरभ स्वाद श्रवं तननि झकोर ।
ठौर ठौर टक टोलति नागरीदास बाढ़त प्रबल काम कल रोर[३] ।।

[२१०]

भाँति भाँति छवि सौरभ भभक ।
पान करति नित प्रति लोभी पिय बाढ़ी ललक लभक[४] ।।
मोद मुदित लै मकरंदी मधु चौंप चिहुठ चख चसक चभक[५] ।
विमल परे मन मैंमत नागरीदास अनुराग खभक[६] ।।

राग-विहागरौ

[२११]

पियकी प्रीति समझि सयानी री ।
अद्भुत रूप अनूप अनौखौ लगि हिय अकथ कहानी री ।।
सुभग सुसील नेह निधि देखत तन मन मुदित गुभानी री ।
नागरीदास अप जतनि रौकियत ढरि न मिलै पिय पानी री ।।

[२१२]

मूल फूल की झूल यहै है ।
जामहिं अद्भुत आनन्द अविरल उभय स्वाद सद संगम रहै है ।।

१- अमोल, २- ग्राहक, चाहक, ३- कोलाहल, ४- चाह, ५- चाह, ६- अभिलाषा ।

हिये अधार सार रस सजनी ललना लाल कल सुखनि सिहैहै[1]।
अध उरध[2] रंग हुलसि मुसकि रति नागरीदास रमि रजनी विहैहै[3]॥

[२१३]

गरव गहिल गुन गति सौं खेलैं।
ललित चलित तन फूल न समात मन विमल बाहु श्यामल गर मेलैं॥
अभिअन्तर की उमड़ि भेद भर गूढ़ गरूर लाड़ अलबेलैं।
अद्‌भुत अव झकोर झूमत मद नागरीदास मकरन्द अलेलैं॥

[२१४]

दीजै चुंबन प्रान दान।
पायें रोम मरम पुषैं[4] अधर अमी पान॥
प्रनत पाल प्यारी कृपाल पद अनुचर जान।
नागरीदास हँसि हिये लागी परिरंभन सनमान॥

[२१५]

लाड़ गरव गंभीर मान सर।
याकौ सहज समाज साज इह जल थल मंडित वर विहार भर॥
मोद विनोद भेद बहु भाँतिन अद्‌भुत मंगल अविरल सुख कर।
लाड़िली लाल प्रीति की परावधि सुभग सरोवर केलि कुशल धर॥
सादर साध[5] अगाधन पोषनि कुँवरि कुँवर कामना कलपतरु।
सागर अमृत सेवत नागरीदास गौर चरन सहचरि नारो नर॥

[२१६] राग-गौरी

गहवरि गिरि साँकरी गली।
कछु न सँभारि देह सुधि बिसरी मिली औचक[6] वृषभानु लली॥
दच्छिन कर गेंदुक[7] कुसुमनि की बाम अंश भुज सुहृद अली।
अंचल डारैं आधे सिर छवि मत्त दुरद[8] गति आवति चली॥

१- सराहना करोगे, २- नीचे ऊपर, ३- वीत जायगी, ४- पोषित होंय, ५- कामना, ६- अकस्मात, ७- गेंद, ८- हाथी।

गुन प्रयोग सहचरि सँभरावत हृदै रूप मूर्छा सली[1]।
नागरीदास मिटाइ ललक रति मिलत उरज उर गति बदली ॥

[२१७]

कुंज कुसुमित महल उदित आनन्द चहल[2]
सुरत सुख सार ढरि लाल ललना मिले।
रीझ दोऊ तलप रस उदित मन ललक बस
उमगि अँग अंग अनंग नैना हिले ॥
चौंप चुंवन भरैं अधर मधुपान करैं
झूल रति फूलि अति गर्व गुन गन झिलैं।
हरखि हठि हियनि बढ़ि चतुर चित चाइ चढ़ि
नागरीदास बलि उभै अव अव पिलैं ॥

[२१८]

सार साज समाज वृन्दारन्य बैठी बनि विमल पति हीय।
रोम रोमनि मरम मरमनि मरमी लाड़ सुवस लोभी लालनु जीय ॥
वाहन श्याम कर प्रिय पद वाहक पोर भीर भर ठाठ ठठ्यौ पीय।
निरवधि खेल सुहेल सुधानिधि नागरीदास निज नेह भरे घट वीय[3] ॥

राग-कल्यान

[२१९]

गौर स्याम तन दिपत पटनि में।
नील पीत धरैं खेलत रंग भरे दरस परस रस रीझ कटनि[4] में ॥
चुंबन परिरंभन मुख मधु पीयैं फैलि फूल सुख ललक अटनि[5] में।
नागरीदास अव अव दुलरावन भेद भिदे भीतरी दटनि में ॥

[२२०]

मोहन मूरति अरु मदन चढ़ी।
याही तैं रूप अनूप अनौखे विशद विहार विनोद विपुल बढ़ी ॥

१- गढ़ी हुई, २- दलदल, ३- युगल, ४- आसक्ति, ५- अटारी, ऊँचाई।

निर्त गान गुन कुशल कंत उर सुघर विचित्रता कहाँ धौं पढ़ी।
सहजसाजसब बदलि नागरीदास ठौर ठौर छवि सुघर फेरि गढ़ी[१]॥

[२२१]

तलप कुशल मेल आनँद बेहद।
विलसत विमल लाल उर ओहठी मद मंथर गरवीली गति सद मद॥
चुम्बन अधर पान परिरंभन गौर बाहु गर रोपन सुख हद।
नागरीदास सुनत श्रुत[२] मंगल नूपुर कंकन वलय किंकिनि नद[३]॥

[२२२] राग-कान्हरा

मेरौ झूमत हथिया मद कौ।
पिय हियहिलग परी पगसांकर मैं मद अपनी सद[४]कौ॥
सुरत नदी मरजादा ढाहत मान गुमान अनुराग उलद[५]कौ।
नागरीदास विनोद मोद मृदु आनन्द वर विहार बेहद कौ॥

[२२३]

विलसत तलप सुखेल आदरी।
दोऊ हरस रस रीझि परस्पर हिलग[६] हेत की डीठि[७] सादरी॥
नूपुर कंकन वलय किंकिनी श्रवननि मंगल नेह नादरी।
नागरीदास आलिंगन आदर फूल न समात तन प्रेम प्रमादरी॥

[२२४]

जकि जकि थकि थकि रूप रस में परैं।
कबहुँ चौंप चाव उमड़त मन कबहुँ सुख सुध बुधि विसरैं॥
कबहुँ चोखा चोखी विहरैं कबहुँ भुराई में भभरैं[८]।
कबहुँ परस्पर लालन पालन कबहुँ रुखाई मौन धरैं॥

१- समा गई, २- कान, ३- शब्द, ४- प्रकृति, ढंग, ५- झड़ी, ६- उत्कण्ठा, ७- दृष्टि, ८- भ्रमित हो जाते हैं।

कबहुँ जकरा[१] लगत खेल कौ कबहुँ रीझि रीझि अंक भरैं।
कबहुँ सच्च[२] आवेस विथकिता[३] कबहुँ केलि कौतुकी फैल परैं ॥
कबहुँ गान गुमान गर्व भरि कबहुँ निवरि बिच श्रम पकरैं।
कबहुँ सुहृद होत छिन भीतर कबहुँ कोटिक कपट से करैं ॥
कबहुँ आपु में हिय घुसि यैला कबहुं छुवत अव रोख[४] भृकुटि लरैं।
कबहुँ सुद्ध सरल सत भावक कबहुँ निठुर से देखि डरैं ॥
कबहुँ लालन रागी भागी ह्वै कबहुँ झुकि झुकि हँसि झगरैं।
कबहुँ करनि सौं कर गहि झारत कबहुँ लाड़ लपटाइ उर ढरैं ॥
कबहुँ विविधि उदार दान दै कबहुँ रंच[५] रंच कौं लरैं।
कबहुँ बेपरवाह छैल छकि कबहुँ सकुच समीत※से करैं ॥
कबहुँ सुरत सिन्धु छीलर[६] सौं कबहुँ बूँद वूड़न टकटरैं।
कबहुँ व्याकुल ज्यौं अकुलाहट कबहुँ औहठी अमिठु उघरैं ॥
कबहुँ विथकि मधु सौरभ स्वाद सद कबहुँ मोद मात बगरैं[७]।
कबहुँ चुम्बन चिन्ह दरस हेत देत आदरस दुहूँ करैं ॥
गरवीले अरवीले दोऊ फूले पति छतियाँ अचरैं।
नागरीदास जुगल औरेठी[८] विशद विहार विमल विहरैं ॥

[२२५]

कढ़ि बढ़ि परत सुख उमड़ि हियैं।
कबहुँक मगन होत रस अति रति रोममरम रस पुरवैं फूल फैल जियैं ॥
मद मंथर गति महा मदंधी मकरन्दी मधु अधर अमी[९] पियैं।
नागरीदास ललक लालच रति लाहक लाड़ बढ़ै मृदुल मननि वियैं[१०]॥

१- धुन, २- सुख, ३- शिथिलता, ४- रोष, क्रोध, ५- अत्यल्प, ६- छिछला, थोड़ा जल, ७- फैलते हैं, ८- विभिन्न प्रकार से, ९- अमृत, १०- दौनों के।
※ पाठान्तर—समात सकरैं।

[२२६] राग-केदारौ

कोमल कृश कटि लचक किंकिनी नद ।
नूपुर कल कंकन वलय धुनि पूरित मंगल श्रवन सुखद हद ॥
चौंप चाइ चित अद्‌भुत गुन गन गरव गहिल गति मृदु मंथर मद।
नागरीदास प्रेम की परावधि पल पल पानिप केलि विशद सद ॥

[२२७]

दोऊ और दोऊ मिठास महा मधुर ।
उमड़त अध उरध रस अद्‌भुत भेद भीतरी नई नई फुर[१] ॥
जुगल घटन में जुग रस संगम मुदित परस्पर प्रेम प्रभा प्रचुर[२] ।
नागरीदास अधर अदनादिक[३] स्वास समूहन प्रति रति अमुर[४]॥

[२२८]

कूजत कुंज कोकिला वचनी ।
सुनि सिरात श्रवन हिय री अमृत बैननि सुख सचनी[५] ॥
ठौर ठौर दुर्लभ दुलरावन लगि रही पिय जिय जक[६] जचनी ।
चातुर चातिक पति अति रति रट लाहक ललित ललक लचनी[७] ॥
फैली फूल कंत[८] कल हियरा विमल विहार रंग रचनी[९] ।
अंग अंग प्रति अमित सुधंगी नागरीदास नेह वचनी ॥

[२२९] राग-बिहागरौ

पहिरैं कल झूमक सारी झूमि रह्यौ लोभी पिय कौ मन ।
झूमत कंचन चलदल घूँघट नैननि पल लागैं न लीनौ पन[१०]॥
श्याम दसनि हँसि चौका सित दुति फैलि रही सोभा संपति घन।
नागरीदास तोरैं तृन प्यारौ वरत[११] ज्यौं जोवन सर्वस धन ॥

१- स्फुरणा, २- पर्याप्त, ३- भोजनादिक ४- न मुड़ने वाली, ५- देने वाली, ६- लगन, ७- लचकनी, ८- प्रियतम, ९- रचना करने वाली, १०- प्रतिज्ञा, ११- न्यौछावर करते ।

[२३०] राग-ललित

विलसत निपट[1] निवट[2] दोऊ भोर ।
उदित उजागर पानिप अव अव दरस परस रति-मोर ।।
गरवगंभीर धीर लगि लाहक सौरभ स्वाद श्रवै[3] तननि झकोर ।
ठौर ठौर टकटोलनि नागरीदास बढ़त प्रवल काम कल रोर[4]।।

[२३१] राग-विलावल

पिय हिय सिंहासन बनि बैठी ।
पानिप प्रेम प्रवीन प्रान प्रिय तन मन भरि अभिअंतर पैठी[5] ।।
गहिल गरूर गंभीर गरब गति अंग अंग छवि लाड़ अमैंठी[6] ।
नागरीदास अरवीली औहठी विलसत मद माती ऐंठी टैंठी ।।

[२३२]

ललना लाल विलास सिंगारी ।
सब सुख भरन लाड़ विस्तरनी सूरसुता[7] मृदु मंगलकारी ।।
सौरभ सीकर आलस श्रमहर कोलाहली केलि कलधारी ।
नागरीदास भवन वन बीथिन कीरति उज्जल प्रीति पसारी ।।

[२३३]

नाहु[8] निहोरी नोषी चोषी ।
हँसत लसत मृदु मुख तैं निकसत बतियाँ कुशल काम की पोषी ।।
मन भावन हिय जियहि सिरावन रोम रोम रमि मरम सँतोषी ।
अलभ लब्ध लूटत लोभी पति नागरीदास आन सब सोखी[9] ।।

[२३४] राग-आसावरी

आयौ री मेरी वीर मास असाढ़ अति सुहावनौ मन भावनौ ।
उमड़े री मेरी वीर उनमद मत्त गरजें जलधर सावनौ ।।

१- अत्यन्त, २- निवृत्त, ३- झरता है, ४- कोलाहली, ५- स्थित हो गईं, ६- इठी हुई हैं, ७- यमुना, ८- नाथ ९- शुष्क हो गईं, ।

वरसैं री मेरी वीर कीरति गांव जनियत उवतन[१] अथावरौ[२] ॥
गरवैरी मेरी वीर हिताजू के लाड़ गहवर गिरिगली सांकरी।
उल्हर्यौ[३] री मेरी वीर सजल सुपोष महाराज वृषभानुपुरी॥
तामें री मेरी वीर दामिनि प्रकास वरननि गुन बदरा चलें।
हिलिमिलि री मेरी वीर अंबुद चंद छवि प्रकास उघरें झपें॥
मंगल री मेरी वीर कोकिल गान आतुर रति चातिक रटें।
नाचत री मेरी वीर वरहि[४] अनुराग महा महोछव पावसी नटें॥
सहचरि री मेरी वीर उर सरसरिता पूरि भाग भूर कौ पैषनौं[५]॥
रसनिधि री मेरी वीर जलद विलास सुषेलत दंपति रङ्ग घनौ॥
सौरभ री मेरी वीर जमुना के तीर जल सीकर मारुत श्रवै।
नागरीदास निरवधि[६] निज केलि आलस षेद न परसै द्रवै॥

[२३५]

लाड़िली लड़ावन सरवंगी[७] समरथ।
रीत समीत जीत मन भजनहिं को वपुरा[८] चलि जानैं यह पथ॥
श्रीवृषभानु राज कुँवरेली हित वितु सर्वस प्रान जीवन गथ[९]।
श्रीहरिवंश सुबचन नागरीदास को छ्वै सकै रंग रस ऊलथ[१०]॥

[२३६]

मृदु नलिनी दल कमल तलप रची।
निकट प्रवाह निधि जु मंजु मैं कोमल पुलिन नव कपूर चूर सची॥
तापर लाड़िलो लाल हरषभरि कोलाहल कल केलि कुशल मची।
त्रिविध समीर अंबु कन वरसत लहर झकोरनि पति न कहूँ बची॥
विविधि विनोदनि विलसत अँग अँग प्रति अमित सुधंग नची।
गरव गहेल मद मंथर गुन गति नागरीदासि पति दृगनि मांझ षची[११]॥

१- ऊँचा, २- अथाई, बैठक, ३- उमड़ आया, ४- मयूर, ५- दृश्य, ६- नित्य, ७- सब प्रकार से, ८- वेचारा, ९-सम्पत्ति, धन, १०- उछाल, ११ जड़ी हुई हैं।

[२३७]

रूप प्रकास जोति निकसी ।
बेंदी भाल माँग मुक्ता मनि वेनी छवि सिर सारी षसी ॥
लोचन लोल कपोल तरोना[१] स्याम दशन दुति अधर बिंब हँसी ।
मद मंथर गुन गति गरबीली छैल छवीली विमल विलसी ॥
दरकि कंचुकी उरज प्रभाकर झूमत हार बिच बनक प्रान बसी ।
उघरि नाभि पुट सोभा सागर सुकुमारी कटि कसनि धसी ॥
लाड़ गड़ गरूर पूरि पानिप तन अधर अमी पिय रंग रसमसी ।
उदित उदार दालिद्र दवानल[२] नागरीदास पति हियें लसी ॥

[२३८]

रतन षचित मणि घूंघरिया वाजैं पाइन ।
रुन झुन किंकिनि शब्द करत कृश कटि,
कंकन वलय सुरनि मिलि चलैं चाइनि[३] ॥
गरव गहिल गुन गति मदमाती वरषत विविधि विनोद भरि भाइन ।
नागरी दास रीझि कौ औसर सुन्दर सुभग सुदाइ वचाइनि ॥

[२३९]

आरति जानि मौन प्रभु हौ ।
तुम प्रीति समीति रीति रति रंगी कौतिक कुशल प्रनय द्रुम हौ ॥
पावस प्रबल प्यार परिपूरन समझै कौन प्रेम कौ उमहौ ।
नागरीदास वलि व्यास सुवन जू भजन भेद भरि अकलुम हौ ॥

[२४०]

रितु पावस रति रसीली षग[४] है ।
रोमनि मरमनि रमति भीतरी षरी कठिन अहलाद[५] हिलग[६] है ॥
उदमद[७] वरषा मन मत्त उमहत[८] हठन हठीली अनुराग की लग है ।
मेधो[९]प्रीतिसमीति रीति धक[१०]नागरीदास मति मैंमति जक जग[११]है ॥

१- कर्णभूषण, २- वन की अग्नि, ३- चाव भरे, ४- समा रही है, ५- प्रसन्नता ६- लगन, ७- उन्मत्त, ८- उमड़ रही है, ९- गाढ़ी, १०- स्तब्ध, ११- जाग रही है ।

[२४१]

प्रात ठाट कल केलि फैली ।
विलसत विमल विनोद लाल उर पल पल प्रति रति पानिप सैली[१]॥
ठौर ठौर ठिक अलभ लड़ावन गूढ़ गहिल गुन गरव अघैली[२] ।
मद मंथर गति रीझि सुवस पति नागरीदास छाजत[३] छवि छैली ॥

[२४२] राग-भैरौं

भोर फेरि भरि ठाटु ठट्यौ है ।
सेज समाज राज क्रीड़ा कल रजनी गति रति षेल न घट्यौ है ॥
नव हुलास नव चाइ दाइ बढ़े लाड़ लड़ावन रंग बट्यौ है ।
प्रीति प्रवीन प्रात पूरन सुष नागरीदास नेह निबट्यौ[४] है ॥

[२४३]

फैल फूल रस प्रात लपटात ।
गौर स्याम अव अव प्रतिबिंबत उघरि उघरि आवत ढकि जात ॥
कबहुँ होत निपट न्यारे न्यारे कबहूँ परस्पर उरनि समात ।
कबहूँ दरस परस रस विथकित कवहुँ अंक भरत अकुलात ॥
कवहूँ होत महा मदमानी कवहूँ अंग लालन[५] ललचात ।
प्रीतम प्रीति प्यार की परावधि नागरीदास षेलत न अघात ॥

[२४४]

ललक भरे परे न रहे ।
लष गुन चाइ दाइ भाइनि बढ़े अंग अंग रति रंग नहे[६] ॥
लाड़ गरूर घूट पानिप तन अरबीले[७] गुन गरव लहे ।
चोषा चोषी चौंप चौकसी नागरीदास इक तक[८] निबहे ॥

[२४५]

परम प्रवीन प्रिया पन पारत[९] ।
गरवीली गति छैल छबीली सुष समूह स्यामल उर भारत[१०] ॥

१- शैली, प्रकार, २- छकने और छकाने वाली, ३- शोभा पा रही हैं, ४- पूर्ण ५- दुलराने के लिये, ६- भीगे, ७- गर्व भरे, ८- एक रस, ९- पालन करती हैं, १०- भरती हैं,

गहर गंभीर धीर धक लागें लाड़ गरूर चरण वर धारति ।
नूपुर कंकन धुनि वलय किंकिनी कुशल कुँवरि कौतिक विस्तारत ।।
पिय मन पकरि चित चलन न पावै-विथक बूड़ जक बाधा टारति ।
कंठ वाहु कल सुष मधु पोषत नागरीदास पति अति रति आरति ।।

[२४६]

अद्भुत कौतुक मंडित पति उर ।
गरवीली गुन गति रति में मत्त लाड़ गहिल कल केलि फैल प्रचुर[१] ।।
मोद विनोद भेद अभिअंतर तन मंडित[२] नई नई फुर ।
ललित लड़ावन उत इत सुषनिधि आनंद मानंद मंगल जुग जुर ।।
लटकि लटकि लचकतसु देसकटि बिलुलित[३]अलकावलि मुष पर रूर ।
नागरीदास विलास जकर[४] जिय औहठ हठी अमी अति अमुर[५] ।।

[२४७]

आवनौ भावनौ छवि छतियाँ छैल ।
मन मुकुलित[६] तन फूल पूरि फुरे अंग अंग प्रति लाड़ फैलु ।।
मद मंथर गुन गति पति उर पर गरव गंभीर उदार गैलु ।
रोम मरम पिय पोषत नागरीदास फूली सषी सुष सहृद षेलु ।।

राग-केदारौ

[२४८]

आज रजनी घटी कल षेल न घट्यौ ।
चुम्बन चाव चौंप पलु पलु प्रति अधरसुधा पियें नेह निबट्यौ ।।
जाकर नागर करि इक तक निसि वर विलास मनौं फेरि ठट्यौ ।
भूषन वसन गत कुशल केलि रत दरस परस अव लालच बढ़्यौ ।।
दुलरावन मिलि अलभ लड़ावन ठौरठौर अति रति रीझि मन कढ़्यौ ।
निवड़ित नाहिन हेत नागरीदास अंतरावृत झांझक[७] सो फट्यौ ।।

१- अधिक मात्रा में, २- शोभित हैं ३- चंचल, ४- पकड़ लिया, ५- कम न होने वाला, ६- खिला हुआ, ७- झांका, छेद

[२४९]

कर वर निकर[१] विलास श्रम न परसै ।
निसीथ[२] सुरत समय भोजन की माती,
दशा अलभ लड़ावैं अदरस दरसैं ॥
अद्भुत ठौर ठौर की लबधि फबी जाकौं कुशल कामनी तरसैं।
उभै स्वाद सद संग महा सुष नागरीदास रोम रोम रस बरसैं ॥

[२५०]

अवही भए मानौ ठौर ठौर परचे ।
लालन दुलरावन सौरभ लियें बार बार लालतु अव अरचैं ॥
छिन में मगन होत गुन कहूँ लै विलसत चातुर चित चरचैं।
पल पल प्रथम भेंट अंग अंग प्रति नागरीदास पति सर्व सुष रचैं ॥

[२५१]

प्यारीके पाइनि लगे लाल जावक दैन चरनकमल चित हित लगाइ।
सीक सनेह सँवार स्याम धन लिषत चित्र वहु विधि वनाइ ॥
नष मनि जोति निरषि विथकित भए सिथल भए रंग रंग्यो न जाइ।
नागरीदासि हँसि कहत कुंवरि यों रहो जू रहौ पग रहो है छिपाइ ॥

[२५२]

सुनि प्यारी प्रीतम बस तेरें ।
सहज मान धरि लेत हिय जियमें आदर आतुर प्रनय[३]करत हरितेरें॥
इनके सर्वस प्रान तुम ही गति एक गांठ सौ फेरें।
उमग भई अंशनिं भुज दीने नागरीदास कुंज तवही हँसि हेरें ॥

दोहा—बड़ भागी जाग्यौ हियौ, कुंवरि उदार उदोत ।
दुलरावन लाड़न बढ़त, अद्भुत सुषओत प्रोत ॥

१- राशि, २- अर्द्ध रात्रि, ३- प्रेम प्रार्थना, ४- प्रकाश ।

[२५३]

कह्यौ न परत आज हुलास अखियनि कौ।
ललित अरुन डोरे रति सुषरस बोरे[१] सूचत,
सुहाग भाग नेह नखियनि[२] कौ ॥
मोपै न दुरत चोरी मेरी गरवीली गोरी अनभतौं[३],
आवे बास[४] कल कषियनि[५] कौ।
नागरीदास वलि तलप सुफली देषनि कों आज,
भाग जाग्यौ सखियनि कौ ॥

[२५४]

यह रितु यह वन सजनी री साजनु यह समाज कहाँ बनि आवै।
किलकि नचत मोर गहिल घन की घोर कोकिल गन मंगल गावै॥
पल पल प्रेम पपीहा वोलै निरवधि नेह विपिन वन छावै।
कुँवरि कुँवर रति केलि समागम नागरीदास हियें जिये भावै॥

[२५५]

उरजन करि अचरा की फेंट।
नीवो किंकिन कशि कृश कटि तट विमल विलस वर केलि अभेंट॥
चुम्बन दान पान परिरंभन आलिंगन रस प्रेम समेंट।
अंग अंग अरझि परझि नागरीदास ठौर ठौर सद स्वादनि सों भेंट॥

[२५६]

रहे वपु पाँवड़े विछाइ।
षोरि सांकरी इतनौई मारग हीये परै जो पाइ॥
अली अंश पर विविकर दीने पीठ सों सीस टिकाइ।
सजनी सकुचि निहोरि निवारी पहलें ही हा हा खाइ॥
पग परसत प्यारी पहिचानै बैठि गई अकुलाइ।
नागरीदास मुख में मुख दै रही छतियाँ रहीं लपटाइ॥

१- डुवो दिये, वावले, २- नखूनों की खरोंच, ३- विना कहे, ४- गंध, ५- काँख।

[२५७]

प्रेम पपीहा की बलि हौंरी ।
रटत रहत मेरौ सुभग सांवरौ इक टक तेरी सौं री ॥
मगन भयौ तन मन गुन गावै परी है रूप उर औंरी[१] ।
नागरि छिनक परी है कैसें तो बिन कल काँहू धौंरी ॥
इतनो श्रवन सुनत आतुर व्है लली अली संग दौंरी।
नागरीदास मिलो प्रीतम सों लता ललित ग्रह मौंरी[२] ॥

[२५८]

सुनइ आई नागर रितु ।
चातिक रट पिक गान नचत केकी कुल कल कोलाहल,
कौतिक किलक काम ललक वाढ़यौ वितु ॥
ललना लाल लड़ाइ हरष हिय लगाइ नव नव,
अनुराग वन भूमि छयौ हितु ।
नागरीदास नव नेह घन उनै[३] आए पिय अंक,
लाए देखें फूल्यौ न माइ[४] चितु ॥

[२५९]

विराजत लाड़ गहेली चाल ।
उर मंडित कल कंत कौतिकी दुलराई रति लाल ।।
अगनित गुन गन मद संथर गति वारे मतंग मराल ।
कर कंकन वलय वाजू मिलि नदित किंकनी जाल ।।
ललना लालहि चली लड़ावन रस रसमसी[५] रसाल ।
नागरीदास विलास नेहनिधि पिय हिय हित वर वाल ।।

[२६०] राग-भैरौ

अलक लड़ी लाड़नि डोलै ।
अति ही गर्व भरी गरबोली विपिन विनोद निकुंज कलोलै ॥

१- अरुझन, २- फूल गई, ३- उमड़ना, ४- समाना, ५- रस भीगी ।

ईषद हास मनोहर मातें आधे आधे बैननि बोलै।
चतुर सखी चित चौंप बढ़ावत नागरीदास विवसता[१] षोलै॥

[२६१]

*परस्पर मुदित समात उरनि में।
अति आसक्त आलिंगन चुम्बन ललक बिकाने री मदन ढुरनि में॥
हास विलास हुलास मते मन अगनित नव नव भेद जुरनि में।
नागरीदास राग रँग कौतुक नूपुर किंकिनि वलय सुरनि में॥

[२६२]

देषि री नव केलि अधिकाई।
चारों जांम[२] विहार बीत गये अजहूँ अवधि न आई॥
प्रेम मुदित चुम्बन दान पान मधु महा मत्त पूजत[३] न अघाई।
हँसि हँसि रंग अँग अँग चंचल उपजत भूषन धुनि रूचिदाई॥
अति सुकुँवार सुरत रस भीजे हास विलास सुधा बरषाई।
नागरीदास उदार लाड़िली सर्वसु सुष संपदा लुटाई॥

[२६३] राग-सूहो

सुनि सखी उरज अनियारे कोर।
मम वक्षस्थल भेदि छेदि कें निसरत पैंने छोर॥
कहि क्यों प्रेम सुमार[४] समारे[५] चपल नैंन चित चोर।
अधर सुधा पावत ही चेत्यौ औरहि नही निहोर॥
हों न्यौछावर बेगि सुनौ नूपुर किंकिनि की घोर।
देषौ मद गज चाल छबीली अलबेली बैस[६] किशोर॥
मृदु मुसिक्यान चुभि रही जिय में नाक जलज मनि ढोर[७]।
नागरीदास उठि मिली अचानक पोषे पिय तृषित[८] चकोर॥

१- संकोच दूर कर दिया, २- प्रहर, ३- वन्दन करते हुए, ४- सुन्दर काम, ५- सजाये, ६- अवस्था, ७- ढुरन, डोलन, ८- प्यासे, * पुनरावृत्ति पद सं० २०४ की।

[२६४]

नैना केलि के गदे[१] ।
अति गंभीर भार भरे सोभित मैंमद मोद लदे[२] ।।
रमें समाज साज सजि संपति तेई सद[३] न सदे[४] ।
नागरीदास वलि अधर पान मधु उमगि ऊमड़ि प्रमुदे[५] ।।

[२६५] राग-धनाश्री

सिटपिटात किरननि के लागे ।
उठि न सकत लोचन चकचौंधत ऐंचि ऐंचि ओढ़त बसन दोऊ जागे ॥
हिय सौं हियौ मुष सौं मुष मिलवत हँसि लपटात सुरत रस पागे[६] ।
नागरीदास निरषि अंखियनि सुष मति कोउ बोलौ जाहु जिन आगे ॥

(२६६) राग-रामकल

अवही नेंकु सोए हैं अलसाय ।
काम केलि अनुराग रँग भरे जागर रैंन बिहाय ।।
बार बार सुपनें हूँ सूचत सुरत रंग के भाय ।
यह सुख निरषि सखी जन प्रमुदित नागरीदास बलि जाय ।।

[२६७]

आजु सषी अद्भुत भाँति निहारि ।
प्रेम सुदृढ़ की ग्रंथि परि गई गौर स्याम भुज चारि ॥
अबहीं प्रात पलक लागी हैं मुष पर श्रम कन वारि ।
नागरीदास रस पिवहु निकट व्है अपने वचन[७] निवारि ॥

[२६८]

मोपर कछु करत हैं सखि नेहु ।
हौं तौ जव उर धरौं मृदुल पद मानत धनि करि देहु ॥
तू कहि मो अनुचर आरत कों अधर सुधा दै लेहु ।
नागरीदास अकुलाइ अंक भरि अँषियनि वरष्यो मेह ॥

१- कहने वाले, २- परिपूर्ण, ३- सत्, धीर, ४- सदना, क्षरित हुये, खाली हुए,
५- आनन्दित हुये, ६- डूबे, ७- चुप होकर ।

[२६९]

मेरी तू चतुर चिंतामनि ।
सुनि सुकुंवारि मम सुकृत[१] पुंज[२] फल पल
पलकनि की ओट होहु जनि ।।
सर्वसु प्रान अधार रसिकनी याही तें मानत आपुन धनि ।
नागरीदास यह मंत्र मनोरम रसना श्रीराधा नाम रुचिर गनि ।।

[२७०]

ये कुच कमल हमारे प्रान ।
इनके बल मेरे प्यारे लालहिं उपजत नव नव उकति सयान ।।
जिनके दरस परस ही सरस मन अतिमद मैंमद मान गुमान ।
नागरीदास वारो उरजनि पर पटतर[३] कों नहिं प्रान ।।

[२७१]

पल पल पानिप[४] अधिक बढ़ी री ।
हास हुलास आलिंगन चुम्बन नव नव चाइ चढ़ी री ।।
वर बिहार के रस समाज सजि गुन गन फेरि गढ़ी री ।
नागरीदास बलि कौतिक कोविद यह विधि कहाँ धौं पढ़ी री ।।

राग-नट

[२७२]

चंचल सखी नैंन कजरारे ।
सुभग सुपान सलौनें लोइन[५] अति ही विशद ढरारे ।।
मेरे हिय जिय मांझ चुभि रहे एकौ पल टरत न टारे ।
नागरीदास समात न घूँघट करनाइत अनियारे ।।

राग-भैंरौं

[२७३]

प्यारी जोर करज[६] तन मोरत ।
बंक विशाल छबीले लोचन भ्रुव[७] विलास चित चोरत ।।

१- पुण्य, शुभ कर्म, २- समूह, ३- समानता, ४- लावण्य, ५- लोचन, नेत्र, ६- अंगुलिया, ७- भौंह ।

कनक१ लता सी आगैं ठाढ़ी मन अरु दृष्टि अगोरत२।
उघरी वर कुच तटी३ पटी तें छवि मरजादहिं फोरत॥
अति रस विवस पियहिं उर लावत केलि कलोल झकोरत।
नागरीदास ललितादि निरषि सुष लै बलाय तृन तोरत॥

[२७४] राग-गौरी चर्चरी

जुगल लाल लाड़ चाल उर वर सुकुंवार बाल,
कनक माल लसि रसाल मुदित मोहनी।
कर नाइत नैंन लोल कुण्डल चल अलक डोल,
मधुर हसन दसन लसनि सुषनि सोहनी॥
किंकिनि कल वलय बाजु नूपुर कुनि४ ललित साज,
शुभ समाज नाहु५ कंठ बाहु रोहनी।
नागरीदासि दरस वारि सुकृती सिर भार भारि६,
पूरित पिय प्रेम रोम रोम पोहनी७॥

[२७५] राग-विहागरो

लाड़ गरब की फूल गात८ में।
ईषद९ स्याम दसन मुख दमकत उदित उदोत सुभग उरजात१० में॥
चंचल हार अलक दृग कुण्डल मत्त होत मन दृष्टि पात में।
नागरीदास लाल उर आसन बैठी विमल अनेक घात में॥

[२७६]

नव मन अटक आज कछु और।
बसी सुहागिल की अद्भुत छबि हियरा नहीं ऽव ठौर॥
अति दुचिते सुचिते नहीं पल भर चमक लेत कहीं बौर११।
करौं कहा प्यारी सुकुँवारी निकट बताऊँ जौर१२॥

१- स्वर्ण, २- रक्षा कर रही है, ३- कंचुकी, ४- ध्वनि, ५- नाथ, प्रियतम के कंठ में वाहु आरोपित करने वाली ६- दमन करके, ७- पिरोने वाली, ८- अंग ९- थोड़ा, १०- स्तन, ११- विभोर होकर, मत्त होकर ११- निकट।

अपनी ओर तें बदन उघारयौ पुजई मनोरथ दौर[१] ।
नागरीदास सहचरि पग पकरे रसिक कुंवर सिरमौर ॥

[२७७]

नैननि में नैन मिलि मन में मन सखि तन सों तन रूप छयौ ।
जिय सौं जिय हिय सौं हिय लसि गसि हँसि हँसि मुख मधुपान दयौ॥
रीझि भीज छवि दरस परस्पर नेह सहज सब ढाँकि लयौ ।
बिमल विनोद मोद मति दोऊ नागरीदास गुन पलट[२] भयौ ॥

[२७८]

एक सर चूरा अरु घूंघरु जावक जुत लागत पग नीके ।
गौर गरव गंभीर गुनवते मण्डन मम उर मङ्गल जीके ॥
उदित उदोत मन नैंन सखी री नष छवि पर बलि नगरंग फीके ।
नागरीदास चरन जुग[३] जीवन प्यारी के,
रोम रोम रमें प्राननि पीके[४] ॥

[२७९]

छुटी चुरी एक सर चूरा नूपुर मंडित जावक जुत पग ।
अव अव अमित रूप गुन सागर छवि आगर मेरे मन हिलग ॥
गौर चरन जुग चाल चंद्र नष अति रुचि रचि पचि चित चातुर षग[५]।
नागरीदास ज्यौं फनि[६]मनि जीवन पाइ[७]प्रिया परकासक मम जग॥

[२८०]

परत प्रेम निधि पांय रुचिर जहां ।
सुनि री सषी मेरौ ज्यौ[८] जानत जीभ धरौं किधौं आँषिनि तहाँ ॥
चित बित तरुवन[९] तर[१०] व तिरीछौ[११]तन तकि कियें फिरत छहाँ।
नागरीदास चरन जुग जीवन यह सुष मोकौं अनत कहाँ ॥

१- दौड़कर २- विपरीत, ३- दोनों, ४- प्रियतम, ५- गड़ गया, ६- सर्प,
७- चरण, ८-जिय, प्राण, ९- तलुवे, १०- नीचे, ११- तिरछा ।

[२८१]

पल पल प्रबल केलि पसरी[१] ।
पल पल अधर पीयूष[२] पान करि पल पल परे हैं प्रेम के बसरी ॥
पल पल मुख मधु स्वाद नये नये पल पल चौंप चसक की गसरी[३] ।
नागरीदास तलप सुष पल पल नव रति कसर निकस री ॥

[२८२] राग-केदारो

सखी सिंगार सेज दोऊ आनैं ।
हास हुलास केलि गरवीले प्रवल ललक नागर मन जानैं ॥
अति आतुर अकुलाइ परसि पद सुभग सुठान अंग अंग सानैं ।
अद्भुत बनक ठनक कल किंकिनि बजन नूपुर भूषन सहदानैं[४] ॥
महा मत्त सुकुँवार मते मन नई नई कोक कलनि अधिकानैं ।
कोमल किरन निरषि नागरीदास निकट करनि अंचल पट तानैं ॥

[२८३]

ललित भाँति करि छाम डगति है ।
नूपुर किंकिनि वलय बाजु[५] सों ठौर ठौर रचि चोंप षगति है ॥
मुख मधु पान प्रान पिय पोषन ढुरि ढुरि हँसि हँसि कंठ लगति है ।
बिंबाधर स्याम दसनावलि पति प्रकास मनि जोति जगति है ॥
अगनित गुन गन दशा भेद विधि पल पल पानिप प्रेम पगति है ।
अमित सुधंग[६] अंग अंग वारी नागरीदास मद मंथर[७] गति है ॥

[२८४]

आज सुरत की उड़त परत हैं ।
करुनासिंधु उदार लाड़िलो हँसि हँसि मुख मधु सुधा भरत हैं ॥
अङ्ग अङ्ग लावन्य ललित छवि गुन गन रति सों चरन धरत हैं ।
नूपुर किंकिनि धुनि कोलाहल नागरीदास कौतूहल करत हैं ॥

१- फैली हुई है, २- अमृत, ३- जकड़, ४- निशान, ५- ध्वनि, ६- सुन्दर ढंग, ७- मन्द ।

[२८५]

सुषनिधि हिय भरि रंग हिलोरत ।
अमी पान परिरंभन चुम्बन बार बार मुख सों मुख जोरत ॥
पति समाज कल काज कुशल वर रूप गुननि गन मेंड़ैं[1] छोरत ।
दबी[2] दशा पिय की सुधि नासी विवस विनोद अवनि[3] टकटोरत ॥
लगत कंठ कल किलकि कुलाहल लाड़ चोचली[4] बतियनि भोरत[5] ।
चिबुक डुलाइ अलक आकरषत अधर दशन गहि हँसि झकझोरत ॥
भाँति भाँति के बानि बनावत ठौर ठौर मिलि ललक बटोरत[6] ।
बिसराई बलि बानिविमल वलि छिनछिन रचिरुचि चोंप हिरोरत[7] ॥
परसि प्रकास उरज उर भीतर दिये सवाद बूड़ि टकटोरत ।
नागरीदासि निज दासिनु बांछित 'प्रथम बोध तें गाइ बहोरत'✲ ॥

[२८६]

पीय हीय अनुराग ढुरी ।
जगमगात गरबीली गुन गति अव अव चल मङ्गल माधुरी ॥
कुण्डल लोल नैंन करनाइत बदन छूटि अलकावलि रुरी ।
परमानन्द प्रेम परिपूरन पति सुप्रीती पानिप सों जुरी ॥
सेज समाजे बाज साज सों नूपुर किंकिनि कंकन चुरी ।
हिलग हेत की चेत चातुरी चाइ चौगुनें सिंधु न मुरी ॥
कोलाहली केलि कल चहलें[8] ठौर ठौर रति उकति फुरी ।
नागरीदास दुलरावन लाहक[9] लालच लाड़ ललक[10] प्रचुरी[11] ॥

१- मर्यादायें, २- विवश, ३- अंगों की, ४- नखरीली, ५- भुला रही हैं, ६- इकट्ठा करना, ७- हिलोर रही हैं, ✲ विषय ज्ञान की ओर से इन्द्रियों को दिव्य युगल केलि की ओर मोड़ने का संकेत है, ८- दलदल में, ९- इच्छुक १०- प्रवल अभिलाषा, ११- बहुत अधिक बढ़ी ।

[२८७] राग-ईमन

माई चातुर रुचिर चलत अव चिलकत[१] ।
मंगल बाज राज साज सजि कौतिक कुशल केलि कल किलकत ॥
मृदु माधुरी सुकुंवार कलेवर लाड़ दसा में लोचन सिकलत[२] ।
नेह नोहरी[३] नागरीदास बलि नव रंगनि गुन पर गुन मिलकत[४] ॥

[२८८]

घूमत झूमत जात चली मद ।
पुलकित तन पिय अव आलिंगन मुख मधु पान कियें अधरा छद[५] ॥
अति रस उमड़ न मात राज रति अभिअंतर की चषक साद सद।
घूरन मान नैंन की सैंननि लुलित भृकुटि लट मुसकनि ईषद ॥
लटकि लटकि मटकि श्रोणी[६]तट किंकिनि कल प्रति धुनि पटकत पद।
छबि की फैल छैल बर राजत नागरीदास बिलसें उलघें[७] हद ॥

[२८९] राग-कान्हरो

इतहिं कुंवरि उत कुँवर सिंगारे ।
सजे साज बानैंत[८] धीर दोऊ बीर खेत सज्या पग धारे ॥
सुरत चाइ रोमावलि फूली दुन्दुभि वर भूषन झनकारे ।
मुहु मिल होत चाँपि भृकुटिनि तें छुटत कटाक्ष बान अनियारे ॥
जोर परत दुहुँ ओर रंग भरि चरचत छंद बंद कर झारे ।
अभिर भए झुकि लरे अगावझ प्रेम मुदित तन मन न सँभारे ॥
विरचे प्रवल जुगल जोधा ज्यौं दुन्दु जुद्ध जुरि टरत न टारे ।
नषर[९] उरोजनि ऊपर उन इन अधरनि रिस करि दसन प्रहारे ॥
काम कलह मचि रही सुरस षचि सनमुख लगत न गात उबारे ।
अभिअंतर रस उमगि निरषि सखि लतनि ओट सब कहत पँवारे ॥

१- प्रकाशित हो रहे हैं, २- मिल रहे हैं, ३- अनोखी, ४-प्रकाशित हो रहे हैं,
५- क्षत, ६- कटि प्रदेश, ७- सीमा तोड़ रहे हैं, ८- योद्धा, ९- नाखून ।

देखत कोमल कृश कटि लचकत चरन पकरि लालन पचिहारे[१] ।
नागरीदास बलि लै उछङ्ग[२] धरि तन मन प्रान प्रिया पर वारे ।।

[२९०] राग-विहागरौ

श्री हरिवंश सुकर भोजन करैं ।
मकरंदी मुख मधु मृदु मिश्रित या विन कौर न वदन धरैं ।।
चुम्बन चसक चष भोगी नख शिख पोषै,
उभय स्वाद सद संगम सुष में परैं ।
कर वर निकर विलास नागरीदास अलक लड़ैंते विमल विहरैं ।।

[२९१]

दोहा—श्री हरिवंश के भजन की समझ न होई खेलु ।
तन मन गुन लगै वस्तु सों खरो कठिन है मेलु ।।
कठिन मिलन रस रीतिसों प्रीति समीति समाजु ।
चाल सु श्रीहरिवंश की जा पाछैं कल काजु ।।
श्रीवृन्दावन निधि मधुरिमा मृदु मकरंद सवाद ।
रस समूह हरिवंश की वानी में अहलाद ।।
वानी विन नहिं पाइये वृन्दावन रस सार ।
मुख कढ्यौ श्रीहरिवंश के सुख समूह निरधार ।।
वानी रस पहुँचै नहीं कोटि जतन दै दाव ।
श्रीव्यास सुवन पद पछलगा ताही को समवाव ।।
ऐसौ समरथ सेइये जाके सुजन सँभार ।
भजन सु निधि सींचत इन्हैं सींचत वारम्वार ।।
मंगल निधि उदोत करि रसिक नृपति हरिवंश ।
सुजन जननि वर पोषिकैं तिमिर किये सब ध्वंस।।
गर्वीले गुन गर्व तन भेद भीतरे फैल ।
वर विलास मन वढ़ि परै लाल छवीलौ छैल ।।

१- थकित हो गये, २- अंक, गोद ।

गर्वीले गुन गननिपुनि छैल छवीली साजु ।
पानिप स्यामल उरउदित पति प्रतिपालन काजु ।।
लाड़ लपेट चपेट चपि विथकि बूड़ि गई भूलि ।
प्रिया प्रीति पालन परम विलसन सम दोऊ फूलि।।
अजुषित अति आनंद है निसीथ सुरत समै मेलि ।
भोजन सेज समाज कैं वाढ़त अविरल खेलि ।।
बड़भागी जाग्यौ हियौ कुंवरि उदार उदोत ।
दुलरावन लाड़न बढ़त अद्‌भुत सुख ओतप्रोत ।।

[२९२]

निसीथ सुरत समैं भर भोजन में प्यार है ।
भाँति भाँति के लाड़ लड़ावन कर निकर
विलास विचित्र विहार है ।।
उभै स्वाद सद संगम सर्वस ठौर ठौर रति अद्‌भुत निहार है ।
हस्तामलक मेल नागरीदास रस रसिक-
सिरोमनि हाथकौ हथ्यार है ।।

[२९३]

निसीथ सुरत समें भर भोजन लाड़ कौ ।
कर वर निकर विलास लडावनो उभै स्वाद सद संगम चाड़[१]कौ ।।
महा मिठास उमड़ि अध ऊरध अभिअंतर
रस सुष अमिठ आड़ कौ ।
प्रेम चहल[२] बिच गज मन नागरीदास कठिन
कढ़िवौ है रति की गाड़ कौ ।।

[२९४]

भोजन तलप[३] तन आलस श्रम भगै ।
चुम्बन चसक चष मुख मधु संजुत[४] सौरभ स्वादनि देह जगै ।।

१- प्रवल, २- दलदल, ३- शैया, ४- मिला हुआ ।

रोम रोम पोष संतोष मरम भरे सेज समागम महा मिठास लगैं।
अदल बदल ग्रास नागरीदास हुलास
पुलक परिरंभन प्रमुदित प्रेम पगैं॥

[२९५]

जीभ की उठेल षेल कौ षैवौ।
चुंबन चसक चष बिंजन सौरभ मुख
बिच बिच अधर सुधा मृदु पैवौ॥
रोम हरष तन मननि फूल रति
परिरंभन आदर भरि लैवौ।
नागरीदास बलि परसि परस्पर
उमड़ि हरष हिय मद्धि[1] समैवौ॥

[२९६]

उथल पुथल[2] रति पलटत ग्रास।
भोजन अधर अमीसद संजुत चुंबन चसक चष लाहक हुलास॥
चूसत रसनि रस रीझि भीजि प्रीति
बस उमड़त मुष मृदु सुभग सुवास।
घूँमि रहे घन घ्रान प्रान मन पिवत हूँ प्यास निरवधि नव आस॥
रोंम रोंम पोषत मरम संतोषत मुदित परस्पर घूंटत उसास।
पावत शेष सखी सनमानी नागरीदास घिरी आस पास॥

[२९७]

कर वर निकर विचित्र विलास है।
निसीथ सुरत भर भोजन कौ समयौ
उभय स्वाद सद संगम हुलास है॥
तन मन पोषत रोम रोम सुख षगे
अब अब श्रवत समूह सुवास है।

१- मध्य, २- अदल बदल।

हस्तामलक मेल मंगल मैं सजनी
कुल घेरें आस पास है॥
भीर गम्भीर लड़ावन लालन तामें छिन छिन प्रेम प्रकास है।
श्रीहरिवंश समाज सेज कौ नागरीदास विलास सिर उपास है॥

[२९८]

राग-अड़ानो

निसीथ सुरत भोजन तुमहीं बनि आवै ।
अपनी हित सुकुँवारी कारन को अैसी उपजें उक्ति उठावै ॥
जामें आलस षेद न परसै करवर निकर विलास लड़ावै ।
उभय स्वाद सदसम सुष सर्वसु कौंन भीतरे भेद दिषावै ॥
महा मिठास उमड़ि अध ऊरध अभिअंतर रमि मरम सिरावै[१] ।
नागरीदास रसिक मणि व्यापक अद्भुत मति अदरस[२] दरसावै ॥

[२९९]

यहै तुम्हारौ लाड़ ठिक ठौर ।
निसीथ सुरत समें भोजन कौ औसर तलप समाज न समरथ और॥
लालन दुलरावन दुर्ल्लभ अव कर वर निकर केलि कल सौर[३] ।
पति परवीन[४] रीति नागरीदास श्रीहरिवंश रसिक सिर मौर॥

[३००]

अधर सुधा विन भोजन कैसौ ।
यह वर वानि परी प्रीतम कों मुख मधु सौरभ बिन रहै वैसौ[५] ॥
वदन वदन में मेलैं हीं जेंवत सुघर सवादिल[६] भोगी अैसौ ।
नेह नोहरी[७] नाहु नागरीदास सुहृद सनेही कोउ वियौ[८] न तैसौ ॥

१- शीतल करते हैं, २- अनदेखी, ३- शौर्य, शोर, ४- कुशल, ५- उदास जैसे, ६- स्वादी, ७- अनोखा, ८- दूसरा ।

[३०१]

निसीथ सुरत समैं भोजन को ठिक[१] परॺौ ।
चुंबन चौंप चिहुँठ चतुरता उभय स्वाद सद संगम भेद भरॺौ ॥
अभिअंतर रमि भटक भीतरी अध उरध सुख उमड़ि बगरॺौ[२] ।
यह वर बानि[३] विलास भोग की नागरीदास हित[४] मूल पकरॺौ ॥

[३०२]

निसीथ सुरत समैं भोजन को परनाली[५] ।
उभय स्वाद सद संगम अद्भुत कर वर निकर केलि कल चाली ॥
रीति समीति प्रेम परपाटी श्रीहरिवंश प्रीति प्रतिपाली[६] ।
हस्तामलक मेल नागरीदास चाल लाल लियें रस दरसाली[७] ॥

[३०३]

निसीथ सुरत समें भोजन में फबायौ ।
उभय स्वाद रस संगम अद्भुत कर वर निकर विलास लड़ायौ ॥
पूरन किये मनोरथ मंगल ठौर ठौर दुल्लभ दुलरायौ ।
हस्तामलक मेल नागरीदास भाँति भाँति कल खेल खिलायौ ॥

[३०४]

निसीथ सुरत समैं सभार भोजन कौ दाउ[८] दियौ ।
हित निधान[९] हरिवंश चंद जू कर वर निकर विलास कियौ ॥
उभै स्वाद सद संगम अद्भुत रोम मरम उठत भरि हियौ ।
नागरीदास चुंबन चख चसकनि मुख मधु सुधा प्यार सों पियौ ॥

[३०५]

निसीथ सुरत समें भोजन आस पास घिरी ।
करवर निकर विलास लड़ावन हिलग हियें दियें सब अभिरी[१०]॥

१- ठिकाना, २- फैल गया, ३- बान, वाणी, ४- हित का आधार, ५- प्रणाली, ६- निर्वाह किया, ७- दिखाने वाली, ८- अवसर, ९- खजाना, १०- सेवा में भिड़ गई ।

एकनि पानि गौर अवलीनें एकनि के स्याम अंग वटी विरी[१] ।
रहसि बहसिपर खेल खिलावत उभय स्वाद सद संगम सिंधु तिरी ॥
निरवधि आनंद अभिनय रति रस परस प्रकासनि[२] दसा फिरी ।
हस्तामलक मल मद लाहक नागरीदासि बलि अजर[३] जिरी ॥

[३०६]

भोजन धरम कौ मूल सरम[४] कौ ।
निसीथ सुरत समें सेज लड़ावन हित सजनी के कुशल करम कौं ॥
चुंबन चसक चष मुख मधु मृदु पीयें
फैलि परें उभै स्वाद मदन रमकौ[५] ।
अध उरध रस उमड़ि नागरीदास
अद्भुत सुष गयौ दारिद्र जनम कौ ॥

[३०७]

रजनीं कर निकर खेल होतु है ।
निसीथ सुरत समें भोजन लड़ावन मांहि मनोरथ मेलि पोतु[६] है ॥
प्रेम प्रकास हुलास उदमदे अद्भुत पानिप अंग उदोत है ।
गर्वित गुन घन[७] घ्रान[८] उमड़ि घट[९]
नागरीदास तन मन मननि भोतु[१०] है ॥

[३०८]

निसीथ सुरत समें भोजन की भर फूल ।
कर वर निकर विलास लड़ावन अति हुलास मन हाहर[११] हूल ॥
उभै स्वाद सद संगम रसावेस गरव गंभीर मदमाती मृदु झूल ।
अतुलित आनंद मानंद मंगल नागरीदास और रंग बन सम तूल ॥

१- छोटी वीरी, २- सखियों की भाव मुद्रायें, ३- अमर हो रही हैं, ४- संकोच, मनुहार, ५- इतराहट, तरंग, ६- मोती, पिरोना, ७- अधिक, ८- सुगन्ध, ९- घटा, १०- वहुत, ११- आनन्द का कोलाहल ।

[३०९]

निसीथ सुरत समैं भोजन कौ बड़ौ पोष।
चुम्बन चसक चख मुख मधु मिश्रित उभय स्वाद सद संगम सुख संतोष ।।
कर वर निकर विलास लड़ावन हित सजनी के औसर बन्यौ मोष।
नूपुर कंकन वलय किंकिनी श्रवननि मंगल मंजुल मृदु घोष ।।
अति आवेस अजब अद्‌भुत रस अगरी[१] अगरा परस्पर चोष।
घूंघट अधर सुधा रति रंग लूटत नागरीदास आनन्द अजोष[२] ।।

[३१०]

निसीथ सुरत समें भोजन सबै खेल फवै।
चुम्बन चसक चख मुख मधु मैमत उभय स्वाद सद संगम सुख दवै ।।
अद्‌भुत मकरंदी मधु घूंघट उमड़ि उकति उपजे अजवै[३]।
अव अव दरस परस नागरीदास पावत लवधि पल पल बढ़त लवै[४] ।।

[३११]

हियें हरखि हित हिलग जेंबनौ[५]।
निसीथ सुरत भोजन सुख पोषक व्यास सुवन जू कौ समयौ सेवनौ[६]।
जहाँ धरम निरधार निवट[७] रस रसिक सिरोमनि मग मन नेवनौ[८]।
नागरीदास विलास सार सच्यौ नेह नोहरे रंग मन भेवनौ[९] ।।

[३१२]

निसीथ भोजन सुरत मते कौ।
कर वर निकर विलास लड़ावन हित सजनी जू के प्रेम पते कौ ।।
अधर अदन रुचि रोचक पाचक वदन सुधा मकरंद वसते[१०] कौ।
पिवत हू त्रिपति न नेंक नागरीदास लाड़िली लाल ललक अनेकौ[११]।।

१- आगे बढ़कर, २- अतुलित, ३- अनोखी, ४- लगन, ५- भोजन करना, ६- सेवन करना, ७- विशुद्ध, एकमात्र, ८- झुकना, ९- भिगोना, १०- बसे हुए, ११- बहुत-सी।

[३१३]

निसीथ सुरत समें आज भोजन कौ बन्यौ बान ।
चुम्बन चसक चख मुख मधु व्यंजन बीच बीच अधरामृत पान ॥
अद्भुत भेद मिठास अपरमित उभय स्वाद सद संगम जीवन प्रान।
अध उरध रस उमड़ भीतरी भेंट रोम-रोम रस रमि पुषैं[1] रंग निधान॥
प्रीति परस्पर फेलि फूल मन रीझि लपटात सुभग सनमान।
कर वर निकर विलास नागरीदास अविरल[2] सुख आनंद अमान[3] ॥
⊛'वदन अमी मकरंदी अचवत, सब गुन पाचक कोऊ न अघात।
निरवधि खेल मेल मंगल भर, गरव गहेलरो लाड़ गुमान ॥'

[३१४] राग-केदारो

निसीथ सुरत समें भोजन में लाड़ उछाहु ।
उभय स्वाद सद संगम अद्भुत रस, रोम मरम सुख फूलत नाहु ॥
चुम्बन चसक चख मुख मधु आसिष जुगल कंठ गसि चतुर वाहु।
हस्तामलक मेल खेल परपाटी नागरीदास परचौ कौन निवाहु ॥

[३१५]

कर वर निकर विलास कुतूह ।
निसीथ सुरत समें भोजन कौ औसर गर्वित गुन गन गरव गरूह[4]॥
मुख मधुपान दान चुम्बन चख उभय स्वाद सद संगम सुख समूह।
हस्तामलक मेल नागरीदास वरषत आनन्द रति रस तूह[5] ॥

[३१६]

निसीथ सुरत समें भोजन मीठे ।
चुम्बन चषक चख मुख मधु पीयें उभय स्वाद संगम न उबीठे[6] ।
खात अघात न रुचि रचि पाचक भेदनि भेदी परस्पर डीठे[7] ।
कर वर निकर केलि निसंक न व्रीड़त नागरीदास लाहक दिल ढीठे[8]॥

१- पोषित हो रहे हैं, २- घना, ३- असीम, ⊛ पाठान्तर ४- गौरव, ५- तूठ, संतोष, ६- अघाये, ७- देखना, ८- साहसी ।

[३१७]

निसीथ सुरत समें भोजन में मंडी मंड ।
चुम्बन चसक चख मुख मधु रस न्यारे न्यारे
उभय स्वाद संगम सुख प्रचंड ।।
इक तक इक संवद[१] इक मन मिल
इक मत चलत ललित भुज दंड ।
कर वर निकर विलास नागरीदास
गुन गन भेद विनोदनि ठंड[२] ।।

[३१८] राग-सारंग

उगल्यौ वदन वर भोजन भावै ।
अधरसुधा जुत रसना उलैड़ें यहै प्रीति करि प्रीतम पावै ।।
मकरंदी मद मधु मृदु हँसि हँसि मुख में मुख दिये प्रिया जिवावै ।
नेह नोहरे भोगनि भोगी नागरीदास और कैसे हिय आवै ।।

[३१९] राग-विहागरौ

निसीथ सुरत समें भोजन मंगल लसें ।
चुम्बन चसक चख मुख मधु मैमत उभय स्वाद सद संगम सुख में बसें ।।
भाँति भाँति के लाड़ लड़ावन कर वर निकर केलि विलसें ।
हस्तामलक मेल हित सजनी जू नागरीदास खेल रस रसमसें[३] ।।

[३२०]

निसीथ सुरत समें भोजन में सुभग बान ।
चुंबन चसक चखः मुख मधु प्रमुवित
उभय स्वाद सद संगम सुखनि खान ।।
ठौर ठौर दुर्लभ दुलरावन कर वर निकर विलास सुठानि[४] ।
श्री रसिकसिरोमनि मत्त नागरीदास अपनी हित सुकुवारी जानि ।।

१- वातचीत, २- शीतलता, ३- रस में भीगे हुए, ४- सुन्दर ।

[३२१]

निसीथ सुरत भोग बल फल पूरौं।
चुंबन चसक चख मुख मधुपान करि
उभय स्वाद सद संगम सुख सम्पूरौं[१]॥
कर वर निकर विलास लाड़िली गुननि गंभीर गरब लाड़ सूरौं[२]।
हस्तामलक मेल मंगल मई नागरीदास मद गरब गरूरौं॥

[३२२]

अधर दशन मिलें भोग अैसौई कराइयै।
निसीथ सूरत समें तन मन पोषक रोम मरम संतोष पाइयै॥
इहि औसर यह समौ भोजनी उभय स्वाद सद संगम लड़ाइयै।
चुंबन चसक चख अदल बदल ग्रास नागरीदास हियनिहित छाइयै॥

[३२३]

निसीथ सुरत समें भोजन सुख सम्हार।
चुंबन चसक चख मकरंदो मुख मधु पियें
उभय स्वाद सद संगम रस अपार॥
भाँति भाँति के लाड़ लड़ावन कर वर निकर विलास खेल पसार।
हस्तामलक मेल नागरीदास हित सजनी जू की लाड़ सुढार॥

[३२४] राग-गौरी

कुल मंडन[३] हरिवंश चंद।
वैसाखै वर ग्यास उजियारी सीतल सकल सुख प्रगटे व्यास नंद॥
बजत बधाई सब सुखदाई प्रफुलित रसिक जननि आनंद।
तारा जू जायौ जग चमकायौ नागरीदास भजन मकरंद॥

१- मूल सहित, सम्पूर्ण, २- योद्धा, ३- शोभा।

[३२५] राग-गौरी

प्रात समें उठे दोऊ प्रजंक[1] पर सौरभ सरस स्वाद लपटात ।
लोचन ललित अरुन निसि जागे सुरत अंत पुनि पुनि ललचात ।।
अति रस मत्त सुरत रस सागर बचन रचन कहि मृदु मुसिकात ।
नागरीदास दम्पति सम्पति विलसि विलसि सुख ये न अघात ।।

[३२६] राग-आसावरी

व्यास सुवन खेल ऊधम धौरा ।
अमित रूप गुन दशा अनभती पल पल प्रति सुख औरई औरा ।।
भाँति भाँति के लाड़ लड़ावन विलसत लाल रसिक सिरमौरा ।
रीति समीति कहा कोऊ समझै नागरीदास बाँके मन की दौरा ।।

[३२७] राग-चर्चरी

मुकट वर्द्धन कुँवरि रासमण्डल लसी ।
कसूँभी तन कंचुकी पचरंग काछिनी
नील उपरेंनी कल किंकिनि कटि कसी ।।
अंग अंग रंग उदित मुदित मुख माधुरी
दसन दुति बंक अवलोक ईषद हँसी ।
लाल लोभी ललक अधर मधु पान की
वारि तृन तोरि लै अंक भरि उर गसी ।।
कोक गम्भीर गुन नेह नव नव निपुन
केलि कोविद दोऊ मननि अति रति बसी ।
नागरीदासिनि हास उकत गतिनि हुलास
सुविलास जोरी रास रस रसमसी ।।

[३२८]

निसीथ भोजन सुरत वर मँड़े ।
करवर निकर विलास महोत्सव अंग अंग प्रति आनंद उलड़े ।।

१- शैया, ।

उभय स्वाद सद भेद भीतरी अध उरध अद्भुत सुख उमड़े ।
महा मिठास रोम मरमनि रमि नागरीदासि मद मेल अषड़े ।।

[३२६]

निपट निरसंक निरधोप[२] बेपरवाहि ।
गरव गम्भीर धीर हठ औहठ चल्यौ उलेंड़[३] भजन अवगाहि[४] ।।
श्रवन दृष्टि पथ और न आई अपनोय रीति समीति निवाहि ।
सर्वोपरि वर भुवननि वंदित कौन उझकि[५] सकिहैगो ताहि ।।
कृत्य[६] वृत्य[७] कल व्यास सुवन जू की
सुहृदी सुजन जिय हिय यह चाहि ।
नागरीदास या रस बिन सब भसु[८]सुदृढ़ उपासन हियौ सिराहि ।।

[३३०]

विना कृपा राधारानी की क्योंऽव सरन हितजू की पावै ।
जाको नाम सुनत परवस ह्वै स्याम सहित स्यामा उर आवै ।।
दम्पति रूप रसासव पीवत धर्मी धर्म बिन और न भावै ।
नागरीदास श्रीव्यास सुवन बल नित्य विहार औरनि दरसावै ।।



२- निरंकुश, ३- उमड़ कर, ४- लीन होकर, ५- सिर उठाकर देखना,
६- कार्य, ७- स्वभाव, ८- निरर्थक ।

* जय श्रीराधे *

❀ श्रीनेही नागरीदासजी महाराज ❀

कृत

दोहावली

जब लगि सहज[१] न बदलई, फुरैं न जहँ तहँ भाव ।
पंथ पावनौ कठिन है, कीने कहा बनाव[२] ॥१॥
पावन प्रवल प्रताप बल, डारौ इन्द्री वारि[३] ।
फिर ढंग लागै भजन के, औघट-घाट[४] सुधारि ॥२॥
इन्द्री सबतें रोकिकैं, भजन माँहि मुकराइ[५] ।
जैसे ही जैसे सधै, तैसे ह्वै दै दाइ ॥३॥
जब मन भजनहि लागि है, इन्द्री भोगन खोइ ।
तो लगि पंथ दुहेलरौ[६], दशा पलट नहीं होइ ॥४॥
सुगम सुगम सब कोऊ कहैं, अगम भजन की घात ।
जो लगि ठौर न परसि है कहि आवत है बात ॥५॥
अपने अपने स्वाद तैं, राखैं इन्द्री खैंचि ।
रसद विसद गहि भजन के[७], ठौर-ठौर ही बैंचि ॥६॥
विषै वासना जारि कै, झारि उड़ावै खेह[८] ।
मारग रसिक नरेस कै, तब ढंग लागै देह ॥७॥

१- वहिरङ्ग स्वभाव, २- उपाय, ३- समर्पित, ४- अटपटी दिशा, ५- मुक्त रूप से लगाओ मोड़ो, ६- द्वविधा पूर्ण, कठिन, ७- भजन के समस्त ठिकानों पर त्रिक कर, ८- राख ।

मारग रसिक नरेस के, क्रम क्रम मनहिं सजाइ।
सावधान साधन करै, देहऊ समझि खटाइ ॥८॥
जामें मन की गति नहीं, तामें काढ़ै गात।
श्रीव्यास सुवन पद पाइ बल, इहि विधि निकस्यो जात ॥९॥
सावधान सवही फिरै, जग कौतुक नहि भूल।
रीति जू रसिक नरेस की, मन दै तामें फूल ॥१०॥
तन मन साधे ही फिरै, झूठे लोभ न देइ।
हिये दृष्टि संग भजन के, जहाँ तहाँ सुख लेइ ॥११॥
सहज रसहिं जब मन परै, चौकस इन्द्री होंहि।
तब कारज ढंग भजन के, तजै आपनी गोंहि[१] ॥१२॥
इन्द्री चोकस देखि जो, छांड़ै अपनी घात।
परें मामिले[२] जानिये, फवै भजन की बात ॥१३॥
इन्द्री अपगुन त्यागि कै, जो भजन माँहि ठहराइ।
जहँ तहँ सुख विलसत फिरै, तो कहुँ टोटो नाहिं ॥१४॥
भजन वल इन्द्री हाथ जो, फुरिवौ करिहै भाव।
सव गुन वस्तु विलोकि है, नव नव नित चित चाव ॥१५॥
काचे मन की इन्द्रियें, सिकलें[३] न बाँके घाट।
भजन सवादी होइ कै, लग्यौ रहै जो डाट ॥१६॥
ठौरहि जव मन लागि है, ह्वै है औरहि चित्त।
जहँ तहँ भजनहि देखि है, फिरि है तित ही तित्त ॥१७॥
फिरत रहै मन में मतौ, छाड़ि संतापऽरू सोक।
दृष्टि भजन में फिरि परी, तब औरहि ह्वै गयो लोक ॥१८॥
दृष्टि पलटनो कठिन है, जो कहुँ बदली जाइ।
श्रीगुरु प्रताप पद पाइ बल, भजनहिं हाथ बिकाइ ॥१९॥

१- स्वार्थ को, २- वाह्य प्रपंच, ३- एकत्रित।

को वपुरा चलि जानि है, श्रीरसिक नृपति की बाट ।
कठिन कठिन है निकसिबौ, बाँके बाँके घाट ।।२०।।
परे भाम्मिले जानिये, चौकस देखि बनाइ ।
अनत बटाऊ ना चपै, अपनौऊ पीर पिराइ ।।२१।।
अपनौ कवहुँ न विगरि है, इहि विधि निधरक डोल ।
कोमल करुनावंत अति, निरवाहैं सव बोल ।।२२।।
मूरत नैंनन में रमै, हिय मथि गुन रहै पूरि ।
दशा न कोऊ समझि है, प्रेम पहुचनौ दूरि ।।२३।।
कठिन पहुँचनौ प्रेम कौ, पंथ न निकस्यौ धाइ[1] ।
तन मन दसा समेट सजि, गाढ़े[2] धरने पाइ ।।२४।।
गाढ़े गाढ़े पाइ धरि, देह दशा करि हाथ ।
बाँके मारग पहुँचनौ, लागि भजन के साथ ।।२५।।
मन जु विचार द्रव्यौ[3] रहै, चित्त रमीले रूप ।
तन लागै ढंग भजन के, यह कल गैल[4] अनूप ।।२६।।
जहँ तहँ और न सूझई, वस्तुहि लागै दौर ।
श्रीरसिक नृपति मारग गहै, तब सब आवें सौर[5] ।।२७।।
वस्तु विचारत ही फिरै, भाँति भाँति के दाइ ।
तन मन भजनहि सानि तब, गाढ़ें धरने पाइ ।।२८।।
भजन भजन सव कोऊ कहै, मारग लगनौ दूर ।
इन्द्री तन गुन भजन के, जव मिल वैगौ चूर ।।२९।।
जाहि भजन घेरें फिरै, सो भजनीय विचारि ।
तो लगि निधरकता कहाँ, परै नहीं जो ढ़ारि ।।३०।।
ताहि सकेलै[6] भजन है, भजन रम्यौ जा प्रान ।
मन मन ताकें हीं फिरै, यह दुहूँ कोद[7] सयान ।।३१।।

१- दौड़कर, २- स्थिरता पूर्वक, ३- पिघला हुआ, ४- रास्ता, ५- पराक्रम, ६- समेटता है, ७- ओर ।

सहज मित्रता भजन सौं, जब परिहै मन ढारु।
सावधान चित चित है, श्रीव्यास सुवन पद चारु[१] ॥३२॥
चारू चरन कौ विपुल बल, सावधान उर आन।
श्रीहरिवंश सहाय जो, जहँ तहँ बनि रह्यौ बान[२] ॥३३॥
जहँ तहँ बान्यौ बनि रह्यौ,जो रसिक नृपति पद हेत।
श्रीहरिवंश कृपाल प्रभु, चारु चरन चित चेत ॥३४॥
चारु चरन चित चितवन, निधरक सब ही डोल।
अलक लड़ौ[३] गाहक मिल्यौ, ह्वै ही निवर्‌यौ[४] मोल॥३५॥
बिकानौ[५] ताही ढंग चलै, जिहि ढंग धनी सुहाइ।
तव चूकेऊ बकसि[६] है, जिय[७] की मार न खाइ ॥३६॥
श्रीव्यास सुवन पद विमल तकि,बिकाने बिन नहि काज।
प्रकृति लिये चलि जानि है, हाथ परै सब साज ॥३७॥
मारग रसिक नरेस के, निपट विकट है चाल।
तन मन औंटि सिराय गरि, वृथा बजावत गाल ॥३८॥
असि[८] धारा पथ निवहिनौ, चलि जो राखे चित्त।
डग मगाइ पति[९] खोइ है, जीवन जनम सु वित्त ॥३९॥
धरैं हिये मधि डोलि हौं, सबकों माथौं नाइ।
जाचौं राचौं कहुँ नहीं, परिपूरन बल पाइ ॥४०॥
श्रीव्यास सुवन पद बल बिना, परिहै ओस की सोत।
करि विवेक चित आपनै, कहुँ सिघ खेल के होत ॥४१॥
यह मन मारि जिवाइये, जियत न आवै काज।
गैल जु रसिक नरेस की, चलनौ है तिहि साज ॥४२॥
संग सहायक भजन बिन, फीकौ सब बस बास।
सोई ठाहर[१०] अन खावनौ, जहाँ न प्रेम प्रकास ॥४३॥

१- सुन्दर, २- बानक, ३- लाड़ला, दुलारा, ४- सम्पूर्ण मूल्य, ५- विका हुआ, ६- क्षमा, ७-मानसिक क्लेश, ८-तलवार, ९- स्वामी, प्रतिष्ठा १०- स्थान।

प्रेम प्रकाश प्रभाव चलि, तजि ऊजर[१] अंधेर।
श्रीव्यास सुवन वाणी बिना, जहाँ तहाँ पाखंड फेर[२] ॥४४॥
जिनके बल निधरक हुते, ते बैरी भये बाल[३]।
तरकस के सर साँप ह्वै, फिरि फिरि लागै खान ॥४५॥
अँखियाँ तक[४] लागी रहैं, जक[५] लागी रहै प्रान।
धक लागी काया फिरै, लक[६] लागी रहै ठान[७] ॥४६॥
हिये हिलग की पीव की, भरि[८] सरीर न माइ।
मरमी बिनु को जानि है, कासौं कहौं सुनाइ ॥४७॥
हिये कपट की नहि छिपै, उघरहि आवे अन्त।
मुख करि कछु न जनावई, शुद्ध सुहागिल कन्त ॥४८॥
दृष्टि भजन छाई फिरै, नई नई रुचि प्रान।
मुख गुन कहैं लड़ावनौं, उपमें रूप सयान ॥४९॥
भजन बिचार रहै जहाँ, तहाँ न काज तमास।
तन मन अन्तर छाड़िकै, लीने बने धमास ॥५०॥
महा छुधित इंद्रीनि ज्यों, भोजन दिये संतोष।
यातैं अति धर्मी मिले, तन मन जिय हिय पोष ॥५१॥
सहज सुहृदता भजन की, कोऊ न समझन हार।
अलक लड़ी वाणी रस्यौ, ताही के सिर भार ॥५२॥
श्रीव्यास सुवन वाणी रस्यौ, ताही में सब लौन[९]।
कुल गुन रूप घिनाबनौ, तिन तन चितवै कौन ॥५३॥
कहाँ जाइ मन छाड़ि कै, चरन कमल सन बंध।
श्रीव्यास सुवन कहि जानि है,सोई प्रिय आतम बंध ॥५४॥
श्रीव्याससुवन पद बिमल सौं, परै हिलगि कौ काम।
सब गुन सकल बिलास सहि[१०] निज उर स्यामा स्याम ॥५५॥

१- उजाड़, उजाला, २- चक्र, ३- टकटकी, ४- धुन, ५- उमंग, ६- लगन,
७- ठिकाने पर, ८- आधिक्य, समूह, ९- लावण्य, १०- सहन करना।

श्रीव्याससुवन पद विमल रुचि, चित ज्यौं चिहुटे[१] चौंप[२]।
भजन बेलि ऊर प्रेम जमि, नव प्रसून फल कौंप ।।५६।।
श्रीव्यास सुवन बानी रमैं, तव परिपूरन साध।
जामें प्रगट जू देखियत, नव गुन निपुन अगाध ।।५७।।
वानी श्रीहरिवंश की, उर धरि पूरन काज।
जगत निवादिल[३] स्वाद तैं, पलट परै सब साज ।।५८।।
पद पंकज हिय आय हैं, रसिक सिरोमनि राज।
तव ताढ़ंग गुन काज के, परै भजन मन लाज ।।५९।।
विमल भक्ति तन मन खच्यौ[४], छाड़ि लोक उपहास।
तासों नेह निरन्तरौ, जा उर भजन प्रकास ।।६०।।
श्रीव्यास सुवन पद जुगल मृदु, उर रति रमैं हुलास।
तबही भजन निरन्तरौ, निश्चयै नागरीदास ।।६१।।
नागरीदास अविचल सदा, वृन्दावन निधि माँहि।
सोइ सब भाँतिन सोहियै, श्रीव्यास सुवन पद छाँहि ।।६२।।
श्रीव्यास सुवन वानी रम्यौ, सोई भजन भजनीय।
नेह निरन्तर राखि चित, छाए ही फिरि होय ।।६३।।
श्रीव्यास सुवन पद छाँह रुचि, तेई वृन्दावन वास।
हस्त परै मुद्दा[५] सकल, इहि बल नागरीदास ।।६४।।
जहाँ भजन कौ भेद[६] है, तासों कैसी बानि[७]।
हियैं विचार विचारि यौं, छोड़ै केतिक हानि ।।६५।।
ऐसौ छाड़े क्यों वने, जाकैं भजन हुलास।
अन्तर दीने हानि है, दरस परस ता पास ।।६६।।
ताहि विसारें कठिन उर, भजन हियैं मुरझाइ।
ताते सुहृद[८] विचार चित, हित लै गहनै पाइ ।।६७।।

१- चिपटाना, २- चाव, ३- हानिकर, ४- जड़ गया, ५- भेद, अभिप्राय, ६- मर्म, ७- आदत, वनावट, ८- मित्र।

सुहृद सनेही सेईये, हिये भजन कौ ठौर।
वस्तुहि देखि लड़ावनौ, काज न आवै और ॥६८॥
सुहृदी भजनी पाइ कै, उर में हुलसे हेत[१]।
ताही ढंग ढरि ढारि मन, भये न बने अचेत ॥६९॥
सुहृदी की छाया द्रव्यौ, राखैं ही रहिये देह।
दरस परस जूठन लियें, सहज भजन बढ़ै नेह ॥७०॥
भजनी सुहृदी पाइ कै, तहाँ न और विचार।
अंतर[२] छांड़े खेलनौ, यहै भजन निज ढार ॥७१॥
मन गुन दशा सकेल[३] सुख, अंबुद[४] अरुक[५] सनेह।
विमल भजन में[६] विमल परि,एक ही ह्वै गये देह ॥७२॥
सुहृद प्रेम के चाइ चलि, पाल भजन सुख देह।
श्रीव्याससुवन वानी विमल, जतन जतन गहि नेह ॥७३॥
यातै सूधौ ना चलौं, ऊवट ऊवट[७] जाऊँ।
सैंयाँ मेरौ ओहठी, जग मग लगत डराऊँ ॥७४॥
मारग लागे जगत के, साधुहि आवै लाज।
भजन बिचार हिये नहीं, तो गनिका कौ साज ॥७५॥
दोऊ कठिन मन कौं भई, मुख कै क्यों कही जाइ।
मरमी होइ सु जानि है, आवै रोइ न गाइ ॥७६॥
जगमग लागे की सकुचि, हँसि है खसम घिनाइ।
यातें मारग जगत के, सकों नहीं धर पाइ ॥७७॥
श्रीव्याससुवन मुख उच्चरी, सोई तन सुख कौ धाम।
कौन काज यह जग भर्‌यौ, मो ताही सौं काम ॥७८॥
रति नाते श्रीहरिवंश सों, मानि सबै मन मूढ़।
श्रीवृन्दावन सुख उर रमैं, गहल[८] भजन गुन गूढ़ ॥७९॥

१- प्रीति, २- आड़, दूरी, ३- समेटन, ४- बादल, ५- न रुकने वाला, ६- मस्त हो जा, ७- उलटा, ८- गंभीर।

सावधान यह चाल चलि, कछु न करै अकुलाइ।
श्रीव्याससुवन बानी चढ़ै, पग डग मगै पति जाइ ॥८०॥
पग डगमगें जीवन वृथा, पति बिन जत[1] गति हानि।
श्रीव्याससुवन वाणी विमल, गहि गाढ़ी पहिचानि ॥८१॥
श्रीव्याससुवन ठहराइ है, सोई पति गति गूढ़।
बेपरवाही डोलि है, विमल भजन आरूढ़ ॥८२॥
सब विधि बाँकी अगम गति, श्रीरसिक नृपति की गैल।
बानी गहि चलि जानि है, बेपरवाही छैल ॥८३॥
श्रीव्याससुवन वानी रमै, तासौं रति चित जोरि।
मेरे खाली खलक[2] सब, काहे लागै सोर[3] ⊛ ॥८४॥
भजन विना खाली खलक, झूठे मारग लागि।
श्रीव्याससुवन पद विमल रुचि, जोवन जनम सुभाग ॥८५॥
श्रीरसिक नृपति कल चाल चलि, बाँकी जियहि प्रवोध[4]।
सावधान चित चरचि[5] कैं, गहियै तन मन सोध ॥८६॥
तन मन सोधि सजाइ कै, वाँकी चालहि लाग।
सोवत सिंह खखेर कैं, तब क्यों बचि है भाग ॥८७॥
वानी रसिक नरेस की, सहसा हाथ न नाइ[6]।
फिर ज्योंकालौं[7] लागि है, परि है गुदी उपाइ ॥८८॥
श्रीरसिक नृपति गुन सोधि हिय, चारु चरन चित आन।
वानी हित तन मन अरपि, तव लहियै पहिचान ॥८९॥
वानी श्रीहरिवंश की, जौं लौं न हिये रमाय।
बाँधे वधिक विहँग ज्यौं, हाटैं हाट बिकाय ॥९०॥
श्रीरसिक नृपति वानी रमै, तव साँचौ ठिक ठौर।
गम्भीर गाढ़े धर्म बिनु, नहीं भरोसौ और ॥९१॥

१- यति, विश्राम, २- संसार, ३- प्रशंसा, ४- सचेत कर, ५- लेप कर, लिप्त हो कर, ६- डालो, ७- जोंक की तरह। ⊛ [illegible] कोरि = किनारा, करोड़।

कोमल करुना कुशल कल, सब गुन रस रमनीय ।
वानी मंगल मोद निधि, सावधान गहि हीय ।।९२।।
सुभग सलौनी सरस सुख, सुन्दर सुलस[1] सुकुँवारि ।
सब सच समरथ सेइयै, सुलस सुधा सर सार ।।९३।।
जामें सबै सँभार है, सार सुखन की भीर ।
काज सहज ही आइहै, वानी गुन गम्भीर ।।९४।।
मृदु मधुरी मंगल महा, मोद मान मकरन्द ।
कारज वानी उर रमै, गुननिधि आनन्द कन्द ।।९५।।
मंगल रूप अनूप गुन, वानी सौं मन सानि ।
तेई वस्तु[2] निरन्तरौ, तै सिये परि है वानि ।।९६।।
जैसिय भजन की बानि मन, तैसी ताकी कानि[3] ।
ऐसैं मिलन निरन्तरौ, निहचै यह जिय जानि ।।९७।।
स्वारथ में जग पातरौ, चपै[4] न परिहै भार ।
जहां सुहृदता भजन की, तहांई प्रेम पसार ।।९८।।
आनन्द सिंधु अगाध गुन, वानी वर विस्तार ।
कोलाहल कौतुक निपुन, नागर रुचिर उदार ।।९९।।
तन मन भजनहिं ढुरि लगै, खगै[5] चित्त रुचि राचि ।
श्रीरसिक नृपति पद विमलजुग⊛, पावन प्राननि पाचि[6] ।।१००।।
श्रीरसिक नृपति पद विमल जुग, परपूरन आनंद ।
सेवत निरभै डोलि है, निधरक निपट सुछंद ।।१०१।।
श्रीव्याससुवन पद विमल बल, कीनी उघरि सजाइ ।
भजन सुहृद की चाल कल, चल्यौ निसान बजाइ ।।१०२।।
भजन सुहृद की चाल कल, सीस भजन लै भार ।
सुहृद चाल चलें ही बने, कहा करै संसार ।।१०३।।
श्रीव्यास सुवन वानी गहै,

१- आकर्षक, सुशोभनीय, २- लक्ष्य, ३- लाज, मर्यादा, ४- संकोच करने से
५- अनुरक्त हो, ६- लगाओ । ⊛ पाठान्तर—परेम निधि ।

श्रीव्याससुवन वानी अमल, अति गुन अमित अगाध ।
मोद विनोद लड़ावने, लोभ ललक रति साध ॥१०४॥
कहिबौ सुनिबौ कछु नहीं, देख्यौ यह ठहराइ ।
तौ लगि चोभा[1] ऊपरी, जो नहि पीर पिराइ ॥१०५॥
सदा सोच हिय में रहै, मन नहीं पकरै धीर ।
कहा कहि उघरि सुनाइयै, हियैं हिलग की पीर ॥१०६॥
श्रीरसिक नृपति वानी अमल, हियैं चरण गहि सेव[2]।
तन मन दसा सकेलि चलि, तव कछु पावै भेव[3] ॥१०७॥
रोचक वस्तुहि देखिकें, राख्यौ मन बहराय[4] ।
भजन कसक हियरा बसै, सो क्यों हँसै हहराय[5] ॥१०८॥
प्रेम सोच मन में जहां, तहां हिलग[6] की पीर ।
सोई लगनहिं जानि है, मरमी भजन गम्भीर ॥१०९॥
मरमी भजन गम्भीर बिनु, को लहै मरम की चोट ।
तन मन कोरौ ह्वै गयौ, लिये भजन की ओट ॥११०॥
सदा सोच मन तैं परै, चपै[7] प्रेम भर भार ।
विमल भजन की ललक के, विरले समझन हार ॥१११॥
विरले समझैं पेच[8] यह, प्रेम भजन की चाल ।
वानी हित चित आइ है, रसिक सिरोमनि लाल ॥११२॥
भजन प्रेम के पेच गुन, वानी मांझ विचारि ।
कोलाहल कौतुक निपुन, सुख निधि नेह निहारि ॥११३॥
अति अगाध आनंद अमल, प्रेम ललक रस मूल ।
हास विलास हुलास में, वानी में मति❁ फूल ॥११४॥
वानी जान्यौ जानि है, रसिक नृपति दै दीठ ।
डरकि प्रेम भजनहि मिल्यौ, सहज ही सब तन पीठ ॥११५॥

१- चुभन, कसक, २- सेवन करौ, ३- भेद, ४- वहला कर, ५- खिल खिलाकर, ६- लगन, अटक, ७- दवना, ८- पेंच । ❁पाठान्तर—अति ।

एकहि जिय सौं काज है, काहे लागै लाख।
श्रीव्याससुवन कहि जानि है, ताही में ललसाख[1] ॥११६॥
सूरौ अपने धरम कौ, पूरौ परि है काज।
गुननि समूरौ देखियै, रूरौ रूरौ[2] साज ॥११७॥
सूरौ पूरौ भजन कौ, कायर जग की चाल।
सैयाँ सुहागिल सोभियै, उपहासै पटघाल[3] ॥११८॥
सैयाँ सलौनौ सोहिलौ, मोहिल मनहिं हिलाव।
निरुपम नागर नेह निधि, रसिक मणि हियें लड़ाव ॥११९॥
कहा कहि उघरि जनाइये, मरम धरम हृद मेल।
श्रीव्यास सुवन रस रीति कौ, खरौ कठिन है खेल ॥१२०॥
क्यों करि प्रगट दिखाइये, मरम धरम हृद बाध।
श्रीव्यास सुवन वर कर परे, गुन गन अमित अगाध ॥१२१॥
प्रेम चौंप की चाल चलि, पल नहिं ललक बिहात।
वरषा रितु हित चित छयौ, ठाले द्यौस न रात ॥१२२॥
वरषा रितु बहु भाँति के, मेह नेह आभास।
सोई हियरा जानि है, जहाँ प्रेम कौ बास ॥१२३॥
हौं श्रीरसिक नरेस कौ, ताकौं कहूँ न टोट।
जहाँ तहाँ पूरी परि रही, श्रीव्याससुवन पद ओट ॥१२४॥
टोटौ सब पूरौ परै, श्रीव्याससुवन पद प्रेम।
ओछेऊ आछे देखिये, रौ[4] तत्र कुशल अरु खेम ॥१२५॥
सबही विधि निधरक सदा, श्रीव्याससुवन पद छाँह।
कौतुक मंगल माधुरी, सुख रस जस या माँह ॥१२६॥
एक चाल ऐसी कठिन, जा आगे सब दम्भ।
सोई भजन सँभार गहि, जहाँ अनभै[5] सुख आरंभ ॥१२७॥

१- ललक, चाव, २- श्रेष्ठ, उत्तम, ३- पदां छोड़कर, ४- चाल, ढंग, ५- निर्भय, अनुभव।

श्रीव्यास सुवन वानी रम्यौ, विमल भजन करि देह ।
सबही भाँतिन सोभिये, लाड़ लड़ावन नेह ।।१२८।।
मुरकि न जानै बावरौ, जैसे रण कौ धीर ।
श्रीव्याससुवन पद लाज रज, मरमी भजन गंभीर ।।१२६।।
श्रीव्याससुवन पद माधुरी, लियैं सुजन सन्तोष ।
तन मन प्राणन पुष्टता, श्रीरसिक नृपति रस पोष ।।१३०।।
श्रीव्याससुवन वानी अगह, को पहुँचै इहि चाल ।
प्रेम भजन रति मन बिंध्यौ, कहाँ ह्वै पावै ढाल ।।१३१।।
आछी उत्तम अनभतो१, उज्वल अति ही अनूप ।
परम प्रवीन नवीन गुन, वानी मंगल रूप ।।१३२।।
मंगलकारी सुख मई, नव गुन निपुन सुनेह ।
वानी हिये हिताइ२ तब, रमें प्रान मन देह ।।१३३।।
प्रान देह मन जब रमैं, श्रीरसिक सिरोमनि रीति ।
सर्वोपरि वर देखियै, चलौ भजन जग जीति ।।१३४।।
जगत जीति जिन भजन बल, श्रीव्याससुवन पद नेह ।
बाकी३ भटकत देखियत, घर घर के भये देह ।।१३५।।
ठाल४ न पावै मन कहूँ, प्रेम सुढौरी५ लागि ।
विमल भजन कल चाल में, परै जगत तैं जागि ।।१३६।।
जौं लौं न जग तैं जागि कैं, परै भजन की गैल ।
तौ लगि कैसे निखरि है, विषैं वासना मैल ।।१३७।।
विषै वासना भजन जर, प्रेम नीर उर धोइ ।
श्रीव्याससुवन पद विमल रमि, सब विधि उज्वल होइ ।।१३८।।
जग उपहासै भय मिटी, कहा करै कोऊ कोप ।
जहाँ भजन कौ बल हियें, सोई निसंक निर्धोप६ ।।१३९।।

१- अनुभव, पूर्ण, २- हित करैं, ३-और सब, ४- अवकाश, फुर्सत, ५- सुडोल, सुदृढ़, ६- निरंकुश ।

जहाँ भजन कौ बल हियें, तहाँ न बाधा भीर।
असहन निन्दक खल जिते, नै[१] ह्वै चलि है नीर ॥१४०॥
निबट[२] भये जे भजन के, तिन्हैं दुखैहै कौन।
स्वामी द्रोही सेवकहिं, फूटि निकरि है लौन ॥१४१॥
श्रीरसिक नृपति हरिवंश के, पाँय हितानै प्रान।
भेद भजन मन कढ़ि परै, उत्तम उत्तम ठान ॥१४२॥
पाँय हितानै प्रान जब, तव सव उत्तम चाल।
अतुलित सुख वर भजन कै, आगै ठाढ़े हाल[३] ॥१४३॥
चरनकमल श्रीव्यास सुत, जिय में हेत हितात।
ततछन बस्तुहि मन मिलै, भये भजन मय गात ॥१४४॥
ताकों कहुँ बाधा नहीं, साध बड़ी रस रीति।
बेपरवाही भजन बल, दुस्तर दुर्घट जीति ॥१४५॥
श्रीरसिक नृपति पद जब हिये, तव न कछू परवाह।
साध अगाधनि सुख भरी, वानी रुचि अवगाह ॥१४६॥
बेपरवाही सेइ पद, रसिक सिरोमनि राइ।
कोलाहल कौतुक कुशल, कोमल सुख समुदाइ ॥१४७॥
नागौ नाँचौ जगत कौ, छाँड़ि लाज पति कान।
यहै भलैं भयें भजन की, सही जाति नहीं हान ॥१४८॥
जगत भलाई भजन नहिं, भजन भलैं जग जाहु।
आतम मित्र विछोह कै, को वसि है दुखदाहु[४] ॥१४९॥
जहाँ तहाँ काम है भजन सौं, जग डहकै बैलाय[५]।
छल बल अपने अंग करि, सबनि लगाई बाय[६] ॥१५०॥
मैले मारग जिन चलै, उज्वल आछैं लाग।
भजन रतन जतननि मिल्यौ, घर घर जिन करै साग ॥१५१॥

१- नम्र होकर, २- निवृत्त होकर, ३- तुरन्त, ४- जलन, ५- डहकना, विलाप-करना, ६- विपत्ति।

सदा सोच मन में रहै, परी जाय जिय झाँखि[1] ।
वह चितवन कछु और है, प्रेम जु बींधी आँखि ।।१५२।।
प्रेम गहें मन नैंन जे, तिनकी चितवन आन ।
जाके हियरा हिलगि है, सोई जानै जान ।।१५३।।
प्रेम हिलग की दीठि दृग, लागि रहे जिहि ठौर ।
कछू कठिन सौ पेच है, बाके मन की दौर ।।१५४।।
तन मन दसा बदल गई, हिये हिलग के भार ।
तिन अँखियन की कठिन है, ढरी प्रेम ढँग ढार ।।१५५।।
श्रीव्याससुवन पद प्रेमनिधि, नेकहुँ चित्त समाज ।
सुहृद भजन जब हिय बसै, सहज सुगम सब काज ।।१५६।।
श्रीव्याससुवन पद सद प्रबल, ओट लियें आनन्द ।
भजन सार सुहृदी हियौ, गुन गन सब सुखकन्द ।।१५७।।
श्रीव्याससुवन पद उर जहाँ, तहाँ भजन परिपूर ।
संतत सीतल सुहृद सुख, सुकृती सज्जन सूर ।।१५८।।
मन कौ साहस कहाँ बँधै, भजन की चाल अगाध ।
श्रीव्याससुवन पद बल बिना, कतहि[2] करौ कोऊ साध ।।१५९।।
साध अगाधनि क्यों लहै, जौ लौं न हिये उपास ।
श्रीव्याससुवन पद विमल तरु, करि मन रति निज बास ।।१६०।।
सार सच्यौ[3] हरिवंश जू, रचि अद्भुत रस रीति ।
तलप लाड़ लालन सुघर, ललना लाल समीत ।।१६१।।
श्रीव्याससुवन वानी बिना, जहाँ तहाँ प्रकृति विरुद्ध ।
अनत न दिखियत भजन के, सुहृदी आतम सुद्ध ।।१६२।।
तन मन उज्वल सुचि सदा, सुहृद भजन सत भाव ।
कोमल हियरा वस्तु भरि, श्रीव्याससुवन पद चाव ।।१६३।।

१- खोझ, छिद्र, २- कितनी हो, ३- सजाया ।

श्रीव्याससुवन पद चाव जहाँ, रोचक रुचिर रमाइ।
हिये भजन छायौ फिरै, मंगल में दिन जाइ ॥१६४॥
जहाँ निखालस सुहृदता, कठिन भजन की ठौर।
श्रीरसिक सिरोमनि चाल कल, गाढ़े मन की दौर ॥१६५॥
गाढ़े मन की दौर है, भेद न पावै कोइ।
श्रीरसिक नृपति पाछौं गहैं, तन मन सहजहि खोइ ॥१६६॥
श्रीरसिक सिरोमनि भजन तें, गाढ़ी गर्वित घात[1]।
वस्तुहू तें अति जगमगै, अलकलड़ै[2] की बात ॥१६७॥
अलकलड़ैते लाल की, बात न पहुँची जाइ।
कढ़ी[3] रहै कल भजन में, सब ता माँहि समाइ ॥१६८॥
बातहि माँहि समाइ सब, वह न आश्रवै आन।
भजन वस्तु तामें मिलै, दुहुँ[4] कौ प्रेम सुप्रान ॥१६९॥
परम प्रेम पर प्रान प्रिय, श्रीव्याससुवन के बैन।
सुख सर्वस शुभ भजन कौ, कोऊ पहुँच सकै न ॥१७०॥
वस्तु उछाह छई फिरै, चतुर सिरोमनि वाक।
विविधि विलासनि मोद मद, बढ़त वचन वर ताक ॥१७१॥
भजन भेद वर चातुरी, गुन गन गर्वित लीन।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, वानी प्रेम प्रवीन ॥१७२॥
वानी प्रेम प्रवीन प्रिय, प्रबल प्रताप प्रकास।
सब सुख जामें सोभियै, मंगल मोद हुलास ॥१७३॥
श्रीव्याससुवन हिय मुख कढ़ै, पढ़ि रढ़ि कढ़िजंजार।
श्रीवृन्दावन मति रति बिना, वृथा लियौ सिर भार ॥१७४॥
वृथा भार सिर कत[5] धर्‌यौ,कर्‌यौ न भजन विचार।
श्रीव्याससुवन पद सरन बिनु, सब श्रम भ्रम जंजार ॥१७५॥

१- अवसर, २- श्रीहित महाप्रभु, ३- उभरी रहती है, ४- युगल का, ५- क्यों।

पाद पद्म हरिवंश प्रभु, मन मधुव्रत[१] धर राँचि।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल कौ, सदका[२] संतत जाँचि ।।१७६।।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, सदका ही सब होइ।
पद पदवी वृन्दाविपिन, मंगल मनहि समोइ[३] ।।१७७।।
श्रीरसिक नृपति माती दसा, उमगि कहे मृदु बैन।
कोलाहल कौतुक कुशल, भांति भाँति सुख चैन ।।१७८।।
भाँति भाँति सुख चैन भरि, भीर गम्भीर गरूर।
श्रीव्याससुवन कल खेल मृदु, घूमत मन मद घूर[४]।।१७९।।
विमल विजूझे प्रेम पर, जग जंजालहि दाबि।
श्रीरसिक सिरोमनि बल पूरी परै,वानी मधि मन गाभि[५]।।१८०।।
वचन रचन महिमा महा, को कहि सकै अपार।
श्रीवृन्दावन निधि सोभियै, भरि वानी भर भार ।।१८१।।
श्रीव्याससुवन पद बल जहाँ, हिये भजन सत भाव।
सरस रीति में मन परै, बढ्यौ रहै चित चाव ।।१८२।।
भजन सुहृदता चाइ चित, उर पद रसिक नरेस।
तेई वस्तुहि पहुँचि हैं, और न लेस प्रवेस ।।१८३।।
लेस प्रवेस न पावई, वस्तु कठिन अति ठौर।
श्रीव्याससुवन पदवी[६] बिना, खिसल परै मन दौर ।।१८४।।
आवर धावर धक लगै, आइय जात है आयु।
श्रीगुरु चरननि गहि भजन, कब दैहैगौ दाय ।।१८५।।
रीति रमै श्रीरसिक मनि, प्रीति हिये विस्तार।
वानी विमल वर मन बसै, सुख के सुख कौ सार ।।१८६।।
वर सुख सार सवाद सद, सौरफ सुभग समूर।
गुननि गहल गम्भीर गति, वानी गर्व गरूर ।।१८७।।

१- अनन्य प्रेम, २- कृपा, ३- मिलाओ, ४- टकटकी लगाकर देखना, ५- गढ़ाओ, लगाओ, ६- स्थिति।

भजन सार सम्पति सचौ, श्रीव्याससुवन सुख ठान ।
दूरि ठिकाने पहुँचनौ, चलि ढंग तेई सयान ॥१८८॥
तेई ढंग सयान चलि, श्रीरसिक नृपति रस खेल ।
जहां द्रवत मकरंद मधु, दुर्घट दुर्लभ मेल ॥१८९॥
उचक्यो उचक्यो मन फिरै, नेंकु न कहुँ ठहराइ ।
रूप अनूपम इन्द्रियनि, छबि दबि भरि नहिं जाइ ॥१९०॥
रूप अनूप के कूप परि, मन नहिं बूँद अघाइ ।
जौं लगि हियौ न भरि उठै, याही तैं अकुलाइ ॥१९१॥
धरमी अपनौ ना मिलै, तौ लगि है संताप ।
भजन हियें हुलसै नहीं, कहाँ लौं भरिये पाप ॥१९२॥
जौं लौं न मिलैं प्रिय भजन कौ, तौ लगि दुख दारिद्र ।
धरमी मरमी बिनु सबै, ताकौ झूठौ छिद्र ॥१९३॥
जहाँ न अपने धरम कौ, तहाँइ जग अन्धेर ।
कासौं मिलि कै विरमियै, जित तित पाखन्ड फेर ॥१९४॥
धरमी मरमी भजन कौ, तहां सकल सुख साज ।
विमल वस्तु में मन परै, सुकृती सुहृद समाज ॥१९५॥
सुहृद सजाती बापुरौ, मरम धरम को मूर ।
कौन काज जग जाजरौ[१], कुच्छित[२] कायर कूर ॥१९६॥
कुच्छित कायर कूर में, जहाँ तहाँ भजन सहाउ ।
मनसा वाचा सेईये, श्रीव्याससुवन जू के पाँउ ॥१९७॥
धरम न भूलै भरम[३] करि, सरम करम के लागि ।
श्रीव्याससुवन पद प्रेम गहि, पगहि बस्तु में जागि ॥१९८॥
चकरी ज्यों मन जिन फिरै, झूठे जग जंजार ।
विमल भजन में दाबिये, पावै न जान निवार[४] ॥१९९॥

१- जीर्ण, २- कुत्सित, ३- भ्रम, ४- निवारण कर।

भेद भजन मन ढरि परै, चढ़ि बढ़ि चातुर चाइ[१] ।
जहाँ तहाँ वस्तु विचारनै, ज्यौं त्यौं दाइ उपाइ ॥२००॥
सोई दाइ उपाइ बल, चित बित हित थित ठौर ।
और सकल जग बूड़ि है, एक भजन में सौर[२] ॥२०१॥
मन की वृत्ति लगी रहै, रूप चिहुठ[३] चित चाव ।
भजन स्वाद इंद्री परैं, ये सब दाव उपाव ॥२०२॥
सहसा सीर[४] सु भजन सौं, एकई परम प्रतीति ।
ढरकि लगै मन ऊजरै, श्रीव्याससुवन पद प्रीति ॥२०३॥
जातैं मन पूरी परै, सोई दैनै दाइ ।
आन आसरे छांड़ि कन, ओस न प्यास बुझाइ ॥२०४॥
ओस कनूका क्यों मिटै, ग्रीसम रितु अति प्यास ।
श्रीरसिक नरेस सँभार मन, पूरन करिहै आस ॥२०५॥
मोमें नाहीं बल कछू, चरन कमल की ओट ।
श्रीहरिवंश दयानिधे, बाढ़ै गनौ न टोट[५] ॥२०६॥
जहां पाखंड तहां बिगरि है, जहां सुहृदता काज ।
जब ही ह्वै है भजन कौ, श्रीगुरु प्रेम समाज ॥२०७॥
भ्रम जिन भूलौ लोग हो, झूठे जग कौ साज ।
श्रीगुरु चरननि सेइयौ, नहीं भजन बिनु काज ॥२०८॥
गुरु प्रसाद तैं प्रभु भजै, जगत गननि[६] तैं छूटि ।
तन धरि यह ही काज है, भजन रतन बड़ी लूटि ॥२०९॥
तहां न चित्त मिलाइये, जहां मन में अहमेव[७] ।
देखि बिचारहिं छांड़िये, जबहि जानिबे जेब[८] ॥२१०॥
प्रेम गह्यौ ज्यौ जासकौ, ताहि न और सुहाइ ।
तिनहीं तिन खोजत फिरै, जग कहै लागी वाइ[९] ॥२११॥

१- चाव, २- शौर्य, पराक्रम, ३- लालसा, ४- साझा, ५- अभाव, ६- लोगों-से, ७- अहंकार, ८- शोभा, ९- वायु, हवा ।

भजन सुहृद हिय में नहीं, तौ लगि झूठौ मेल।
नट की सी बाजी रची, चेंटक कौ सौ खेल ॥२१२॥
सब भाँतिन सौं सोभिये, नई भजन मन फूल।
जाके चित हित आय है, श्रीव्याससुवन पद मूल ॥२१३॥
श्रीव्याससुवन पद मूल बिनु, फूल न भजन परकास।
वस्तु संपदा सार सुख, चरनकमल विस्वास ॥२१४॥
बिनु अपने जिय भाँवते, सब आछे तन पीठ।
पर पति देखे पतिव्रता, चितवत लाजै दीठ ॥२१५॥
रवने[1] अति अनखावने[2], तहाँ न सुहृद मिलाप।
अपने प्यारे प्रान के, बिन भरियतु है पाप ॥२१६॥
प्यारौ अपने प्रान कौ, तहाँ सुख सबही भाँति।
जगत उजारौ देखियतु, जगमगात कल काँति ॥२१७॥
तन मन प्राननि अर्प कें, एक नेह की आस।
बरखा रितु हिय मन बनै, व्यापै भूख न प्यास ॥२१८॥
ललक लपेट खिंच्यौ फिरै, को पावै यह भेव।
निसि दिन तकि लागी रहै, प्रान हिलग है जेव ॥२१९॥
प्रेम हिलग जियरा गह्यौ, चित में चौंप[3] चपेट।
मन में रूप रम्यौ रहै, हियरा ललक खखेट[4] ॥२२०॥
रूप झकोरनि मन झपै, बूड़ि बूड़ि उछकाइ।
अंग अंग पानिप उररमी, ज्यौं जकि थकि अकुलाइ ॥२२१॥
प्रेम विदूखे ना बनै, पोखै सकल सवार।
ज्यौं त्यौं ही करि राखियै, मन कल कोमल भार ॥२२२॥
प्रेम दब्यौ स्वादिल सदा, सरस सलौनी वानि।
प्यारो नेह विसार चित, बहुतै जाम[5] बिहान ॥२२३॥

१- रमण करने वाले, २- खिझाने वाले, ३- लालसा, ४- चोट, घाव, ५- प्रहर।

काज साज काज न करै, जहाँ तहाँ एकै प्रेम।
उलटे पुलटे सोभिये, फोट्यौ[१] नागर नेम ॥२२४॥
चोखो चाखौ चक चकौ, सरस वस्तु मन ठारु[२]।
श्रीव्याससुवन पद उर धरै, सोहै भजन सिंगारु ॥२२५॥
अलक लड़ैते लाल की, को पावैगौ बात।
भजन वस्तु गुन चातुरी, तन ही माँझ समात ॥२२६॥
जग गुन पकर्यौ जिन फिरै, छूटि छैल मन खेल।
स्वादिल बिधि बंधेज है, सुहृद भजन हित मेल ॥२२७॥
तनक बात में सब मिलै, यह सर्वोपरि तेत[३]।
बोल जु रसिक नरेस के, भजन वस्तु कौ हेत ॥२२८॥
मेल सुहेलौ भजन कौ, अमित रमित गति गोप[४]।
श्रीव्याससुवन पद सेईये, तन मन प्रान अरोप ॥२२९॥
श्रीव्याससुवन जुग अंघ्रि[५] अति, आनंद अमल अघाइ।
सुधा सुखद सुचि चरन रुचि, तन मन उर अवगाहि ॥२३०॥
उर अवगाहै चरन जुग, तौ सब हाथ पराइ।
श्रीव्याससुवन पद बल जहाँ, कल[६]कारज न अघाइ ॥२३१॥
श्रीरसिक सिरोमनि राज गुन, गहि हिय हेत रमाहि।
भजन विमल विमल्यौ फिरै, चरन कमल जुग छाँहि ॥२३२॥
टूटि टूटि मन तब परै, बूड़ि बूड़ि अनुराग।
श्रीव्याससुवन पद आइहैं, हियें हेत बड़भाग ॥२३३॥
भजनहिं नेह छयौ रहै, वस्तु प्रान प्रिय चाव।
यह सभार कढ़ि भजन की, बिरले पाँवें भाव ॥२३४॥
भजनहिं माँड़ै[७] अति कढ़ी, दसा चतुर मन एक।
सब विधि भजनहिं सनि रह्यौ, तन मन भाँति अनेक ॥२३५॥

१- पैदा हुआ, २- ठहराओ, ३- उतना ही, ४- इन्द्रियजित, गोपनीय, ५- चरण, ६- सुन्दर, ७- स्फुरणायें, भावनायें।

आगम बादल देखि कैं, हिय थरथरी धरक्क ।
जैसे बिटिया लाड़िली, साँवन पीर खरक्क[1] ।।२३६।।
हियरा सूखत तन तपै, मन पावै अति छोभ ।
ठौर पीर कौ ना लहै, जहाँ बढ्यौ मन लोभ ।।२३७।।
भजन सुजन संतोष हिय, सरल सुहृद सत भाव ।
जहाँ तहाँ काज सुप्रेम सौं, तहाँ तहाँ चित चाव ।।२३८।।
जहाँ कनूका प्रेम कौ, तहाँ सुहृद सत भाव ।
औगुन औगति ओट[2] दै, भजन माँहि समवाव[3] ।।२३९।।
सबै समाइ प्रताप में, संपुट[4] भजन के जोर ।
बलद प्रबल पद उर धरै, श्रीरसिक नरेस किसोर ।।२४०।।
चरन कमल हरिवंश प्रभु, गहि गाढ़े विस्वास ।
तब सब विधि पूरी परै, श्रीवृन्दावन वास ।।२४१।।
सब तें न्यारी चाल है, अलग अडग सज सार ।
भाँतिन भाँतिन सोभिये, भेद भजन जिहि भार ।।२४२।।
अलक लड़ैते लाल कौ, मारग लगिहै कौन ।
अलि[5] हूँ तें गति गूढ़ है, पैड़ौ[6] सौरभ पौन[7] ।।२४३।।
अति लड़ रसिक नरेस कौ, मारग अगम अपारु ।
बोहित[8] पाये पहुँचिये, श्रीव्याससुवन पद चारु ।।२४४।।
अति अगाध यह रीति है, जीति मनहिं गहि पाँय ।
नागर रसिक्क नरेस के, चरन कमल चित लाय ।।२४५।।
याही बल निस्तार है, अनतहि सब संकोच ।
बेपरवाही ह्वै परै, तजि मन सम्भ्रम सोच ।।२४६।।
खोज खोज मन सोधियै, ज्यौं वासना न बसाइ ।
मरम धरम कौ सहज है, तन उरमी[9] न समाइ ।।२४७।।

१- खटकती है, २- हटाकर, ३- मिलो, समाओ, ४- डिब्बा, ५- भ्रमर,
६- मार्ग, ७- पवन, ८- जहाज, ९- लहर, तरंग ।

तनमानी भयें भजन सों, कछु इक परिहै बीच[१] ।
श्रीव्याससुवन पद माधुरी, संतत हियरा सींच ॥२४८॥
भजन दसा मन में छई, तन सब कौं सिर नाइ ।
वस्तु गुमानी पुष्ट हिय, श्रीव्याससुवन मृदु पाँइ ॥२४९॥
भजन गुमानी मन बढ़ै, तन नर्मता न[२] सँभारु ।
दुर्लभ नेह दसा छई, जिय हिय वस्तु सिंगारु ॥२५०॥
श्रीव्याससुवन मृदु पद हियें, सोई कोमल बान[३] ।
भीजी अँखियन नर्मता, अंग अंग छई आन ॥२५१॥
तनमानी नाँहि होहुगे, मन मानी मैमंत[४] ।
श्रीव्याससुवन मृदु पद हिये, सोई भजनी संत ॥२५२॥
बेपरवाही दीनता, लीन भजन परवीन ।
कोमल कोमल रसिक मनि, चरननि कौ आधीन ॥२५३॥
निस्प्रेही औठाइलौ[५] , ओघट करि है घाट ।
बल पूरौ हिय प्रबल है, श्रीव्याससुवन पद डाट ॥२५४॥
एक डाट[६] की बाट[७] लगि, तन मन निपट[८] निराट ।
श्रीव्याससुवन पद प्रेम निधि, रमें रमित सुख डाट ॥२५५॥
नांगौ उघरौ जगत सब, भजन ढके निजदास ।
निधरक डोलत भक्ति बल, श्रीगुरु चरण विस्वास ॥२५६॥
भजन भक्त ज्यौं पतिव्रता, जग गनिका की बानि ।
रागादिक व्यौपारि भरि, सुजन भक्ति गति कानि ॥२५७॥
सुजन भक्ति के बल फिरत, बिमुख भजन नृप चोर ।
जहाँ तहाँई पीटिये, दाद[९] न दया निहोर ॥२५८॥
वेपरवाही विमल गुन, अलक लड़े लड़ लाड़ ।
श्रीरसिक नृपति मंगल अवधि, वरवानी सौं चाड़ ॥२५९॥

१- व्यवधान, २- अति विनम्र, ३- आदत, ४- विशाल, ५-मत्त, ६- वल, स्थिरता, ७- मार्ग, प्रतीक्षा, ८- नितान्त अकेला, ९ - प्रशंसा ।

साँची चौंप अरु चाड़ यह, और बड़ाई जाहु।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, वानी करहु निबाहु ॥२६०॥
श्रीव्याससुवन पद रसद सद, गहि गाढ़े निरधार।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, गिरा निवाहन हार ॥२६१॥
मंगल रूप अनूप हिय, चरण चतुर मणि चारु।
उज्वल तन मन गुन निपुन, सुहृद भजन सिंगारु ॥२६२॥
सुभग सिंगार सलौंन तन, उज्वल मन की चाल।
बेपरवाही वस्तु बल, कर्‌यौ रसिक मनि लाल ॥२६३॥
तन मन उज्वल हिय सुभग, चरन माधुरी रूप।
आनन्द अवधि उदार गुन, सरस भजन वर भूप ॥२६४॥
भजन सुभूप अनूप पद, कोमल कुशल किशोर।
हिय में भजन प्रकास जहाँ, मोद विनोद न थोर ॥२६५॥
कोमल कुशल किशोर कल, बल फल रूप सुचारु।
चरण कमल हिय में जहाँ, मंगल भजन पसारु ॥२६६॥
श्रीव्याससुवन पद सुभग सुख, अपनौ सर्वसु जानि।
मन कौ मन हिय कौ हियौ, प्राननि हूँ कौ प्रानि ॥२६७॥
प्राननु पोषन प्रबल पद, श्रीरसिक नरेस उदार।
भजन भाव सन्तोष सुख, वानी सुरस सँभार ॥२६८॥
श्रीव्याससुवन पद प्रेमनिधि, सम्पति सब सुख ठाट।
ज्ञान✲प्रकाश उदोत मन, चल बल कल इहि डाट ॥२६९॥
मन की गुड़ी[१] मिटाईयै, तब आवै सत भाव।
भजनारंभ सजाइ जिय, जतन जतन दै दाव ॥२७०॥
गोंड़े[२] अँड़ौ ह्वै चलै, पैंड़ौं कठिन अति और।
तन मन गुन गन गारि[३] गहि, हिये हिलग की ठौर ॥२७१॥

१- गांठ, ग्रन्थि, २- मार्ग, गाँव, ३- गला कर। ✲पाठान्तर—प्रान।

श्रीव्याससुवन पद विमल गहि, जौं लौं न खेले छूटि ।
काचर कूचर कौन गति, मन रहै पाछै टूटि ॥२७२॥
तेतिक चलनौ बोलनौ, गहै हियें दृढ़ें होइ ।
बेपरवाही चाल कल, खेल न समझै कोइ ॥२७३॥
आछौ अधिक अछामनौ, हिये चतुर मन लाल ।
सावधान गति पहुँचि है, श्रीव्याससुवन कल चाल ॥२७४॥
श्रीव्याससुवन पद लाल मनि, पाल हिये पन प्रान ।
सब विधि आछौ देखिये, सुकृती भजन सुजान ॥२७५॥
श्रीव्याससुवन पद माधुरी, मंगल मन अवगाहि ।
तन मन दशाऽव फिरि परै, भजन चाल निर्वाहि ॥२७६॥
भजन चाल तब सुगम सब, जब मन एक बंधान ।
आनंद कंद अटूट निधि, श्रीव्याससुवन पद प्रान ॥२७७॥
थोरी थोरी चाल चलि, भोरी भोरी भाँति ।
हिये भजन की पुष्टता, वानी मृदु मन भाँति ॥२७८॥
वानी मृदु जब मन मत्यौ, उर भर भजन हुलास ।
मंगल मोद विनोद सुख, श्रीव्याससुवन पद आस ॥२७९॥
श्रीव्याससुवन विश्वास पद, कठिन सुगम सुख भेद ।
भजन चाल हिय सुधि चलै, मन में मुदित उमेद[1] ॥२८०॥
जाके हिये श्रीव्यास सुत, चरन कमल उल्लास ।
जूठ खाइ पद सेइये, तासु नागरीदास ॥२८१॥
ताकौ दासंतन करै, दम्पति सहज अधीन ।
सेवी रसिक नरेस के, चरन चरच रज लीन ॥२८२॥
ताकौ भृत[2] निभृत्त हो, हिये चतुर मन लाल ।
उहै उपासिक सेइये, सुकृती सुजन रसाल ॥२८३॥

१- आशा, २- दासों का दास, भृतानि भृत, एकान्त दास, भृत्त निभृत्त,

बेपरवाही भजन कौ, चलि है निपट निसंक।
पाय पलेंड़ें जगत सुख, कनहट[१] कुहल[२] कलंक ॥२८४॥
जग के सुख तुस[३] थोथरे[४], निंदरे पाँय पलैंड।
बेपरवाही भजन कौ, चल्यौ निसंक उलैंड ॥२८५॥
बेपरवाही भजन कौ, चल्यौ जग पाँय पलैंड।
जगत कपट को चोष[५] लगि, पकर्यौ भजन चचैंड़ ॥२८६॥
बेपरवाही भजन कौ, चल्यौ जगत पग पेलि।
श्रीव्याससुवन पद विपुल बल, तन गुन निंदरे ठेलि ॥२८७॥
श्रीव्याससुवन पद बल जहाँ, तहाँ न बाधा भीर।
निधरक बेपरवाह मन, भजनी भजन सरीर ॥२८८॥
भजनी भजन सरीर हैं, धीर गहैं दृढ़ ठौर।
जहाँ तहाँ मन पूरी परै, सरन रसिक सिर मौर ॥२८९॥
भाँति भाँति दुलरावने, अमित लड़ावने लाड़।
गिरा रसिक मनि लाल की, चौंप चातुरी चाड़ ॥२९०॥
जामहिं लाड़ लड़ावने, चौंप चातुरी चाइ।
कोलाहल कौतुक कुशल, विशद विलास बनाइ ॥२९१॥
गिरा गम्भीर गुमान गुन, गरव गहिल[६] गति गात।
गौर स्याम छवि फवि छई, मधु मकरंद बसात ॥२९२॥
श्रवत सुधा मकरंद मधु, सौरभ सार समाज।
गिरा गुनवती गहिल गति, सुरगन[७] भूषन बाज ॥२९३॥
चाव सुदाव बताव जहाँ, रूप अनूप प्रकास।
गिरा माँझ गुन जग मगत, रति रस अमित हुलास ॥२९४॥
भजन अघानी चाल चलि, जिन छुह नाँहि ढढ़ाहि।
वानी श्रीरसिक नरेस की, भेदहिं भेद समाहि ॥२९५॥

१- कनेठा, भँगा, २- धोखेवाज, ३- भुसी, छिलके, ४- थोथे, खाली, ५- रोग, चसका, ६- गम्भीर, गहन, ७- स्वर समूह (संगीत)।

वानी भेद समाहि मन, अतुराई असँभार।
चतुराई नहीं पहुँचिये, वानी प्रेम सुढार ॥२९६॥
अतुराई अकुलाइ जिन, भेदहि भेद समान।
वानी चसक्यौ मन पर्‌यौ, कान आन नहिं बान ॥२९७॥
श्रीरसिक नृपति मृदु चरन चित्त, तबही भजन अघाइ।
आन सबाद न सूझई, वानी मन बिबसाय[१] ॥२९८॥
आन सवादन नहिं चलै, मन वानी गहि धीर।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, भजन अधार सरीर ॥२९९॥
अनत तमासी[२] सौ फिरै, मन मृदु मंगल ताक।
श्रीव्याससुवन वानी पर्‌यौ, छूटी कनहट[३] काक ॥३००॥
कनहट काक न कहुँ कछू, जहाँ रसिक मन लाल।
सुहृद सनेह सभार शुभ, सुख कृत भजन रसाल ॥३०१॥
सुहृद भजन के गुन जहाँ, तहाँ आतुरी खोट।
मंगल चालनि चित्त करै, अपथ अपसदी[४] ओट ॥३०२॥
वानी श्रीहरिवंश की, ओट भजन गुन नेक[५]।
सुहृद चाल क्यों करि लहैं, कुदरक[६] कुमति कुटेक ॥३०३॥
प्रबल प्रकाश हुलास हिय, जोति जगमगै प्रान।
श्रीव्याससुवन पद छाँह चलि, वानी जानें जानि ॥३०४॥
वानी जानें जानि है, आन सयान अन्धेर।
जगमगात मग ऊजरौ, महिमा मङ्गल मेर ॥३०५॥
अमल अनोखौ अडग अति, पल पल रस जस फैल[७]।
वानी बल चलि आइ है, रसिक नृपति की गैल ॥३०६॥
गैल फैल आनन्द गुनि, विविध विनोद बगार[८]।
मोद भेद कौतुक कुशल, सम्पति सार सिंगार ॥३०७॥

१-विवश हो जाता है, २-तमाशा देखने वाला (द्रष्टा), ३-कौआ जैसी दृष्टि, ४-अधम, ५-सुन्दर, अच्छे, ६-महा डरपोक, ७-प्रसार, ८-विस्तार, फैलाव।

सम्पति सार सिंगार सुख, ढार उदार हुलास।
अमल अमित मकरन्द मधु, वर वानी की आस ॥३०८॥
मंगल मैंमत चाल कल, सुधा सुसिंधु प्रवाह।
मन रति सरिता ह्वै मिलै, वानी सुख अवगाह ॥३०९॥
वानी सुधा समुद्र में, मन ढरि परै सुरीति।
तब सबही विधि भजन सौं, संतत सहज समीत ॥३१०॥
रसिक नृपति कौ गरपरा१, अलप मन्द मति हीन।
समरथ सहज निबाहि हैं, करुणा सिन्धु प्रवीन ॥३११॥
समरथ मेरौ खसम है, सबै निबाहन हार।
मोसे काहिल कृपन कौ, बहिहै सब भर भार ॥३१२॥
सुकुँवारे कोमल कुशल, समरथ सब सुख धाम।
श्रीव्याससुवन पद सद सदा, मेरे वर विश्राम ॥३१३॥
मेरे वर विश्राम वितु, हितथित चित कौ मेल।
श्रीव्याससुवन पद सद सरन, अबके सुख सौं खेल ॥३१४॥
परमानन्द प्रबीन मन, वानी जाने जान।
भजन ढार कोमल कुशल, मेटि देह अभिमान ॥३१५॥
तन अभिमानी छाँड़ि चलि, मन गम्भीर गुमान।
सुभग स्वाद चसकौ पर्‌यौ, वानी मंगल ठान ॥३१६॥
वानी मानी मन भयो, जानी जानी गैल।
ठानी ठानी वस्त पर, छानी छानैं छैल ॥३१७॥
मन अभिमानी अटपटौ, ऐंडाइल इतराय।
वानी लाड़ लड़चौ फिरै, ललित लाल नैं चाइ ॥३१८॥
रूप सील सिंगार गुन, निपुन सवाद सुभाइ।
वानी मानी मन मत्यौ, कापै परै घिराइ ॥३१९॥

१-गले पड़ा।

वानी हरिहा[1] मन भयौ, मैंमत प्रवल उरेर[2] ।
स्वाद चसक जक जिय परी, कौन सकैगौ घेरि ।।३२०।।
तनक तनक छिद्रनि कटै, तन संकोच न जाइ ।
मन गज वानी स्वाद जक[3], धक[4] नहिं अनत बुझाइ ।।३२१।।
मन गज जक हिय धक दियैं, वानी बन प्रिय प्रान ।
सुधा सुरति सरिता सुखद, इभ[5] रति रूप गुमान ।।३२२।।
मन इभ आनंद मगन अति, वानी विपिन हुलास ।
खेलैं अमृत सरोवरनि, सरिता सुधा विलास ।।३२३।।
रूप रंग रस जस सघन, मोद विनोद हुलास ।
वानी वर सुख सार में, मन मैंमत अवकास[6] ।।३२४।।
वानी कानन मन परी, मुदित मत्यौ सन्तोष ।
छवि गिरि सौरभ सुख श्रवै, सरिता सरस सुपोष ।।३२५।।
छैंड़ी टूटी झौंपरी, मन गज कहाँ समाइ ।
वानी वन सम्पति सुधा, निधरक पाई खाइ ।।३२६।।
श्रीव्याससुवन वानी बिपिन, सघन सुधा सुख रूख ।
मन गज तहाँ सद मद रहै, व्यापै प्यास न भूख ।।३२७।।
वानी वन मन इभ उमड़ि, विनोद विटप घन छाँह ।
वल्ली तरुन तमाल गसि, मैंमत मन ता माँह ।।३२८।।
वानी वन मन इभ मत्यौ, औसर खेलै फूल ।
गुन घन तरु सुतमाल सौं, कनक लता रही झूल ।।३२९।।
श्रीव्याससुवन कल चाल में, मन परै उमड़ि प्रवीन ।
सुधा नीर नौतन सदा, वानी सागर मीन ।।३३०।।
वानी सुधा समुद्र सुख, मोद माधुरी नीर ।
खेलै मंगल मीन मन, वस्तु तरंग गम्भीर ।।३३१।।

१- हरा हुआ, २- उमंग, विशाल, ३- लगन, ४- उमंग, उद्वेग, ५- हाथी, ६- विश्राम ।

सुधा जलधि वानी अमल, छुटकि मीन मन खेल ।
गुन अगाध गहरे गरव, भजन भेद बहु मेल ॥३३२॥
वानी श्रीहरिवंश की, सार सुरति सुख ओघ ।
मुदित मीन तन खेल कल, सागर सुधा अमोघ ॥३३३॥
भजन सार सागर सुधा, विमल केलि कल नीर ।
वानी निधि मन मीन मति, जीवन सफल सरीर ॥३३४॥
वानी सुधा समुद्र में, मुदित मीन मन भाँति ।
केलि तरंगनि संग रंग, सद सुख सबही भाँति ॥३३५॥
सहज भजन सौं ढार हैं, वहई[1] सील सिंगार ।
जैसे सुकृतिन पतिवृता, शुद्ध सचौटी[2] सार ॥३३६॥
जगत जनौं ही मत करैं, हिय मधि वस्तु विचार ।
मन कौ मंगल रूप है, भजन सील सिंगार ॥३३७॥
सहज सिंगारी मन सदा, वानी ढक्यौ बनाऊ ।
व्याससुवन कल चाल कौ, कुल वधू कौ सौ चाऊ ॥३३८॥
अलक लड़ी आनन्द अमल, वानी व्यङ्ग विनोद ।
मृदु मकरन्दादिक द्रवत, मत्त माधुरी मोद ॥३३९॥
श्रीरसिक नृपति रस रीति गति, जतन समझि मनपेस ।
जामहिं मृदु मकरंद द्रव, करनौ कठिन प्रवेस ॥३४०॥
खरे ; कठिन ठिक पहुँचनौ, श्रीहरिवंश सँभार ।
मकरन्दादिक सुख झुमत, घूमत सौरभ सार ॥३४१॥
सार ढार ढंग एक वै, वानी वस्तु विचार ।
श्रीरसिकनृपतिरति रीत मति, तबही निज निस्तार ॥३४२॥
श्रीव्याससुवन वानी बली, समझि समझि मन पूरि ।
मृदु मकरन्दादिक द्रवत, तहाँ पहुँचनौ दूरि ॥३४३॥

1- वह ही, २- सच्चाई ।

पैंड़ौं छैंड़ौं साँकरौ, पैठें सूछम[१] होइ।
आतुरता तजि तक लगै, वर वानी ढंग सोइ ॥३४४॥
मृदु मकरन्दादिक द्रवत, श्रवत सुधा सुख सार।
वानी मंगल पहुँचने, चल ढंग तिहीं सँभार ॥३४५॥
चलियै जाय संभार मन, वानी विमल विचार।
मकरन्दादिक सुख श्रवत, पहुँचे मंगल सार ॥३४६॥
मृदु मकरन्दादिक द्रवत, महा मंगली सार।
वानी श्रीहरिवंश की, सौरभ सुधा पसार ॥३४७॥
तव ही निज निस्तार है, वानी मन परै टूट।
बेपरवाही रीति में, खेलै निधरक छूट ॥३४८॥
सोचत मनहिं सदा रहै, जिय में हाहर[२] हूल।
चौंप चोभ हियरा गड़ै, क्यों सौवै निरमूल[३] ॥३४९॥
निधरक ह्वै क्यों सोइ है, हिये भजन की चोभ।
चवत[४] चक्कत चौंकत रहै, गह्यौ ललक मन लोभ ॥३५०॥
भजन ललक जब मन लग्यौ, लोभ रूप की डाट।
जिय की बूड़क वस्तु रति, चक्कत चित्त उचाट ॥३५१॥
भजन चौंप जब ज्यौं गह्यौ, नींद उचक उच्चाट।
छिन छिन उघरै छिन लगै, नैननि पलक कपाट[५] ॥३५२॥
जामहिं विविध विनोद है, वनक विचित्र बनाइ।
वानी रस वर सार सर, सौरभ सुख समुदाइ ॥३५३॥
सोभा सुखद बनाव जहाँ, रूप रंग रस चाइ।
मोद मती गुन अनभती[६], वानी विशद बनाइ ॥३५४॥
मंगल मोद विनोद सद, मद मृदु मधु मैसंत।
श्रीव्याससुवन पद बल लहै, समरथ सज्जन संत ॥३५५॥

१- सूक्ष्म, २- कोलाहल, ३- मूल रहित, निधड़क, ४- चारों ओर, ५- किवाड़, ६- अनुभव पूर्ण।

समरथ सज्जन संत रस, रीति रसिक मन लाल ।
बेपरवाही सोभियै, अलक लड़े कल चाल ॥३५६॥
अमल अमी आनँद अमित, रमित सील सिंगार ।
वानी श्रीहरिवंश की, रूप रंग रस सार ॥३५७॥
सील सहज सिंगार रस, ढार भार मद मोद ।
वानी बनक विचित्र वर, मृदु मधु मुदित विनोद ॥३५८॥
वानी विचित्र विनोद सद, लच्छन दसा सनेह ।
गिरा चतुर मनि लाल की, मंगल रमें मन देह ॥३५९॥
बेपरवाही आचरै, निपट निसाने मारि ।
वानी विमल प्रकास में, खेलै मनहिं पसार ॥३६०॥
वानी विमल प्रकाश हिय, मन विनोद विधि केलि ।
सबही भाँतिन सोभियै, बेपरवाही छैल ॥३६१॥
बेपरवाही छैल मन, श्रीव्याससुवन पद लाड़ ।
निधरक निवट निसंकता, इह बल बोलन आड़[1] ॥३६२॥
बेपरवाही छैल मन, वानी विमल उखेल[2] ।
तन मन दसा विमल चली, याही ढंग के खेल ॥३६३॥
ऊँचो नीचौ बीच कौ, बोलहि परिहै भाव ।
जाके हिय की हिलग जहाँ, तेही ठौर बनाव ॥३६४॥
तेही ठौर बनाव है, चाव दाव उपजाव ।
ताही सौं मिलि खेलियै, जहाँ हिये कौ भाव ॥३६५॥
श्रीव्याससुवन वानी प्रबल, हिय में वस्तु प्रकास ।
बेपरवाही डोलनौ, अनत तमासे हास ॥३६६॥
बेपरवाही डोलनौ, देखत कौतुक खेल ।
श्रीरसिक नरेस किशोर मनि, बर वानी सौं मेल ॥३६७॥

१- सहारा, २- चित्रण, खोदना ।

बर वानी सों मिलन जिय, सबही कौतिक हार ।
इह बल बेपरवाह मन, पर्‌यौ हियें यह ढार ।।३६८।।
बेपरवाही ह्वै पर्‌यौ, सरस सवाद समूह ।
श्रीरसिक सिरोमनि ह्यिरमी, वानी कल कौतूह[1] ।।३६९।।
बरवानी कौतूहलनि, रम्यौ देह मन प्रान ।
अनत तमासी सौ फिरै, चित नहीं आवै आन ।।३७०।।
भजन भेद बहु भाँति के, हिय नहिं आवै और ।
तन मन थित चित प्रान वित, हितजू कौ हित ठौर ।।३७१।।
हितजू कौ हित ठौर जहाँ, चित वित थित सतभाव ।
विमल विलास आराम[2] रति, रमि मन मंगल चाव ।।३७२।।
धाम ललित दुलरावनौ, हितजू कौ हित पाल ।
मन मृदु मंगल ठौर ठिक, ललक लड़ावन लाल ।।३७३।।
ललित लड़ावन लालनें, पालन प्रेम प्रकास ।
हितजू कौ हित धाम मृदु, मति मन मंगल वास ।।३७४।।
कौतिक कोलाहल कुशल, कोमल कल सुकुमार ।
वानी मृदु मंगल मई, खेल सुहेल[3] पसार ।।३७५।।
भाँति भाँति बहु कुञ्ज मृदु, ललना लाल विहार ।
प्रेम खिलौननि खेल नित, रसिक नृपति खिलवार ।।३७६।।
श्रीरसिक नृपति खिलवार जू, खेलैं प्रेम खिलार ।
सेज सुमन हौंसनि[4] भर्‌यौ, लता ललित आगार ।।३७७।।
लता ललित कुसमित महल, सुमन तलप रति मेल ।
हित जुग रसिक नरेस के, प्रेम खिलौननि खेल ।।३७८।।
वानी में ज्यौनार सब, जुग जीवन ज्यौनार ।
मोद भेद मधु माधुरी, पान सुवान अधार ।।३७९।।

१- कौतूहल, २- बाग, विश्राम, ३- सुखदायी, ४- चाव से ।

षट रस रुचि ज्यौनार है, वानी रति रंग पान ।
अधर अदन अमी सौरभी, पोखन तन मन प्रान ।।३८०।।
छाजन भोजन सम्पदा, दम्पति रूप सँवार ।
लाड़ लड़ावन ललक रति, वानी रंग विस्तार ।।३८१।।
वानी ज्यौं जीवन जुगल, हितथित ललना लाल ।
सुख निधि रसिक नरेस की, मधु मति मंगल चाल ।।३८२।।
भोग विलास सुवास सद, सुधा माधुरी पान ।
वानी ललक लड़ायती, हृष्ट पुष्ट प्रिय प्रान ।।३८३।।
वानी प्राननि पुष्टता, तन सिंगार सरूप ।
मेल सुहेल समूह सचु, मंगल खेल अनूप ।।३८४।।
सौरभ सार समूह शुभ, मंन मादिक घन घ्रान ।
अंग सुवास सवाद लैं, श्रवन भोइ[1] मन प्रान ।।३८५।।
बूड़ि बूड़ि तन मन उठै, सौरभ स्वादिल कूप ।
भाँति भाँति हिय तें कढ़ैं, प्रेम पराग अनूप ।।३८६।।
सुभग भभूकनि मन भरै, भोइ भोइ रहै प्रान ।
अमित स्वाद सौरभ सुधा, घूमि रह्यौ घन घ्रान ।।३८७।।
कुशल कलेवर कल कढ़ै, सम्पति सुभग सुवास ।
श्रीव्याससुवन वानी प्रगट, मृदु मकरन्द हुलास ।।३८८।।
अजब अकह[2] सौरभ सुधा, वानी विमल वगार ।
मंगल मृदु मकरन्द द्रव, अमी अमित आधार ।।३८९।।
सौरभ सुधा समूह रस, बर वानी की रीति ।
बेपरवाही आचरी[3], निवट निरन्तर प्रीति ।।३९०।।
बेपरवाही रसिक मनि, चलि दिखराई गैल ।
खरी कठिन मनकौं परै, छुवत छबीली छैल ।।३९१।।

१- डुबा दे, २- अकथनीय, ३- आचरण की हुई ।

निधरक बेपरवाह बल, पैंड़ौ प्रेम प्रबीन ।
तबही ता मन परसि है,श्रीरसिक नृपति मन❀ लीन ॥३९२॥
चिकुला[१] कारे साँप कौ, अमिठी लगै अजान ।
ताकौं गति नहिं गारडू[२], माने मंत्र न मान ॥३९३॥
चिकुला कारे साँप कौ, गारडू मंत्र असान ।
देखत ही विष पूरि है, परसन कौं कहा बान ॥३९४॥
वानी अहिवर[३] चैंदुआ, स्वास भूमि पकि जाइ ।
ताकों मंत्र न गारडू, कौन सकै कर[४] नाइ ॥३९५॥
धोखैं कोऊ जिन गहौ, वानी अहिवर पोड़ ।
फूंक परसि जरि जाइगौ, झूठी अँग अँग होड़ ॥३९६॥
तन मन प्राननि चित हियैं, गद सद एकै भेस ।
श्रीरसिक नृपति पद ओट दै, जतननि करै प्रवेस ॥३९७॥
लच्छन लच्छित वस्तु है, रचना रुचिर बनाइ ।
वानी बर पहिचानि जे, ललना लाल सुभाइ ॥३९८॥
जैसे लच्छन हुलसि मन, तन गुन गर्वित भाव ।
विधि वानी विस्तार गति, विलसत सौरभ चाव ॥३९९॥
जैसौ सौरभ चाव चित, सेज सनैं सुख ठान ।
वानी लालन ललकि लखि, खेल मेल मधु पान ॥४००॥
जमुना वन सहचरि सहज, सरस सम्पदा बान ।
श्रीरसिक नरेस कृपाल बर, वानी सौं परै जान ॥४०१॥
वचन रचन मुक्ता मनै, लाल रतन गुन सारु ।
वानी रसिक नरेस बर, नौखौ[५] धरि हिय हारु ॥४०२॥
वानी नौखौ हार हिय, नग अनूप वर बैन ।
धरत भजन उर जगमगै, मधु मंगल सुख चैन ॥४०३॥

१- बच्चा, २- साँप का विष उतारने वाला, ३- श्रेष्ठ सर्प, ४- हाथ डालना, ५- अनौखा । ❀पाठान्तर—पद ।

वचन चारु चिंतामनी, वानी वितु हित हार।
पहिरें पानिप भजन मन, गुन गन नगनि सुढार ॥४०४॥
वानी हार हियैं धर्‌यौ, तब न कछू परवाह।
बचन विशद नग गुन दियैं, भेद भजन भरवाह ॥४०५॥
वानी हार हिये लसैं, ढार उदार उदोत।
अबके जीवन जनम कौ, पूर्‌यौ पर्‌यौ है पोत[1] ॥४०६॥
वानी श्रीहरिवंश की, हियै अलंकृत हार।
नग निर्मोलक[2] जगमगै, वचन माधुरी चारु ॥४०७॥
वानी कठुला कंठ करि, कौतिक कल मधि जासु।
रमित अमित रंग अवलि[3] नग, वचन रचन परकास ॥४०८॥
अवरन सरन सहाइ कौं, समरथ प्रभु प्रतिपाल।
श्रीरसिक नृपति वानी बिना, अति आपदा अकाल ॥४०९॥
जहाँ तहाँ आपति काल है, लाल रसिक मनि ठौर।
वानी परमानन्द निधि, नहिं प्रति पालक और ॥४१०॥
रसिक सिरोमनि सरन सुख, अनत आपदा ताप।
निधरक डोलत हिय धरैं, वानी प्रबल प्रताप ॥४११॥
अँखियन अंजन अमल सुख, मन हिय उज्जल प्रान।
रस निधि निरवधि भजन को, बर वानी परमान[4] ॥४१२॥
याही में परमान है, भजन रीति रस ढारु।
विमल वस्तु बहु भाँति सुख, वानी बर ढँग गारु ॥४१३॥
अनत कनूका[5] जगमगत, वानी रस जस ढेर।
भाँतिहि भाँति प्रकाश छवि, मंगल मद मन मेर[6] ॥४१४॥
मंगल सहज समाज सुख, शुभ सन्तोस सुभाउ।
प्रीति रीति फीकी अनत, वानी में समवाउ[7] ॥४१५॥

१- अवसर, दाव, २- अनमोल, ३- श्रेणी, ४- प्रमाण, ५- कण, ६- मेरा, सुमेरु, ७- नित्य सम्बन्ध।

तन ओढ़ौ पट जरकसी[१], कै गूदर गर बाँधि ।
काज रसिक मनि लाल की, बरवानी हिय साँधि[२] ॥४१६॥
तन बहु मोलक चीर धरि, कै गूदर गर भार ।
श्रीरसिक नृपति वानी हियें, दुहूँ भाँति सिंगार ।४१७॥
बर वानी साधैं सकल, सहज सुखद कल काज ।
रसिक सिरोमनि लाल मन, मंगल चरन समाज ॥४१८॥
षट रस भोजन भोग जो, टूक मधुकरी खाइ ।
सोई सकल सुख दाइ शुभ, वानी हियें रमाइ ॥४१९॥
कहा विविधि भोगनि करै, कहा माँग भखै कौर[३] ।
काज हियैं वानी रमैं, लाल रसिक सिरमौर ॥४२०॥
पौढ़े सेज प्रजंक[४] जो, कै सैन साँथरे[५] सोइ ।
काज रसिक मनि लाल की, बर वानी तें होइ ॥४२१॥
सबै काज वानी सधैं, बँधैं न कौनहु आस ।
निधरक बेपरवाह हिय, हरखत भजन हुलास ॥४२२॥
वानी सुधा समूह में, तक धक हिय जिय राखि ।
सौरभ ही दारिद्र भगै, मुदित[६] कनूका चाखि ॥४२३॥
वानी कनुका अमृत कौ, चाखत रोम सिरांहि ।
सरस सवादनि पुष्टता, तन मन प्रान अघाँहि ॥४२३॥
वानी अमी[७] अगाध निधि, किनका हाथ पवाय ।
सब सवाद फीके लगैं, नित नव रंगनि चाय ॥४२५॥
वानी अमी कनी हियैं, रोमनि स्वाद सभार ।
उर हुलास उठिवौ करै, नौखे सौरभ[८] सार ।४२६॥
वानी कन हियें पूरि जहाँ, मुख बोलन बहराउ ।
कौन सवादहि जानि है, जेतक हिय कौ चाव ॥४२६॥

१- जरी का, २- संधान कर, ३- ग्रास, टुकड़ा, ४- पलंग, ५- तृण शैया (चटाई), ६- प्रसन्न, ७- अमृत, ८- सुगन्ध ।

तबहि कछू मुखतें कढ़त, हिये कनूका पूरि।
वानी सूझ असूझ है, हिय की पहुँचनि दूर ॥४२८॥
वानी श्रीरसिक नरेस की, परै कनूका हाथ।
तैसोई सुख जिय जनै, प्रेम प्रकासै साथ ॥४२९॥
वानी सुभग सुधा कनी, उर में स्वाद समूह।
भाँति भाँति सौरभ श्रवै, कोलाहल कौतूह ॥४३०॥
तन सूधो हिय बाँकुरौ, भजन चाल अति बंक।
श्रीव्याससुवन पद उर धरैं, जातैं फिरत निसंक ॥४३१॥
हिय वाकौं तन सूधरौ, कहै कौन सों बात।
काहू पैं सुनत न बनै, उसल पुसल हिय जात ॥४३२॥
तन कोरौ अति मन गरव, चलैऽव ऐंड़ौ बैड़।
जित तित तैं पूरी परैं, वानी भजन उलैंड़ ॥४३३॥
गरव गहेली गुनवती, वानी हिय रही छाइ।
मन में वस्तु गुमान भरि, तन कोमलै सुभाइ ॥४३४॥
सावधान यहि चाल चलि, कछु न करै अकुलाइ।
अपने मन के आतुरैं, उचकहि आवत पाइ ॥४३५॥
मन अतुराई[१] ईतरी[२], पतराई[३] न खटाइ[४]।
वानी बर गम्भीर गुन, अलक लड़ी चल जाइ ॥४३६॥
सद औषद वानी विमल, बैद रसिक मन लाल।
तेही ठिक बैठारि है, जहाँ न माया काल ॥४३७॥
तेही ठिक बैठारि है, जहाँ अगाध अधार।
केलि खेल कौतिक मिलन, विशद विहार पसार ॥४३८॥
तेई ठिक बैठारि है, पाल पोष शसिताइ[५]।
जहाँ कछु श्रम परसै नहीं, कोलाहल समुदाय ॥४३९॥

१- आतुरता, २- इतराहट, ३- थोड़ी भी, ४- समाती है, ५- विश्राम देकर।

श्रीव्याससुवन वानी अमल, पियत माधुरी मूर।
भजन उदार उदोत उर, रोम रोम भरि पूर ॥४४०॥
रस आलय हरिवंश पद, सद गद जीवन प्रान।
सेवत मंगल मोद मधु, गुन गन भजन निधान ॥४४१॥
सरसीरुह[1] पद कनक द्युति[2], मृदु मधु मंगल चारु।
रसनिधि श्रीहरिवंश जू, चित हित चरन विचारु ॥४४२॥
श्रीव्याससुवन आनँद अवधि, पद सद विमल विचार।
सहज चाव के भजन माँहि, बूड़हि बहुत संभार ॥४४३॥
तन मन चित वित प्रान दै, श्रीव्याससुवन पद चारु।
मंगल मोद विनोद मृदु, यामें भजन विस्तारु ॥४४४॥
चलन न अचलन ना डरौं, ऊबट वाट न लाज।
सो जु कहा मैं ना करौं, लाग तुम्हारे काज ॥४४५॥
कबहूँ संघट मिलि चलौं, कबहूँ एकाएक।
डाढ़चौ[3]पाक्यौ भजन कौ, ताकौं कहा कोऊ छेक[4] ॥४४६॥
तेतिक वै मुख बोलनौ, जेतिक भजन मन फूल।
बाद[5] वाइदौ[6] को रटै, जामें जक थक भूल ॥४४७॥
जे तक सोच विचार है, विविध भजन मन दौर।
एक नाम सौं काम निज, रसिक कुँवर सिरमौर ॥४४८॥
श्रीरसिक सिरोमनि नाम सौं, साज काज निज प्रान।
और स्वाद बिरमौ नहीं, मन सर्वसु सुख ठान ॥४४९॥
अपने औचक भजन की, सबसौं मानी हारि।
तिनकौं कहा सताइये, प्रेमहि राखे मारि ॥४५०॥
प्रेम मरस जिन कौं गह्यौ, वह कछु पैंड़ों आन।
सोई पीरहि पाइ है, भेदी भजन सुजान ॥४५१॥

१-कमल, २-कान्ति, ३-विशेप, आत, ४-अलग करना, ५-बहस, ६-वायदा, वचन।

अपने को अरु और को, सिर पर बोड़ी[1] गारि[2]।
श्रीरसिक नरेस किशोर मनि, सब विधि लियौ सुधारि ॥४५२॥
सावधान प्रभु सीस पर, सबै सुधारन हार।
निर्भै निधरक करि रह्यो, करुणा सिन्धु उदार ॥४५३॥
श्रीरसिक नरेस कृपाल कौ, ताकौं कछु न भीर[3]।
बेपरवाही करि रह्यौ, अन समझे तें कीर[4] ॥४५४॥
अनसमझे ते चुप भली, रहिये सोच विचार।
सुजन भजन सुहृदी बिना, फिरि माँड़ैगौ[5] रारि ॥४५५॥
अनसमझे[6] सौं काम जब, तब छुटियै हरवाय।
बोलैं बोलैं विरस है, नख सिख ज्यों करवाय ॥४५६॥
भजन चाल हियैं सुधि चलै, गहि वानी कछु भेव।
अमित लच्छ[7] लाभै लहै, तन मन सौंपै सेव[8] ॥४५७॥
वानी रसिक नरेस की, अर्पं देह मन प्राण।
मृदु मधु मंगल चाल कल, तब प्रवेश कौ बान ॥४५८॥
वानी लेस प्रवेस जो, करि पावै (आवै) बड़भाग।
तन मन साधैं खेल है, पगै भजन रस पाग ॥४५९॥
कठिन खेल बाँकौ मिलन, पेच प्रेम परवीन।
तन मन अर्पे उर रमें, वानी नेह नवीन ॥४६०॥
वानी कनिका उर रमै, सूझै भजन पसार।
हिय उजियारौ ह्वै रहै, मन में वस्तु उदार ॥४६१॥
श्रीरसिक नरेश किशोरमनि, चरन कमल वर सेइ।
इन्द्री गुन मन की दशा, खसम लेइगौ नेइ[9] ॥४६२॥
समरथ सबै सुधारि है, सिर पर रसिक नरेस।
बेपरवाही बल फिरत, काढ्यौ कर गहि केस ॥४६३॥

१- दमड़ी, स्वल्प धन, सिर का एक आभूषण, २- नष्ट करके, ३- विपत्ति, ४- तोता, ५- लड़ाई ठानेगा, ६- ना समझ, ७- लक्ष्य, ८- सेवा, ९- सुधार।

काढ़ि जतन अपनौ कर्‌यौ, समरथ दान उदार।
हौं बल बेपरवाह मन, खसम निवाहन हार ॥४६४॥
जाके सिर पर रसिक मनि, ताहि कछु नहिं भीर।
करुना कुशल किशोर वर, मेटि रह्यौ सब पीर ॥४६५॥
सुहृद सनेही सेइहू, श्रीरसिक नरेस अधारु।
सुजनन कौ प्रतिपाल प्रभु, जाहि लग्यौ भर भारु ॥४६६॥
सुहृद सनेही काज करि, श्रीरसिक नृपतिजू की वानि।
सुजन समाजी संग में, पाखण्ड पूरी हानि ॥४६७॥
सुहृद भजन की चाल कौं, यह न बूझिये साथ।
अपने अपने मूड़[1] पर, दै काढं सब हाथ ॥४६८॥
सुहृद भजन की चाल के, संगी एकहि ढार।
बेपरवाही इक मना, सुकृती भजन उदार ॥४६९॥
सुहृद भजन कौ संग जहाँ, एक ही चित की ताकि।
वस्तु माँझ मन मिलि चलै, तामें कसर न काक[2] ॥४७०॥
भजन लड़ावन लाल है, यहई उत्तम चाल।
हिय नहीं उपजै दूसरी, जतन जतन मन पाल ॥४७१॥
जतननि ही मन पालनौ, भजन लड़ावन लाल।
काचे[3] तन गुन इन्द्री सधैं, वस्तु हिये में घाल[4] ॥४७२॥
भजन लड़ावन मुख कहै, देह अभिर[5] की गाढ़।
चोखे वादी पैं बँधे, विषम[6] विषहरी[7] डाढ़ ॥४७३॥
भजन लड़ावन लाल कौ, लालच एकहि काज।
उत जु वस्तु इत अपनपौ[8], बीच समाइ न साज[9] ॥४७४॥
भजन लड़ावन लाल की, खरी कठिन है रीति।
एक ही बल तौ अनुसरै, श्रीव्याससुवन पद प्रीति ॥४७५॥

१- माथा, सिर, २- कुछ भी, ३- कच्चे, ४- डाल, ५- लड़ाई भिड़ाई, सहारा, ६- विपरीत, ७- विषैली, ८- अपनत्व, ९- बनावट।

गाढ़ौ मारग भजन कौ, ठाढ़ौ[1] नहिं ठहराइ ।
हिय कोरो[2] ह्वै नै चलै, दृढ़ गहि श्रीगुरु पाँय ॥४७६॥
लालन मन तब ठिकु रहै, भजन चाल रस एक ।
खरी कठिन है मिलन की, बाधा बान अनेक ॥४७७॥
गुरु प्रतीति वस्तुहि गहै, भजन लाल की चाल ।
खेल न होई मिलन यह, बिन बल बिपथ बिहाल ॥४७८॥
श्रीरसिक सिरोमनि सीस पर, दिन निधरक है खेल ।
मुख्य मूल हाथहिं पर्यौ, सुहृद भजन हित मेल ॥४७९॥
यहई भजन सँभार है, हिय में वस्तु रमाइ ।
सावधान चित चेत है, श्रीव्याससुवन जू पाइ ॥४८०॥
मन पय जावन भजन कौ, दै रुचि जतन जमाउ ।
फाटै फटि है और कौ, समिटैं सबै बनाउ ॥४८१॥
समिट गहै मन भजन पर, एक वस्तु की डाट ।
दूजी आयें खसि परै, खरी कठिन है बाट ॥४८२॥
श्रीरसिक सिरोमनि चाल कल, कठिन कहाँ मन जाइ ।
नौखी चोखी रीति रस, प्रीति न और समाइ ॥४८३॥
हीरा सौं हीरा बिंधै, नहिं पोहै तहाँ आन ।
रीति चलैं श्रीरसिक मनि, बर बानी कौ जान ॥४८४॥
भजन उजारौ ऊजरौ, भई रहै मन जीति ।
तब तन धरि पूरौ परै, श्रीरसिक नृपति पद प्रीति ॥४८५॥
श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, पाछे लगि है कौन ।
जामहिं खेल खिलार कौ, अति दुर्लभ वह भौंन[3] ॥४८६॥
श्रीव्याससुवन वर कुँवर कौ, पाछे लगनौ दूर ।
इन्द्री तन मन एक रस, विमल भजन गुन पूर ॥४८७॥

१- अहङ्कारी, २- शुद्ध, ३- भवन ।

श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, रीति कौन ठहराइ ।
पूरन पदवी प्रेम की, देखत ही बहराइ[1] ।।४८८।।
विष कौ कीरा खाँड़ में, परत ही छांड़ै प्रान ।
श्रीरसिक सिरोमनि रीति में, नहिं काहू कौ बान ।।४८६।।
निर्मल नौखी रीति की, गति जानैगौ सोइ ।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल कौ, पद सद संगी होइ ।।४६०।।
मन विहंग बर भजन गुन, निर्मल चुनि आहार ।
पान करै आनन्द निधि, वानी अमृत सार ।।४६१।।
मन विहंग छाया बसै, कंचन बेलि तमाल ।
फल अमृत गुन अमल भखि, वानी रूप रसाल ।।४६२।।
मन खग सुख चहचरि[2] करै, बैठौ सीतल छाँह ।
अरुझी तरुन तमाल सौं, बेली कंचन माँह ।।४६३।।
बल्ली कल कंचन ललित, तरु तमाल गसि भेद ।
गुन घन पंछी मन बसै, निर्भै कछू न खेद ।।४६४।।
बल्ली कनक तमाल की, बैठि विमल गुन डारि ।
मन खग अनत न चितवई, भल भखि वानी सार ।।४६५।।
बल्ली कनक तमाल में, दल फल फूल अनेक ।
मन विहंग संतोष मति, वानी सौरभ एक ।।४६६।।
सौरभ सार समूह सुख, सीतल सुभग सुमोद ।
मन विहँग कल अमृत भखि, वानी सरस विनोद ।।४६७।।
मीठे फल मन खग चखै, जीभ न लागै आन ।
विमल स्वाद भोगी भयौ, वानी अमृत पान ।।४६८।।
और स्वाद सूझै नहीं, वानी सुख रह्यौ गीध[3] ।
बेली हेम तमाल फल, रसनि रसि रही बीध[4] ।।४६६।।

१- मस्त हो जाय, २- चहचहाट, ३- लुब्ध होना, ४- फसना ।

बेली हेम तमाल की, मन खग भयौ गिधैल।
वानी फल चसकौ पर्‌यौ, अनत न बिरमै छैल ।।५००।।
मन खग सबही छैल कल, वानी स्वाद बंधेज।
कंचन बेली तमाल के, गुन फल मंगल हेंज ।।५०१।।
वल्ली कनक तमाल तरु, मन पंछी फल खाय।
स्वाद निवटि वानी निपुन, गुन सुख कहूँ न जाय ।।५०२।।
हाटक[1] लता तमाल सुख, गुन फल अमी अघाइ।
वानी छाँह विहंग[2] मन, किलकत निज निधि पाइ ।।५०३।।
वानी श्रीहरिवंश की, बेली कनक तमाल।
सुजन विंहगनि सुखद सद, प्रगट बताई लाल ।।५०४।।
कंचन बेलि तमाल तरु, मन खग सुख विश्राम।
गुन गन घन फल फूल दल, बैठ्यौ निर्भय धाम ।।५०५।।
कंचन बेलि तमाल तरु, बसि हैं सुजन विहंग।
प्रगट बताई रसिक मनि, सदा फूल फल रंग ।।५०६।।
वानी श्रीहरिवंश की, कंचन लता तमाल।
सदा फूल फल दल सुगुन, सुजन खग बसैं रसाल ।।५०७।।
कंचन बेलि तमाल तरु, सुजन विहंग बसेर।
सौरभ सीतल छाँह सुख, किलकत मंगल मेरु ।।५०८।।
व्याससुवन पद सुजन वितु, सर्वसु जीवन मूरि।
सुखद रसद हियरा बसै, भाग होहिं जो भूरि ।।५०९।।
सर्वसु सौंपैं साज यह, पलटि होय सब बुद्धि।
तब तन भाजन भजन कौ, मन क्रम वचन विशुद्ध ।।५१०।।
वस्तु भजन के द्वार में, कोऊ न खेलै छूटि।
जोई डरिया[3] पकरियै, सोई आवै टूटि ।।५११।।

१- स्वर्ण, २- पक्षी, ३- डाल।

अलक लड़ौ ऐंडाइलौ, सुद्ध साँच आधीन ।
गुरु प्रसाद मन में बसै, मंगल भजन प्रवीन ॥५१२॥
सब मंगल सब सुख जहाँ, गुन गन रस भरवाउ ।
अमल भजन श्रीरसिक मनि, अतुलित आनन्द चाउ ॥५१३॥
डारै रहनौं भजन में, छाँड़ि मान अपमान ।
दीन लीन पद रसिक मनि, गारै[1] गात[2] गुमान ॥५१४॥
भजन वस्तु के ढार में, निधरक पाऊँ जाहि ।
चरन वन्दि जूठन भखौं, गुरु सम मानौं ताहि ॥५१५॥
औहठी हठीले भजन सौं, बनै न पाखण्ड फेर ।
सुद्ध सचौटी सुधरि है, मन वच क्रम के मेर ॥५१६॥
मन वच क्रम गहि धर्म दृढ़, वानी भजन निधान ।
श्रीहरिवंश लड़ावनैं, वस्तु विविध सनमान ॥५१७॥
वानी श्रीहरिवंश की, जामहिं वस्तु सन्तोष ।
ठौर ठौर तें कल कढ़त, विचित्र विलासी चोष[3] ॥५१८॥
चोष तोष वानी सबै, तामें भेद अपार ।
गिरा रसिक मनि लाल की, वस्तु अनूप पसार ॥५१९॥
सुहृद दसा मन ढरि परै, विमल भजन के मेल ।
ठौर ठौर चरचै फिरै, लग्यौ वस्तु के खेल ॥५२०॥
खेल लग्यौ फिरै वस्तु के, त्यौं चित चातिक ताक ।
अमल भजन नहिं सोभियै, हंस समाजी काक ॥५२१॥
चित्त दिये वस्तुहिं फिरै, विमल भजन मन मेल ।
गुरु प्रतीति चलै रीति सौं, प्रेम समीती खेल ॥५२२॥
खल मेल वर भजन सौं, हियैं वस्तु कौ सेत[4] ।
अपगुन अपगति छाँड़ि है, तब मन तू बानैत[5] ॥५२३॥

१- गला दे, २- देह, ३- अभिलाषा, ४- सेवन करता है, ५- योद्धा ।

मन बानैंती पकरि कै, अब लटिहै तो लाज।
पति[१] जैहै गति हानि है, आगै बिगरै काज ॥५२४॥
बानैती चाबुक परै, सिर पर रसिक नरेश।
समरथ बल साँचौ चलै, खोवै ऊवट भेस ॥५२५॥
सिर पर रसिक नरेस है, सु क्यों डरै दहलाय।
वृत्ति तजै मन वस्तु में, औगुन भगैं कहलाय ॥५२६॥
औगुन ताहि न परसि है, श्रीव्याससुवन्न पद हेत।
जहाँ तहाँ निमल्यौ फिरै, भजनी वस्तु समेत ॥५२७॥
भजनी के बल रसिक मनि, अभय चरन बर ओट।
अभिअन्तर भरि वस्तु मन, कहाँ सपरसै खोट ॥५२८॥
खोट चोट ताही लगै, जो बल वित अंग हीन।
सरवंगी समरथ सरन्न, श्रीरसिक नृपति परवीन ॥५२९॥
श्रीरसिक नृपति परवीन जू, सरन्नाई साधारु।
साँचौ ह्वै सन्मुख परै, सदा निवाहैं भारु ॥५३०॥
जाहि सबै अभार है, सरनाए की लाज।
समरथ सुहृद उदार प्रभु, भक्ति रसिक सिरताज ॥५३१॥
सरनागति की भीर है, पीर परीयै जाहि।
बच्छल[२] रसिक नरेस जू, करुना करहि निवाह ॥५३२॥
श्रीरसिक नरेस सुजान प्रभु, नुकता[३] जानन हार।
बाजी तासौं ना बनै, ऊवट भेष✿ विकार ॥५३३॥
सुहृद भजन तकि सरन गहि, बनै न और अरींग[४]।
प्रभु है चोखौ चौकसी, कढ़त[५] बार की मींग ॥५३४॥
मींग बारकी जहाँ कढ़त, तामहिं कहा समाइ।
कलपी[६] कलई ना चलै, साँचौ सुहृद खटाइ ॥५३५॥

१- लाज, २- वत्सल, कृपा करने वाले, ३- तत्व, सार, ४- बनावट, ५- बाल की भी मिंगी निकालते हैं, ६- कल्पित, झूठी। ✿पाठान्तर--भेद

चलि दिखराई रसिक मनि, सुहृद भजन की वाट ।
बिरलेई गहि निवटि हैं, भ्रमैं फिरत भ्रम ठाट ॥५३६॥
कठिन वाट है रसिक मनि, चौकस चल मन प्रान ।
सुहृद भजन बिनु बूड़ि है, मांडि मंडिनी आन ॥५३७॥
माँड़ि मंडिनी सुहु मिला, सुहृद बिना प्रभु दूरि ।
भए बीच के वायदे, मरि हैं विलपि विसूर ॥५३८॥
चपि हौं दविहौं कहुँ नहीं, बिना भाइ अनुराग ।
ताही सौं मिलि विरमि हौं, जहाँ हिये की लाग ॥५३९॥
जहाँ हिये की लगन है, तहाँई मन ठहराइ ।
अनत बटाऊ[1] सुहृद बिन, चलै बातनि बहराइ ॥५४०॥
बिना भजन की सुहृदता, कासौ कहौं सतभाउ ।
धरमी मरमी मिलन बिन, कहा उपजै चित चाउ ॥५४१॥
हिये हरष चित चाव है, भजन भाव सुख साज ।
पूरन भागनि पाइये, धरमी सुहृद समाज ॥५४२॥
भूरि भाग श्रीगुरु कृपा, सुहृद सुजन सतसंग ।
भजन हियैं छायौ फिरै, वस्तु मिलै मन❋ रंग ॥५४३॥
सुहृद पदारथ सुजन विन, हित करि पकरत संत ।
भजन भेद सत भाइ विन, सुख रहौ उरै अनन्त ॥५४४॥
प्रेम भजन सत भाइ विन, सुजन न कहूँ समांहि ।
सुहृद समागम मानसर, भजनी हंस रमांहि ॥५४५॥
सुहृद भजन सुख सुकृतता, विमल प्रेम रस रीति ।
प्रगट आचरी व्यास सुव卐, समझै सुजन समीति ॥५४६॥
सुहृद भजन सत भाइ सुख, श्रीहरिवंश सुरीति ।
सुहृद सनेही समझि हैं, सुजन भजन मन जीति ॥५४७॥

१- पथिक । ❋पाठान्तर—नव, 卐सुवन ।

सुहृद भजन श्रीरसिकमनि, सुजननि काज पसार।
चोखे भजनी समझि हैं, जा हियें वस्तु बर ढार ।।५४८।।
मरम न पावैं बीच के, श्रीरसिक नृपति जू की वानि।
भजनी सुहृदी समझि कैं, ढरकि मिलैं पहिचानि ।।५४९।।
उषठ्यौ रूखौ ठोठरौ, कबहुँ न आवै ढार।
मधुर वस्तु परसै नहीं, उलटौ जाइ निवार ।।५५०।।
सुहृदी सुजन सुसमझिने[१], ढरैं भजन निज ढार।
वस्तु कृपा करि रसिकमनि, प्रगट करी संसार ।।५५१।।
सौहृदता छाई फिरै, कोमलताई नैन।
बैंन रसिकमनि जस कढैं, सांति भाइ उर ऐंन ।।५५२।।
सुहृदी सुजन सुसमझिने, सरन तकैं हरिवंश।
भजन मानसर चतुरमनि, रमैं रसिक जन हंस ।।५५३।।
सोई सुकृती सुजन है, सुहृदी समझनहार।
हिये उजारे पहुँचिहै, श्रीरसिक नृपति जू कौ ढार ।।५५४।।
सबही कौं हित वित सच्यौ, श्रीरसिक नरेस उदार।
अमल भजन रस प्रगट करि, पहुँचें समझनहार ।।५५५।।
मुहुमिलि रंजन मंडनी, सुहृदी भजन अतीत।
गाँसनि[२] कसरनि औगती[३], कागा होइ न मीत ।।५५६।।
खाये पीये मन दिये, कागऊ बरु पतियाइ।
अपथ अपसदी[४] भजन सुनि, खरे[५] निबारहिं[६] जाइ ।।५५७।।
श्रीव्याससुवन पद सुखद सौं, लगै हिलग कौ हेत।
निबटि भजन तब हिय परै, सब गुन वस्तु समेत ।।५५८।।
जहाँ न औचक[७] भजन की, अनखाँवनौ[८] सयान।
मुहुलगि ओछो थोथरौ, बिना नेह संनमान ।।५५९।।

१- अच्छी समझ वाले, २- रहस्य, ३- अवगति, दुर्गति, ४- अधम, ५- खड़े खड़े, अथवा पूर्णरूपेण, ६- खाली लौट जाते हैं, ७- अकस्मात्, ८- खिझाने वाला।

सनमानी सुहृदी सुजन, हियैं भजन सतभाव ।
धर्मी मेली मंगली, मिलत वस्तु मन चाव ॥५६०॥
सोइ सनमान सहाउ सुख, मनमेली सौं भेंट ।
विमल सुहृद मन वस्तु में, बिमलैं भजन समेट ॥५६१॥
भजन विचारै चौकसी, चोखौ सुहृद सयान ।
श्रीव्याससुवन रस रीति रति, पहुँचे सुजन सुजान ॥५६२॥
रति रस रीति समीति में, विमल गैल दई काढ़ि ।
श्रीरसिक सिरोमनि सुहृदसुख, सुजन मुदित मन बाढ़ि ॥५६३॥
सुहृदी चोखे चौकसी, सोई लगि हैं बाट ।
तन मन लच्छन गारि गहि, खरी कठिन है डाट ॥५६४॥
चाल रसिकमनि लाल की, चौकस चोखे नेह ।
खरी कठिन है लगन मग, भजन पहूँचे ग्रेह[1] ॥५६५॥
सुकृती सुहृदी सुजन जन, वस्तु विमल गुन गाइ ।
श्रीव्याससुवन बल भजन के, पहुँचेंगे घर जाइ ॥५६६॥
प्रेम भजन की चटपटी, जाके हिये रमात ।
खरी कठिन है लगन की, कल न परत दिन रात ॥५६७॥
प्रेम भजन की चटपटी, ताहि सुहाइ न आन ।
कल काहे की रैन दिन, रति जब पकर्‌यौ प्रान ॥५६८॥
प्रान ललक रति जब गह्यौ, तब कछु धीरज नाँहि ।
भजन चौंप हिय वस्तु रति, सोचत जाम[2] विहाँहि ॥५६९॥
खरी कठिन है मोहि यह, बनि है कौन बनाउ ।
हौं हूँ जीव अमंगली, मंगल सौं पर्‌यौ दाउ ॥५७०॥
मंगल निधि सौं काम मम, निपट अमंगली जौरु ।
अबकैं ऐसीयै बनी, डीठि न आवै और ॥५७१॥

१- गृह, घर, २- प्रहर ।

निपट अमंगली जीव हों, प्रभु में मंगल निधान ।
पदा पटोरें[1] ग्रंथ ज्यौं, बन्यौं ऐसौई बान ॥५७२॥
ऐसिय बान बनाऊ अब, मंगल निधि सौं पेच ।
जो अमंगली जीव हों, नेठमि[2] परि है नेच[3] ॥५७३॥
समरथ मेरौ खसम है, मंगल अखिल निधान ।
रसिक सिरोमनि सरन सुख, पालै परम सुजान ॥५४४॥
श्रीरसिक नृपति हरिवंशजू, समरथ लैंहि निबाह ।
सरनागतिन कृपाल प्रभु, हौं बल बेपरवाह ॥५७५॥
भजन मनोहर मानसर, रूप सुधा रस वारि ।
गुन मुक्ता मन हंस चुग, लच्छन वस्तु विचारि ॥५७६॥
लच्छन वस्तु विवेक करि, भजन मानसर सेउ ।
मन हंसा मुक्ता गुननि चुगि, हियें परत है मेंउ ॥५७७॥
रूप अमीजल मानसर, भजन में मनव मराल[4] ।
गुन उज्वल मुक्ता चुने, प्रमुदित फिरैं रसाल ॥५७८॥
निर्मल गुन मुक्ता चुगै, भजन मानसर धीर ।
मन मराल आनन्द मय, अवगाहै छवि नीर ॥५७९॥
विमल भजन वर मानसर, मन मराल बड़भाग ।
निर्मल गुन मुक्ता चुनैं, वस्तु मांझ अनुराग ॥५८०॥
भजन मानसर छवि अमी, गुन मुक्ता ता मांझ ।
मन मराल चुगै वस्तु रति, प्रमुदित दिन अरु सांझ ॥५८१॥
भजन मानसर एक यह, वानी श्रीहरिवंश ।
गुन छवि मुक्ता वस्तु भरि, चुनहिं सुजन मन हंस ॥५८२॥
मन मराल सुजनई चुनैं, मुक्ताहल गुन रूप ।
भजन मानसर रसिक मनि, वानी अमल अनूप ॥५८३॥

१- बढ़िया वस्त्र, २- निश्चय ही, ३- नीची, ४- हंस ।

वानी श्रीहरिवंश की, भजन मानसर सार ।
गुन मुक्ता रुचि रूप पगि, सुजन मराल अधार ।।५८४।।
सुधा भजन रति मानसर, प्यारी विमल विहार ।
सुजन हंस सेइ सुख लहै, श्रीहरिवंश अधार ।।५८५।।
वानी निर्मल अमृत जल, रूप सरोवर मान ।
उज्वल जल सचि रसिक मनि, सुजन जनन के प्रान ।।५८६।।
वानी निर्मल मानसर, छवि जल अमृत सुवास ।
गुन मुक्ता मन हंस चुनि, बढ़ी रहत रति आस ।।५८७।।
वानी श्रीहरिवंश की, सुजन हंस वर वृत्ति ।
समझे सुहृदिन काज कल, श्रीव्याससुवन जू की कृत्ति ।।५८८।।
मुख कहैं हंस न होइगौ, अन्तर लच्छन काग ।
भजन सुहृदता आय है, श्रीगुरु प्रसाद बड़भाग ।।५८९।।
भजन सुहृद हिय सचि सदा, निर्मल जस मन भोइ[1] ।
मत्सर मंडन उरसि[2] तें, कहैं हंस क्यों होइ ।।५९०।।
भजन मंगली मानसर, अमृतादिक रस रूप ।
मन मराल गुन मन विमल, मुक्ता चुगै अनूप ।।५९१।।
भजन हंस ह्वै वौ कठिन, बहै न कौन हूँ वाइ ।
शुद्ध सचोटी जब ढरै, श्रीहरिवंश सहाय ।।५९२।।
पाखण्ड मंडन जिन करौ, कहत हौं प्रगट पुकारि ।
काज अकाजी होहुगे, अपजसु खाये मार ।।५९३।।
शुद्ध भजन की चाल चलि, ऐंड़ी बेंड़ी डारि[3] ।
और स्वाद लगैं औगती, जनम जायगौ हारि ।।५९४।।
जन्म जु बाज्यौ हारि है, असद सवादै आंन ।
सुद्ध भजन बिन बूड़ि है, सौहृद बिना सयान ।।५९५।।

१- डुबा, २- हृदय, ३- छोड़ दे ।

सुहृद भजन हित प्रभु कह्यौ, रसिक नृपति करि मोह ।
अवखद अपपथ औगती, ह्वै है सांई दोह[1] ॥५९६॥
भजन रतन है सुहृद में, भजनई लेह सँभार ।
सुद्ध सचौटी अनुसरे, पग धरै प्रेम निहार ॥५९७॥
प्रेम निहारे पग धरै, सुद्ध सचौटी गैल ।
सुहृद भजन सुजनहि लहै, बेपरवाही छैल ॥५९८॥
बेपरवाही छैल ते, जिन बल रसिक नरेस ।
सुकृती भजनहिं पहुँचि हैं, सुहृदी प्रेम प्रवेस ॥५९९॥
प्रेम ही परम प्रवेश जहाँ, निपट कठिन सी ठौर ।
प्रगटी सुजननि काज हित, लाल रसिक सिरमौर ॥६००॥
रसिक सिरोमनि लाल जू, गैल दई निवटाइ ।
पग धरिवौ सबकौ कठिन, सुहृदी सुजन खटाइ ॥६०१॥
सुहृदी सुकृती सुजन जन, तेई मग पाँइ धराँहि ।
मारग रसिक नरेस कौ, देखत सब डगुलांहि ॥६०२॥
मारग श्रीहरिवंश कौ, दुर्घट छियौ न जाइ ।
श्रीव्याससुवन पग उर धरैं, सुहृदी सुजन रमाइ ॥६०३॥
मारग बाँकौ रसिक मनि, सुजन सुहृद हित वृत्ति ।
प्रगट करी प्रिय प्रान पति, प्रेम पोषनी कृत्ति ॥६०४॥
दीन भजन आधीन है, फिरत तकें कछु ताक ।
वस्तु बचायें डरि चलै, औगतियनि[2] के धाक ॥६०५॥
दीन भजन के जतन सौं, वस्तु बचायें जाहि ।
कपट कुचालनि कौ ढका, लगिहै हियें डराहि ॥६०६॥
अनख असंगहि नास है, भजनी शुद्ध समीति ।
वस्तु बचावै या डरनि, कूर कुटील अनीति ॥६०७॥

१- द्रोह, २- अधम लोग ।

सौरभ सार समूह श्रव, पोष संतोष सँभार।
मन मादक मकरंद मधु, लच्छन दशा उदार ।।६३२।।
शुद्ध भजन अविरुद्ध गति, अमल अमित अगहाय[1] ।
रीति रसिकमनि लाल की, सुनेहूँ न समझी जाय ।।६३३।।
अपहुँच सुनिहूँ न समझई, शुद्ध सुभग सुख चाल ।
श्रीव्याससुवन हिय डीठि दै, चलैं भजन मन पाल ।।६३४।।
हियौ डीठि दै रसिकमनि, चरन कमल कल ताक ।
भजन वस्तु उर पूरि है, संभ्रम भागैं धाक[2] ।।६३५।।
संभ्रम दारिद्र आपदा, विस्मै विषम विहाँहि[3] ।
श्रीव्याससुवन रस रीति के, धाक विघ्न बहि जांहि ।।६३६।।
कीरति रीति समीति सुख, कीने प्रगट उदार ।
भजननि हित हरिवंशजू, विमल विहार पसार ।।६३७।।
विमल विहार सुसार सुख, प्रगट बताए धीर ।
श्रीरसिक नरेस उदार प्रभु, भजनी सुजननि पीर ।।६३८।।
भजनी सुजननि पीर करि, दीनी रीति बताइ ।
करुणासिंधु उदार प्रभु, रसिक सिरोमनि राइ ।।६३९।।
श्रीरसिक सिरोमनि राइ जू, करुणासिंधु सुदानि ।
गुन गम्भीर उदार प्रभु, बेपरवाही बानि ।।६४०।।
अलक लड़ौ आनँद अवधि, बेपरवाह सुभाउ।
भजन उदार सुसार सुख, वस्तु विचित्र बनाउ ।।६४१।।
चित्र विचित्र बनाव वर, भजन वस्तु परकास ।
प्रगटी रसिक नरेस जू, सांद्रानन्द[4] सुवास ।।६४२।।
कौन साज की चाल है, रास✲ विलास सुठान[5] ।
परिरंभन पूरन सुखन, चुम्बन मुख मधु पान ।।६४३।।

१- जो पकड़ में न आवे, २- दवदवा, प्रभाव, ३- छोड़ जाते हैं, ४- महन-आनन्द, ५- सुन्दर रचना। ✲पाठान्तर—राज

कौतुक कुशली केलि कल, कोलाहली विनोद।
प्रगट करी करतूत रति, गति मति माती मोद ॥६४४॥
प्रगट करी हरिवंशजू, ह्रिय बल निर्मल रीति।
गूढ़ उजागर उदित करि, सेवैं सुजन समीति ॥६४५॥
सुहृद सुजन सेवैं सुखद, रसद विसद सद रंग।
रीति रसिक मनि लाल की, मंगल मोद उछंग[1] ॥६४६॥
सुजननि ह्रित आनँद अवधि, रीति विमल दई खोलि।
भजनी सुख विलसत फिरैं, कोलाहलनि कलोल ॥६४७॥
इक तक ताकें धक दयें, धीरज धरैं ठहराइ।
इत उत चितयैं चौंध चित, अनत गिरैं डगुलाइ[2] ॥६४८॥
चाल सु श्रीहरिवंश की, गाढ़ी गहनि निहारि।
इत उत चितयें डगि परैं, जीवन जनम बिगारि ॥६४९॥
इत उत चितयें न बनैं, वस्तु परस चित डोर।
श्रीव्याससुवन पद सरन गहि, आठऊ[3] गाँठें छोर ॥६५०॥
मन क्रम वचन त्रिसुद्ध मति, इहि मग धरि है पाउ।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल बल, पूरौ परिहै दाउ ॥६५१॥
श्रीरसिक सिरोमनि पद सरन, पूरी परिहै ताहि।
दुर्लभ दुर्गम चाल में, समरथ लैंहि निवाहि ॥६५२॥
बानी व्यंग[4] बनाउ में, मन बाढ़ै पहिचानि।
श्रीरसिक सिरोमनि रीति रति,सुजन भजन यह बानि ॥६५३॥
सुहृदी भजनी सुजन जन, तिनकैं बल यह बानि।
शुद्ध सनेही सोभियें, नहीं और की कानि ॥६५४॥
शुद्ध सनेही सुहृद जन, सुजननि काज प्रकास।
तेई ठौरहिं पहुँचि हैं, भजन रम्यौ मन जास ॥६५५॥

१-गोद, २-डगमगाकर, ३-अष्ट पाशः–कुलं शीलं च मानं च जुगुप्सा चेति पंचमी। घृणां शंकां भयं लज्जां अष्टपाशैरिति स्मृताः ॥ ४-गूढ़ार्थ,व्यंजनार्थ।

भजन रसिक मनि लाल कौ, विमल रीति रति भाउ ।
सुजननि कारन प्रगट प्रभु, करि दयौ खसम बनाउ ।।६५६।।
अपने सुहृदी सुजन जन, तिनकौ बान्यौ बान ।
गूढ़ प्रगट करि रसिकमनि, भजनी भजन सनमान ।।६५७।।
भजननि कौ सनमान सुख, पोष सन्तोष सुनेह ।
श्रीव्याससुवन पद डीठि दै, धन्य सुजन धरि देह ।।६५८।।
राज समाजी काज गुन, वानी लाड़ लड़ाइ ।
प्रगटे श्रीहरिवंश जू, सुहृद सुकृत सतभाइ ।।६५९।।
सुद्ध सुहृद सतभाउ में, भजन तत्तरति वस्तु ।
श्रीव्याससुवन पाछैं लगैं, सबनिधि आवै हस्त ।।६६०।।
हाथ परैं निज भजननिधि, श्रीव्याससुवन गहि पाइ ।
शुद्ध सचोटी सुहृदता, बाधा और बनाइ ।।६६१।।
शुद्ध सुहृदता भजन बिनु, श्रीव्याससुवन तें दूरि ।
बाधा और बनाउ भ्रम, जीवन जन्में धूरि ।।६६२।।
श्रीरसिक सिरोमनि सरन बिनु, भ्रम बाधा न नसाहिं।
भजन भाव नहिं सुहृदता, कहाँ ह्वै हियौ सिराहि ।।६६३।।
श्रीरसिकसिरोमनि चालसुख,सुहृद सुजन सिर भार।
सुकृतिनि सब प्रतिपाल है, बहिहै[1] खसम अभार ।।६६४।।
निरवधि आनन्द भार सिर, बहिहै सुहृदी सन्त ।
श्रीव्याससुवन पद पछि लगा, तेई रस में मन्त[2] ।।६६५।।
मंगल रस प्रमुदित फिरै, भजनी भजन सिंगार ।
विमल वस्तु गुहि रसिकमनि, वानी गुन हिय हार ।।६६६।।
वानी गुन निरमोल नग, नौखे[3] नौहरे[4] रूप ।
श्रीव्याससुवन गुहि रुचिर रस, सुजननिहिं धरिहिं अनूप ।।६६७।।

१- वहन करेंगे, २- मस्त, ३- अनौखे, ४- अद्भुत, अलभ्य ।

सुहृदी सुजनहिं पहिरि है, श्रीरसिक नृपति हियहार।
वानी रंग गुहि विमल नग, गुन गन रूप सिंगार ॥६६८॥
नव नव छवि अव[1] विमल नग, गुन वानी मृदु पोहि।
रूप भेद रचि रसिक मनि, सुजन धरैं मनि मोहि ॥६६९॥
लच्छन रूप सुभेद गुन, अव नग गुहे बनाइ।
वानी गुन श्रीव्यास सुत, रचना सुख समुदाइ ॥६७०॥
हीरा अवगुन रूप रंग, गुहे विचारि चित चाइ।
वानी गुन रचि रसिक मनि, सुजन मुदित हिय नाइ ॥६७१॥
सोई सुजन सुसाधु निज, बर वानी में प्रान।
तेई निधरक सोभिये, भजन माँझ सनमान ॥६७२॥
वानी श्रीहरिवंश की, निर्मल भजन अगाध।
जाही के हिय में रमें, सोई सुजन सुसाध ॥६७३॥
सुहृद संतोषी सुजन जन, समरथ भ्राजत[2] मान।
श्रीरसिक नृपति हरिवंश की, वानी रुचि रमि प्रान ॥६७४॥
तन मन प्राननि में रमें, वानी रसिक बर मनि राज।
सुकृती सुघर सुसुजन जन, करैं देह धरि काज ॥६७५॥
भजनहिं पकरैं सुभग मन, सुफल काज धरि देह।
श्रीगुरु वचन सँभार उर, वस्तु न परिहै छेह[3] ॥६७६॥
वस्तु सँभारै दाइ दै, गुन लच्छन गहि भेद।
भजन निरन्तर गुरु कृपा, चितहू न परसै खेद ॥६७७॥
श्रीगुरु प्रसाद करुना करैं, तिन धरि जान्यौ देह।
भजन स्वाद विमल्यौ फिरै, भाज्यौ भ्रम सन्देह ॥६७८॥
श्रीगुरु प्रसाद बड़भाग तैं, भजन स्वाद रमैं हीय।
मन विमुक्त विमल्यौ फिरै, वस्तु लगी रहै जीय ॥६७९॥

१- अंग, २- विराजत, ३- खण्डित, न्यून।

जिय में वस्तु रमी रहै, भजन सवाद मिठास।
श्रीव्याससुवन पद सरन बल, सुखनिधि में सावकास ॥६८०॥
श्रीव्याससुवन पद सरन सजि, निधरक तैं सुख लेहि।
भजन सवादिल मन परै, सैंत[1] वस्तु हृदै देंहि ॥६८१॥
भजन सवादिल मन भयौ, वस्तु सचै हिय हेत।
वानी प्रगट हरिवंश जू, गुन गन कौतक समेत ॥६८२॥
गुन लच्छन अरु भेद सद, ये लागे दशहि अनेक।
हिय बल समरथ प्रगट करि, श्रीरसिक सिरोमनि एक ॥६८३॥
हिय बल हिय सुख प्रगट करि, श्रीरसिक नृपति हरिवंश।
गिरा मोद मृदु मानसर, रमिहै भजनी हंश ॥६८४॥
गिरा गूढ़ श्रीरसिक मनि, प्रगटी समरथ चाइ।
स्वयं भजन सरि मानसर, भजनीय हंस रमाइ ॥६८५॥
भजन मानसर छवि सुधा, वस्तु भेद भरवाउ।
गिरा गुपति प्रभु प्रगट करि, सुजन हंस चितचाउ ॥६८६॥
भजनी सुहृदी सुजन जन, सोई हंस रमांहि।
गिरा गम्भीरे मानसर, और न ठिक ठहरांहि ॥६८७॥
गिरा गम्भीर सुधीर वर, भजन सरोवर मान।
भजनी सुजन मराल हित, प्रगटी खसम सुजान ॥६८८॥
गिरा भजन गुन मानसर, रूप अमी में नीर।
सुजन मरालनि मन रमन, प्रगटी रसिक नृप धीर ॥६८९॥
श्रीहरिवंश कृपाल जू, गैल चलाई कौन।
भजन भेद गुन अकह सुख, वस्तु विनोद सलौन ॥६९०॥
वस्तु विनोद सलौन गुन, गवित भेद प्रकास।
मारग भजन गम्भीर गति, चलैं सुजन निज दास ॥६९१॥

१- विना मूल्य, सेवत (सेवन करने पर)।

सुहृद सुजन इहि मग लगैं, समरथ दियौ सुधारि ।
सुकृतो भजनी काज कल, विमल वस्तु मन ढारि ॥६६२॥
सुकृती भजनी काज कल, मारग दियौ चलाइ ।
आनन्द अतुलित अमल गुन, सुख समूह समुदाइ ॥६६३॥
सुख समूह समुदाइ में, पैंड़ौ प्रेम प्रभाइ ।
जीवन वृत्ति सुसुजन जन, सर्वसु दाय उपाइ ॥६६४॥
प्रगटित श्रीहरिवंश कौ, पैंड़ौ परमानन्द ।
भजनी सुहृद सन्तोष ही, बिमले चलैं सुछन्द ॥६६५॥
भजनी सुजनई चलि सकैं, सुहृद बिना प्रभु दूरि ।
कपटी कुटिल न पावहीं, भरत बकुटियनि[१] धूरि ॥६६६॥
खरौ दूरि है कपट तैं, श्रीरसिक नृपति मग एह[२] ।
रंजन मंजन चातुरी, हाथ हू लगै न खेह[३] ॥६६७॥
तिनकौं प्रापति कहूँ नहीं, पाखण्ड मंडन देह ।
मारग रसिक नरेस की, क्यों करि परसै खेह ॥६६८॥
श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, पाखंड तजि गहि पाय ।
बल पूरन समरथ हिये, तौ मग लाग्यौ जाय ॥६६९॥
पाखण्ड छांड़ै सुहृदता, जब ही आवै हीय ।
मारग रसिक नरेस के, तब कछु सुधि परै जीय ॥७००॥
तबही सुधि तन मन परै, सुहृद भजन हिय देह ।
श्रीरसिक नृपति मारग गहै, निरवधि आनन्द लेइ ॥७०१॥
सुजन सुहृद सुकृती मिलै, तबहि भजन रस रंग ।
मन रुचि राचैं वस्तु सौं, साज काज लौं ढंग ॥७०२॥
भजनी ढंग वर भजन के, चरन कमल छत्र छाँह ।
जीव अकाजै काज लगि, जगत परे बिललांहि[४] ॥७०३॥

१- हस्त सम्पुट, अंजुलि, २- यह, ३- राख, ४- बिलबिलाते हैं ।

यहै जगत निज काज है, सुहृद सुजन सतसंग ।
भजन विमल में मन परै, नव आनन्द अभंग ।।७०४।।
सुहृदी भजनी सुजन जन, भागनि होइ मिलाप ।
विमल वस्तु में मन परै, परसै न जग परताप[१] ।।७०५।।
सुहृद सजाती सुजन जन, मिलहि होंहि बड़भाग ।
सरस परस मन मिलनियाँ, हियै वस्तु अनुराग ।।७०६।।
भजन वस्तु में मन परै, मिलत ही सुहृदी साधु ।
भजनी भागनि पाइयै, नाना सुखनि अगाध ।।७०७।।
सुजन सुकृत सुहृदी चलैं, श्रीव्याससुवन जू की गैल ।
हिये सुद्ध विन कठिन है, पाखंड में खल[२] मैल ।।७०८।।
खैल मैल हिय में सदा, सैल भैल मन मैल ।
सुहृद भजन बिन रसिकमनि, निपट कठिन है गैल ।।७०९।।
खरी कठिन है गैल यह, शुद्ध सचोटी ढार ।
भजन अगह क्यों कै गहै, पाखण्ड प्रबल विकार ।।७१०।।
सुहृद गैल श्रीरसिक नृप, प्रगट करी करि प्रीति ।
सीतल सुखद सुधा मई, भजनी भजन समीति ।।७११।।
सुहृद गैल श्रीरसिकमनि, भजनी सुहृद चलैं चाइ ।
हियें भजन बिन चातुरी, सबही कौं अगहाइ[३] ।।७१२।।
सुहृदी सुहृद मत्यौ फिरै, गहैं भजन निरमोल ।
हिय में श्रीहरिवंश जू, पूरैं निकसें बोल ।।७१३।।
पहुँचे पूरे बोल मुख, हियें भजन भरवाउ ।
जिय में श्रीहरिवंश जू, चलन वस्तु मन दाउ ।।७१४।।
मन के सुचलन वस्तु में, भजन चित छयौ छाँह ।
पूरे पहुँचे बोल मुख, श्रीव्याससुवन हिय माँह ।।७१५।।

१- प्रताप, २- कुटिल, ३- अग्राह्य, न पकड़ में आने वाला ।

वस्तु विमल अति नोहरी१, वानी विविध प्रकास ।
अंग अंग मृदु माधुरी, सौरभ रूप हुलास ॥७१६॥
सौरभ रूप हुलास सद, अब अब प्रेम प्रभाउ ।
वानो विमल विनोद निधि, नबौ नवौ चित चाउ ॥७१७॥
हिय में श्रीहरिवंश जू, मन वस्तु सौं समाज ।
भजन चित्त छायौ फिरै, यह भजनिनि कौ साज ॥७१८॥
भजनिनि कौ यह साज है, श्रीहित हिय गम्भीर ।
वगरि सुहृद मन वस्तु में, धरि निज सुतन सरीर ॥७१९॥
सोई सुजन सुधन्य वपु, श्रीव्यास सुवन घट मांझ ।
वस्तु स्वाद भोगी भजन, सफल सबै दिन सांझ ॥७२०॥
सुजनई भोगी भजन के, श्रीव्याससुवन घट राखि ।
अमित स्वाद चसकौ पर्‌यौ, मुदित वस्तु सुख चाखि ॥७२१॥
ताकौ भजन ते भजन के, श्रीरसिक नृपति घट मांहि ।
विमल वस्तु में विमल मन, समरथ पकरी बाँह ॥७२२॥
समरथ करुणा करि गहै, सुहृद सुद्धता देख ।
श्रीव्याससुवन पद सरन सजि, भजनी भयौ विशेख ॥७२३॥
सुजन भजन विमले फिरैं, उर धरि रसिक नरेस ।
निधरक बेपरवाह बल, समरथ कर गहे केश ॥७२४॥
समरथ कर चुटिया पकरि, बेपरवाह निसंक ।
विमल भजन निधि मांह है, मिट्‌यौ आपदा अंक ॥७२५॥
तेई श्रीहरिवंश के, सुहृद सुद्ध मन हीय ।
कबहूँ भजन न आय है, कुटिल कपट सठ जीय ॥७२६॥
कबहूँ हौंहि न भजन के, हीय कुटिल पाखण्ड ।
श्रीव्याससुवन पद सरन बिनु, भ्रमि है बहु ब्रह्मण्ड ॥७२७॥

१- अनौखी ।

श्रीव्याससुवन मृदु पद सरन, गह्यौ न सुहृद सुधारि ।
भूल्यौ भ्रमिहै वाइदें, कपट लै गयौ मारि ॥७२८॥
कपट अचानक लै गयौ, वाइ वाइदै बिगोइ[1] ।
श्रीव्याससुवन प्रभु भजन बिनु, चल्यौ पुँजीसी खोइ ॥७२९॥
बेपरवाही भजन सुख, निधरक फिरत निसंक ।
भजन स्वाद सद विमल मन, परसैं न कलिमल पंक ॥७३०॥
सुहृदी भजनी परसि पग, कलिमल पंक पवित्र ।
श्रीव्याससुवन पद पछिलगा[2], सुजनई हूजौ[3] मित्र ॥७३१॥
सुहृद सुजन सौं मित्रता, जीवन जनम फल सोइ ।
सत्त भाइ भजनी मिलन, पूरे भागनि होइ ॥७३२॥
पाखण्ड प्रबल हिये जटे[4], कहा समझै मन मूढ़ ।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, गति गाढ़ी गुन गूढ़ ॥७३३॥
गुन गन गुपति गंभीर गति, अलक लड़ी रति लाड़।
प्रगटी परमानन्द प्रभु, सुहृदी सुजननि चाड़ ॥७३४॥
गुन गन गर्व गुमान गति, अलबेली अनुराग ।
श्रीहरिवंश सुरीति रस, सुजन लहैं बड़भाग ॥७३५॥
जाके मन में रीति रस, सो मन बेपरवाह ।
और न जिय में आवई, वानी हित चित चाह ॥७३६॥
वानी श्रीहरिवंश की, कौन वस्तु कौ प्रकास ।
सर्वोपरि रस काढ़ि कै, सुहृद सुजन मंन वास ॥७३७॥
जीवन भजनी सुहृद जन, श्रीव्याससुवन गति रम्य ।
सुजन वृत्ति संतोष हिय, औरनि महा अगम्य ॥७३८॥
गाढ़ी गति गुन गूढ़ है, सुहृदी हिय करि जाइ ।
कोलाहल कौतुक कुशल, भजन वस्तु समुदाइ ॥७३९॥

१- नष्ट करके, २- पीछे लगने वाला, ३- होना, ४- जड़े हुये हैं ।

मन आवै नहिं दृष्टि पथ, गति गुन गूढ़ गम्भीर।
सुहृद भजन तें सुगम है, सनमुख शुद्ध शरीर ॥७४०॥
सुहृद भजन श्रीव्याससुत, सोई साधु शरीर।
मंगल वस्तु मन मेल सद, सुख विलसत है धीर ॥७४१॥
संपति सद सुख विलसि मन. भजनी सुहृद सभार।
श्रीव्याससुवन जू रसिकमनि, अपनौ कियौ उदार ॥७४२॥
सुहृद भजन जब सुद्ध हिय, तब गुन गुपत प्रवेस।
ताही अपनौ करि थपैं, नागर रसिक नरेस ॥७४३॥
रसिक नरेस सुजान प्रभु, नुकताई[1] लैं हैं मानि।
सुहृद सचोटी अनुसरै, ताही सौं पहिचानि ॥७४४॥
ताही सौं पहिचानि दृढ़, कानि मानि करि प्रीति।
सुहृद भजन के सुबस प्रभु, यहै रसिकमनि रीति ॥७४५॥
श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, यहै प्रकृति रस रीति।
सुहृद भजन सन्मुख भयौ, तासौं समझि समीति ॥७४६॥
समझि ताक ताकैं तहाँ, भजनी सुहृद सतभाव।
श्रीरसिक नृपति हरिवंश जू, छिन छिन सुहृद सहाउ ॥७४७॥
लाइक सुजन सहाइ कौं, और न वियौ[2] उदार।
श्रीरसिक नृपति हरिवंश जू, सुहृद भजन प्रतिपार ॥७४८॥
भजनी सुहृद प्रतिपाल कौ, प्रगट्यौ समरथ दान।
सुजन सन्तोषनि पोष रस, रसिक नृपति प्रभु जान ॥७४९॥
जानि सिरोमनि प्रभु प्रगट, सुहृद सुजन प्रतिपाल।
उदित उदार श्रीव्याससुत, अलक लाड़िलौ लाल ॥७५०॥
अलक लाड़िलौ लाल है, बेपरवाह उदार।
भजन रतन अति दान दिन, सुहृद भजन आधार ॥७५१॥

१- थोड़े से ही, २- दूसरा।

सुहृद सुजन आभार है, भरैं भजन दिन राति ।
विमल वस्तु में पारि[1] मन, कीनौ साधु सजाति ।।७५२।।
सोई सुहृदी साधु है, सुजन सजाती इष्ट ।
श्रीरसिक नृपति हरिवंश प्रभु, भजन स्वाद रमैं मिष्ट ।।७५३।।
मिष्ट भजन सद स्वादलनि[2], स्वादत सुजन सम्हारि ।
प्रगट विमल गुन रसिकमनि, दयें वस्तु अनुसार ।।७५४।।
भाँति भाँति के विमल गुन, लच्छन भेद समेत ।
रूप रमित रति गति गहिल, प्रगटी अब अब हेत ।।७५५।।
रूप रंग रस सुख सुलसि, सौरभ सद अवहेत[3] ।
अकह रीति श्रीरसिकमनि, मांडि रही रस खेत ।।७५६।।
सुहृदी सुजननि हित प्रगट, सौरभ रस गुन गात ।
विमल रीति श्रीरसिकमनि, सुद्ध सजाति समात ।।७५७।।
सुद्ध सजाती सुजन जन, तेई भलैं समाहिं ।
अमल रीति श्रीरसिक नृप, औरन कौ गम[4] नांहि ।।७५८।।
सौहृदता में भजन है, भजन तहाँ सतभाउ ।
गढ़ी बनाई चातुरी, पाखण्ड बड़ौ अदाउ[5] ।।७५९।।
प्रेम पराक्रम प्रबल अति, वानी बर सुकुँवार ।
रूप रंग रस माधुरी, भाँति भाँति के ढार ।।७६०।।
रूप रंग मधु माधुरी, गरव गरूर गुमान ।
अलक लड़ी आनन्दमय, वानी प्रेम अमान ।।७६१।।
अलक लड़ैती अनभती, आनन्द अतुलित रंग ।
सौरभ सार समूह सुख, गौर साँवरे अंग ।।७६२।।
अलक लाड़िली गर्व गुन, गहिल गुमान गरूर ।
श्रीव्याससुवन पद दीठि दै, रमैं सुजन सुख सूर ।।७६३।।

१- लगा, २- स्वादों से, ३- निश्चित कारण से, ४- प्रवेश, ५- विरोध, बैर ।

सुहृदी सुकृती सूर सुख, रमै सुजन सतभाइ।
प्रसाद श्रीहरिवंश कौ, सोई पै नियराइ[१] ।।७६४।।
जाके माथे पर चरन, श्रीहरिवंश धरांहि।
गाढ़े नाते नेह के, तेई नियरे जांहि ।।७६५।।
ताते नातौ मानि हौं, श्रीहरिवंश प्रतीति।
ताहि निरन्तर राखिहैं, लाल लड़ैंती रीति ।।७६६।।
लाल लड़ैती सहज हैं, ताही पर करैं मोह।
इनहिं लाज सन्बन्ध की, वह कैसौ हू होह ।।७६७।।
नातौ श्रीहरिवंश कौ, मानैं ललना लाल।
श्रीव्याससुवन पद सरन जे, करहिं सदा प्रतिपाल ।।७६८।।
वानी चित्र विचित्र में, चतुर चिते[२] रहे देख।
जाकौ यह सब खेल है, तासौं प्रीति विसेख ।।७६९।।
जाकौ यह सब खेलनौ, ताही नीके पेखि[३]।
श्रीरसिक नृपति तत्वज्ञ प्रभु, चरन हियें अवरेखि[४] ।।७७०।।
गढ़ी बनाई चोपरी, चतुराई नहीं काम।
सुद्ध सचोटी सुहृदता, भजनी भजन अराम ।।७७१।।
सुद्ध सुहृदता माँझ है, भजनी भजन अराम।
प्रीति बिना कछु दूसरी, और न आवै काम ।।७७२।।
सुद्ध सचोटी सुहृदता, भजनी भजन सुभाउ।
पाखण्ड फेर न जानई, वस्तु लये सतभाउ ।।७७३।।
वस्तुई आगै भजन गति, सुहृद सुजन यह बानि।
धीर अनत चितवै नहीं, मंगल मांड़ै थानि[५] ।।७७४।।
सुजननि कारन धीर प्रभु, संचित कीनौ सार।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल कौ, मंगल भजन पसार ।।७७५।।

१- निकट हो जाता है, २- चित्रवत, ३- देखो, ४- अंकित करो, ५- स्थान।

मंगल भजन पसार है, वस्तु रूप गुन रंग ।
रति विचित्र गति गर्व भरि, अब छवि अमित सुधंग[१] ।।७७६।।
अब अब सौरभ माधुरी, रूप रंग रस पूरि ।
वस्तु रसिकमनि लाल की, पहुँचे भागनि भूरि ।।७७७।।
वस्तु सुभग आनन्दघन, भजनीय सन्मुख होइ ।
श्रीव्याससुवन पद डीठि दै, सहज पहुँचि है सोइ ।।७७८।।
सुद्ध सुहृदता एक तें, नाहर सांप सुध्याहि ।
खग मृग थिर चर मन रमें, कपटी नहीं पत्याहि ।।७७९।।
कपटी होंहि न आपने, कीने सुहृद समीति ।
पाखंड भजन भर्‌यौ रहै, स्वारथ ही की प्रीति ।।७८०।।
कोटि करौ जो चातुरी, भजन कपट में नांहि ।
पाखण्डी पाखण्ड चलें, ज्यौं कागर घर मांहि ।।७८१।।
कपटी सेवैं कुटिलता, सूझे न सौहृद सुद्ध ।
न्यारे न्यारे ढंग हैं, पाखण्ड भजन विरुद्ध ।।७८२।।
पाखण्ड घट मदिरा भर्‌यौ, कबहूँ सुद्ध न होइ ।
सुहृद भजन संग दृढ़ करें, पवित्र वासना खोइ ।।७८३।।
सुहृद भजन सतसंग तें, को नहिं होइ पवित्र ।
पाखंड अरि हिय सेंत[२] सठ, खोवै आतम मित्र ।।७८४।।
भजन मित्र निज आपनौ, क्यों खौवै अज्ञान ।
कपट कसाई हाथ सठ, बाँधि दियौ पशु प्रान ।।७८५।।
बिना भजन पशु तें बुरौ, तामंहि कपट विकार ।
सुहृद भजन सतसंग नहिं, बूड़यौ सिर लै भार ।।७८६।।
सुहृद सुजन भजनी मिलें, पाखण्ड प्रवल नसांहि ।
सद गद[३] यह ही कपट कौ, और उपाय न जांहि ।।७८७।।

१- अच्छा ढंग, २- सेवन करने से, ३- विष (औषधि, काट) ।

सुहृदी भजनी सुजन जन, जिनकैं यही सँभार।
व्याससुवन पद सरन तकि, धक दियैं बारम्बार ।।७८८।।
श्रीव्याससुवन पद धक दियैं, तक ताकैं हिय चाल।
सुहृदी सुजनइ चलहिंगे, भजन विमल मति पाल ।।७८९।।
सुहृदी सुजननि भजन वित, हित संचित कर सार।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल वर, वानी विमल पसार ।।७९०।।
वानी विमल पसार है, भजन सार सचि रीति।
वस्तु प्रगट निज रसिकमनि, चित्र चातुरी भीति ।।७९१।।
भजननि कौं सुहृदी सदा, श्रीरसिक सिरोमनि राइ।
कपटिन कौं हठ औहठी, सरतिय[1] लेह छिड़ाइ ।।७९२।।
कपटिनि चित आवै नहीं, सुहृदिन कौ सनमान।
भजननि के प्रभु सुवस ह्वै, वस्तु रतन दियो दान ।।७९३।।
सुहृद सजाती सुजन जन, भजनी भावैं मीत।
रसिक नृपति जू औहठी, कपट सौं खरे अतीत ।।७९४।।
कपटिन सौं ऐंड़ाइलौ, कैहूँ न आवै ढार।
दीनन सों वत्सल सुखद, ऐंठाइल सिर छार[2] ।।७९५।।
भजनी सुहृदी भजन बस, श्रीरसिक नरेस उदार।
वस्तु मंगली मेल मन, सदई प्रभु भर भार ।।७९६।।
सदई प्रभु आभा रहै, सुहृदी सुजन सुहाई।
भजननि कों श्रीव्याससुत, पालैं दाइ[3] उपाई ।।७९७।।
भजनी सुहृद प्रतिपाल कों, नहीं प्रभु समरथ और।
करुनासिंधु उदार हैं, लाल रसिक सिरमौर ।।७९८।।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, चरनन की बलि जाँउ।
भजन भगति जानौं नहीं, मोकों ये पद ठाँउ[4] ।।७९९।।

१- शर्तिया, निश्चय ही, २- धूल, राख, ३- दाव, उपाय. ४- ठिकाना।

मोकों सरन सहाउ बल, गोरे ये पद मूल ।
श्रीरसिक नृपति हरिवंश जू, सदा रहौ अनुकूल ॥८००॥
श्रीव्याससुवन जू रसिकमनि, सदा सहाइक होंहि ।
करुणासिंधु कृपाल जू, निवटि[1] निवारिवौ[2] मोहिं ॥८०१॥
सरनागति है चरन तब, करहु कृपा यह जान ।
श्रीरसिक नरेस उदार प्रभु, सुखद अलक लड़ी वानि ॥८०२॥
चरन कमल परवान मन, श्रीव्याससुवन प्रभु मोर ।
हँसि प्रसन्न ह्वै चितइयै, कृपा कटाक्षनि कोर ॥८०३॥
चितवन तनक प्रसन्न की, काज संपूरन मोर ।
चरन कमल के आसरे, श्रीरसिक नरेस किशोर ॥८०४॥
श्रीरसिक नरेस किशोर प्रभु, चरन कमल हौं दीन ।
प्रणत पाल करुणानिधे, समरथ दान प्रवीन ॥८०५॥
सरनागत प्रतिपाल प्रभु, सुखद चित्त उपजाउ ।
भजन रीति रति वस्तु में, तुम करि लेहु बनाउ ॥८०६॥
मूरख सठ समझौं कहा, चरन सरन की लाज ।
बड़ौ भरोसौ रसिकमनि, करि लैंहौ कल काज ॥८०७॥
काज साज तुमहीं लगे, मोमें ढंग कछु नांहि ।
चरन कमल वर सरन हौं, समरथ लैंहि निवाहि ॥८०८॥
समरथ मेरौ खसम है, प्रभु निर्वारन हार ।
हौं बलि बेपरवाह दिन, धनिही[3] पर्‌यौ अभार ॥८०९॥
सद गद श्रीहरिवंश पद, सौहृदता अनुपान ।
व्याध वासना तन नसै, भजन पुष्ट ह्वै प्रान ॥८१०॥
अभय अमल श्रीहरिवंश पद, भजननि जीवन मूरि ।
तन मन व्याधि विकार गति, हियें वस्तु बल पूरि ॥८११॥

१- पूर्ण रूप से, २- उद्धार करोगे, ३- धन्य

तन मन व्याधि विकार सब, दूरि होंहि तत्काल ।
सद औषद श्रीहरिवंश पद, पोषन भजन रसाल ।।८१२।।
तन मन पोर्षाहि पुष्ट कर, नासहि व्याधि विकार ।
निर्मल श्रीहरिवंश पद, औषद सुखद सद सार ।।८१३।।
सुद्ध सुहृदता बाहिरै, हिय में पाखण्ड फेर ।
सोचि हो सोचि बिसूरि है, कठिन काज अवसेर ।।८१४।।
तहाँ काज अवसेर है, विलपि है बहुत विसूरि ।
पाखण्ड फेरन सैंति उर, पर्यौ भजन तें दूरि ।।८१५।।
परै भजन तें बाहिरै, पाखण्ड फेरनि पोषि ।
भेंट कही है भजन सौं, दुरि लागै संग दोष ।।८१६।।
सहज दोष अनहीं करै, पाखण्ड माँझ समात ।
सुहृद भजन नहिं परसई, भये कपट के गात ।।८१७।।
समझि परै जो भजन में, अढंग अविद्या डारि ।
सुधरैं श्रीहरिवंश बल, पकरै रीति विचारि ।।८१८।।
समरथ श्रीहरिवंशजी, मंगल रीति विचारि ।
कपट फेर छाँड़ै हियै, भजनो होत न बारि ।।८१९।।
कपट फेर तजि प्रीति सों, रीति कौं परै तुरन्त ।
श्रीव्याससुवन पाछौ गहै, तबही सुहृदी सन्त ।।८२०।।
हौं बलि श्रीहरिवंश की, भजन रीति निर्धार ।
गुप्त वस्तु प्रगटौ करी, मेंटि सकल जंजार ।।८२१।।
हौं बलि श्रीहरिवंश की, लक्षन भेद गुन काढ़ि ।
रूप रमित रस माधुरी, चलै वस्तु मन काढ़ि ।।८२२।।
अकढ़ कढ़ी अदरस दिखी, कीनी अगह गहाइ ।
सुगम करि दई रसिकमनि, भजननि हित सतभाइ ।।८२३।।
तन गुन इन्द्रिन की दसा, चलै सँभारै नेइ ।
ठोकि ठाक मन चौकसै, भजनई माँहै देइ ।।८२४।।

चौकस भजन में दयैं रहै, नैंक न निधरक होइ ।
अति चंचल मन सबहिं तैं, पकरैं ही सुधरि है सोइ ॥८२५॥
पकरि पकरि ही सुधरि है, मेलि दियैं अगहाइ ।
मुकरैं तैं मन बाइलौ, परिहै बाद बहाइ ॥८२६॥
मनको विकारैं बाइली, मिटहिं एक उपचार ।
श्रीव्याससुवन पद पछिलगा, स्वादिल करैं विचार ॥८२७॥
विविध विचार विवेक की, पारहि राखैं भीर ।
भजन अमित गुन रसिकमनि, होन न देइ उछीर ॥८२८॥
श्रीरसिक नृपति बर भजन सुख, दीने स्वाद उधारि ।
मंगल में मन पकरि है स्वादिल होइ सुधारि ॥८२९॥
भजन सलिल संग मीन मन, अगमहि पहुँचै जाइ ।
साँवन जल बल प्रीति सौं, सैल सिलनि चढ़ै धाइ ॥८३०॥
तहाँ तहाँ विमल्यौ फिरै, जहाँ जहाँ जीवन नीर ।
सिला सैल ऊसर सुगम, प्रिय संग मीन सरीर ॥८३१॥
प्यारे प्रीतम संग जहाँ, अगम सुगम सुख तोष ।
ठौर अठौर अविधि विधैं, मिलैं सनेही पोष ॥८३२॥
भजन सनेही संग जल, अगम सुगम सुख ठौर ।
बरिषा खेलै मीन मन, सैल सिलनि पर दौर ॥८३३॥
तहाँ कछू ब्यापै नहीं, भजन प्रीतमी संग ।
विमल वस्तु मन विमल है, नव अह्लाद अभंग ॥८३३॥
नव अह्लाद अभंग है, भजन सनेह मिलाप ।
वस्तु माँझ मन कढ़ि परै, सीतल होइ सन्ताप ॥८३५॥
सुहृद भजन में हानि है, प्रकृति विरोधी संग ।
भक्ति हियें हुलसै नहीं, असंगतीय मन भंग ॥८३६॥
मिलै संग असहाइ की, सुहृद भजन में टोट ।
वस्तु दुरावै सकुचि कैं, आगैं ही सूझै खोट ॥८३७॥

खोटे चोटे टोटकी, प्रकृति विरोधी मेल।
देखत ही मन मूरछै, परै भजन में झेल[1] ॥८३८॥
सुहृदी भजनी पाइये, मंगल मन अहिलाद।
दरसत परसत मिलत ही, नव नव भजन सवाद ॥८३९॥
छुटकि विमल खेलै भजन, छाँड़ि असंग अदाउ।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल जू, प्रगट्यौ वस्तु प्रभाउ ॥८४०॥
श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, वानी वरसत संग।
विमल भजन मृदु वस्तु सौं, दिन दिन बाढ़ै रंग ॥८४१॥
विमल भजन मृदु वस्तु रति, लच्छन गुन गति रूप।
करे प्रगट हरिवंश जू, रसिक सिरोमनि भूप ॥८४२॥
श्रीरसिक सिरोमनि भूप जू, हौं न्यौछावर जाँउ।
अकह अगह रति प्रगट करि, सुख सौहृद सतभाउ ॥८४३॥
भजनवर्द्ध कहैं सुहृदता, कीनौं जान्ति मिलाप।
फिर लागै हियरा जरन, बढ़ो ईरषा पाप ॥८४४॥
जीभ सवादै माछरी, लीलत लील्यौ लोह।
भजन प्रान उगलित चल्यौ, हिये पूरि गयौ छोह ॥८४५॥
सौहृद मुहुमिल देखिकै, मिल्यौ छूटि अकुलाय।
भजन दावि औगुन कढ़ै, यह दुख कहाँ समाइ ॥८४६॥
सुहृद भजन की चाल में, कौन पुरत रह्यौ फेर।
पाखण्ड प्रबल हियें बढ़ै, कहा वस्तु सौ मेरु ॥८४६॥
सुहृद भजन में ईरखा, यहै झाँखि है मोहि।
वस्तु बीच मत्सर परै, पाखण्ड प्रवल अरोहि ॥८४८॥
सुहृद संग बिन भजन नहिं, अरु भजन तहाँ सतभाउ।
बहे फिरत भ्रम बीच के, कहूँ टिकत नहिं पाँउ ॥८४९॥

1- रुकावट।

बिना सुहृद सुख भजन के, पग न कहूँ ठहराय।
सूनें हिय मन भक्ति नहिं, पाखण्ड निगलैं जाय ॥८५०॥
पाखण्ड लीले झारि मन, सुहृद भजन बल नाँहि।
सुकृत भक्ति सूझो नहीं, बचियै काकी छाँहि ॥८५१॥
सुकृति भक्ति वर विमल गति, रति मति जहाँ बढ़ाव।
श्रीरसिक सिरोमनि रीति कौ, सुहृद होइ दै दाव ॥८५२॥
श्रीरसिक सिरोमनि रीति बिनु, नांहि कहूँ निस्तार।
सुहृद होय हिय संचियै, वानी बर सुख सार ॥८५३॥
वानी बर सुख सार सचि, श्रीव्याससुवन करतूत।
सुहृद भजन बिनु आपदा, जनम जायगौ धूत ॥८५४॥
सुहृद भजन मन में बसै, श्रीव्याससुवन हिय मांह।
निर्भै निधरकता जहाँ, वस्तु गहे फिरै वाँह ॥८५५॥
ताकौ भजन सो भजन कौ, व्याससुवन जा होय।
सदई सुख छायें रहै, वस्तु आनि बसै जीय ॥८५६॥
ताके तन मन जिय हियैं, निर्मल वस्तु प्रकास।
श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, सुखद चरन उर जास ॥८५७॥
श्रीव्याससुवन पद घट बसैं, सुहृद भजन कौ मूल।
अकह अखिल सुख जानियै, इनहीं कौ फल फूल ॥८५८॥
इनहीं कौ फल फूल है, सकल सुखनि विस्तार।
तेई निर्भै विमल हिय, श्रीव्याससुवन पद चारु ॥८५९॥
साँचे सुहृद के सुवस प्रभु, थोरे माने मान।
चतुर सिरोमनि राय कै, चलै न कपट सयान ॥८६०॥
सांच सुहृद में लीन प्रभु, दीननि की दिन लाज।
नुकता जाननि जान मन, ज्यौं त्यौं करि हैं काज ॥८६१॥
सांचे हिरदे की गहैं, दीननि पर करि मोह।
नुकता मानैं भजन कौ, और कैसोहू होहु ॥८६२॥

चतुर मनि रसिक नरेस जू, दीननि परम कृपाल ।
सुहृद सचाई भजन जहाँ, करहि प्रीति प्रतिपाल ॥८६३॥
भजन बान तिहि तान तनि, छतियाँ भिदीं बनाइ ।
हियें नाठसल ह्वै रहै, जातें निकसत नांहि ॥८६४॥
मरमी जतननि काढ़ि है, उर उर में दै डाट ।
शुद्ध सुहृद मन मिलनियां, परि लेइगौ बाँट ॥८६५॥
जबही न रति की गति चलै, तबही लागै छोभ ।
गुनहूँ औगुन सम गनै, हियें रोस कौ खोभ ॥८६६॥
रति की चाल न समझिई, दवादवे चल्यौ जाइ ।
संग लगै रुचि प्रीति के, गुन गति रैहै आइ ॥८६७॥
कहा अनेक ठाटनि ठटें, कहा जुरैं बहुत समोति ।
तबही तौ कुसलात है, जब हिय भजन सुरीति ॥८६८॥
भजन समोती संग जहाँ, तहां व भजन उदोत ।
सुहृद सनेही इकमना, बड़े भाग संग होत ॥८६९॥
सुहृद सजाती इकमना, कहाँ पाईये संग ।
वस्तु हियें छाई फिरै, नवौ भजन मन रंग ॥८७०॥
कपटी कुत्सित कृपन कौ, मुख देखत ही हानि ।
भजन वस्तु अन्तर परै, दूरि तजहु पहिचानि ॥८७१॥
कपटी कुटिल कठोर के, संग बढ़ै संताप ।
दूरहिं तें परित्यागियै, अँखियनि देखत पाप ॥८७२॥
कुटलो कपटी कृतघनी, इनको एक सुभाउ ।
सुहृद भजन मन हिय नहीं, ठौरहिं देत अदाउ ॥८७३॥
इनहिं दाउ नहि सूझई, सुहृद भजन कौ ठौर ।
मत्सर छर अरप करि, सठ कुत्सित पैंड़ौ और ॥८७४॥
वानी सरवर कमल कल, मन मधुकर रह्यौ सेइ ।
भाँति भाँति की माधुरी, नौखे सौरभ लेइ ॥८७५॥

वानी अमी सरोवरहि, विकच सौरभी कंज।
मात्यौ मुदित पराग पी, मन मधुकर रति रंज ॥८७६॥
वानी अमल अमी सरहु, श्रवै सरोज मकरंद।
प्रमुदित मन अलि पान करि, नौखे आनन्द कन्द ॥८७७॥
वानी संगम अमृत सर, मकरंदी जल जात।
मन मधुकर सेवै सदा, पान करै निसि प्रात ॥८७८॥
वानी अमी समाज सर, फूले पूखन बंध।
मन अलि प्रापति प्रेम निधि, मृदु माधुरी सुगन्ध ॥८७९॥
मृदु माधुरी मकरन्द में, मन मधुकर मत्यौ चाखि।
सुखद स्वाद जकतकिलग्यौ, गुह्यौ हियौ रति राखि॥८८०॥
सुरत सौरभी कंज कल, फूले विवि संगम सिंधु।
अद्‌भुत अमी अमल श्रवत, मन अलि पियत सुगंध ॥८८१॥
वानी वचन सुरत न रति, भेद भजन परकास।
यह जीवन ज्यौं जीवका, अवर नहीं कछु आस ॥८८२॥
रत्ननि की प्रापति जहाँ, कौड़िन कौं मन देइ।
अलक लड़ौ आगै भजन, छाँड़ि अनंत कहा लेइ ॥८८३॥
बड़े भाग प्रापति भई, भजन रतन की खान।
छूटि गई तब सहज ही, कौड़िन सौं पहिचान ॥८८४॥
वस्तु नोहरी नेह निधि, निरुपम आई नैन।
कठिन रीझि कौ ठौर वहु, अनत कहाँ चित चैन ॥८८५॥
लोल ललित अव अव चलत, आतुर रस अकुलात।
दरस परस सुख स्वादिलिन, पावत हू न अघात ॥८८६॥
अव अव अनुरागी अमल, अमित अमोघ अमंद।
सद स्वादनि न अघात घत, परे ललक रति फंद ॥८८७॥
अव अव आनन्दनि भरे, खरे अरे चढ़ि चाइ।
दरस परस सुख स्वादलिनि, प्रमदित नहीं अघाइ ॥८८८॥

अब अब परस प्रवीन रस, रोम रमैं सुख स्वाद ।
लागत लालच लख गुनौ, अति आनंद अहलाद ।।८८९।।
अति आनन्द अहलाद लदि, अब अब गति गंभीर ।
जक सद स्वाद समूह सुख, विलसत विमले धीर ।।८९०।।
अब अब लोल लुभावने, लाड़ लड़ावन फूल ।
गरव गहिल गम्भीर गुन, मद मंथर गति झूल ।।८९१।।
मन चातिक वानी जलद, सदई सुधा चुचाई ।
यह पोख्यौ तोख्यौ रहै, लालच नहीं बुझाइ ।।८९२।।
मन रति चातिक नेह घन, वानी अमी सर झेलि ।
निरुपम सुख प्यारी प्रिया, प्रेम समागम केलि ।।८९३।।
वानी जलधर जगमगै, दामिनि कोटिक कांति ।
मन रति चातिक मुदित रटि, सुख संतोष रस माँति ।।८९४।।
वानी जलधर उमड़ि मद, धुरवा धनुक बग पाँति ।
स्याम घटा दामिनि दिपै, मन चातिक रटै माँति ।।८९५।।
मन चातिक बानी सुघन, दामिनि छवि सुख पेखि ।
रूप रंग रस वरषि अब, देखि जनम लै लेखि ।।८९६।।
वानी अंबुद दामिनी, दिपति बरसि अब मोद ।
मन चातिक विवि बीच अटि, सुख झकोर दुहुँ कोद ।।८९७।।
वानी जलधर जगमगै, दामिनि विराजमान ।
झलनि झकोरें रूप रस, मन चातिक सनमान ।।८९८।।
रूप झकोरें छवि झला, बानी घन वरखंत ।
भाँति भाँति दामिन लसै, चित चातिक हरखंत ।।८९९।।
अलक लड़ैती दामिनी, नौतन घन पति संग ।
वानी चातिक मन मुदित, बरखै रूप रस रंग ।।९००।।
मन चातिक रति रटि लगी, वानी जलधर चाइ ।
अगनित गुन दामिनि दिपै, स्याम सुकृती सतभाइ ।।९०१।।

लाड़ गहेली दामिनी, स्याम सु सुकृती मेह।
प्रेम पपीहा ह्वै मिलै, धन्य भजन कौ देह ॥६०२॥
घन दामिनि उनमान कछु, यह नेह निरन्तर बानि।
वानी श्री हरिवंश की, बड़े भाग पहिचानि ॥६०३॥
बड़े भाग पहिचानि है, गिरा रसिक मनि मेहु।
अलक लड़ी दामिनि लवै, रति चातिक मन नेहु ॥६०४॥
वानी पहिचानी जहाँ, तहाँ काज कल फैल।
सुगम करी हरिवंश जू, विविध भेद बर गैल ॥६०५॥
गैल चलाई औहठी, रसिक नरेस रसाल।
रीति समीति समूह सुख, अलक लड़ें जू की चाल ॥६०६॥
वानी सुचल नचाव चित, चतुर चौकसी चौंप।
गुन गंभीर रति ललित गति, तन मन ज्यौं कर सौंप ॥६०७॥
हियैं भीतरौ भेदलौ, मन में भजन गरूर।
श्री व्यास सुवन पद धक दियैं, वानी गुन मन पूर ॥६०८॥
वानी गुन मन सुख रमैं, बर विश्राम आराम।
सुजननि की संपति सुधा, परिपूरन गुन ग्राम ॥६०९॥
मंगल भजन बल मन रमैं, हियैं जमैं अनुराग।
श्री रसिक नृपति रस रीति गति, तब ही पूरन भाग ॥६१०॥
भूरि भाग जीवन सफल, वानी तत्त विचार।
श्री हरिवंश सुरीति विन, मिटै नहीं भ्रम भार ॥६११॥
रूप रंग मधु माधुरी, सोभा शुभ छवि जोत।
चौंप सुरस वानी प्रवल, पल पल पानिप होत ॥६१२॥
श्री रसिकनृपति हरिवंश कौ, सुखनिधि भजन अगाध।
प्रगट कर्‍यौ जग सुजन हित, वानी सैये साध ॥६१३॥
सोई साधु सु सुजन जन, वानी भजन सत भाउ।
श्रीव्यास सुवन रस रीति कौ, सुकृतीय दैहैं दाउ ॥६१४॥

सोई सुकृत सुहृदी सुजन, सोई सतभाइ सुधीर।
वानी श्रीहरिवंश की, सेवत सफल सरीर ॥६१५॥
वानी श्रीहरिवंश की, सेइ सफल धरि देह।
विमल भक्ति आई हियें, गही रीति रति नेह ॥६१६॥
रति गति मति पति प्रीति अति, बर वानी सु सँभार।
सुजननि काज श्रीरसिकमनि, दीनी प्रगट उदार ॥६१७॥
नाना नाद सवाद सद, लक्षन दसा गुन भाइ।
प्रगटे रस जस रसिकमनि, वानी लाड़ लड़ाइ ॥६१८॥
वानी लाड़ लड़ावनहिं, लालन दोउ दुलराइ।
प्रगटित श्रीहरिवंश जू, वानी रस समुदाइ ॥६१९॥
चुम्बन चख मुख मधु पियत, दोऊ तृपित भये न।
पल पल प्रवल चौंप रस, लंपट कहे रसिकमनि बैन ॥६२०॥
बैन विचित्रनि में प्रगट, ललना लाल विहार।
रूप रंग रस माधुरी, करे उदित सुख सार ॥६२१॥
वैननि मांझ बनाउ सब, केलि खेल कौतूह।
सहचरि नैंनन सींच रस, वरषत सुधा समूह ॥६२२॥
सुधा सुरत सुख बरषि रस, नैन सिरावति दासि।
हित जू के कुँवर लड़ावने, अतुलित आनन्द रासि ॥६२३॥
वानी श्रीहरिवंश की, समझै मरमी सुजान।
भाँति भाँति के भेद जहाँ, लाड़ लड़ावनौ आन ॥६२४॥
औरै लाड़ लड़ावनौ, अद्भुत रीति समीति।
दुलरायें दोऊ रसिकमनि, सेज संगमी प्रीति ॥६२५॥
दुलरावन दुर्लभ दसा, अलभ लहैगौ कौन।
करें कृपा श्रीरसिकमनि, हिय रमै भजन सलौन ॥६२६॥
भजन सलौनौ कठिन है, समझें जे बड़भाग।
प्रापति ह्वै है वस्तु, श्रीहरिवंश चरण अनुराग ॥६२७॥

वानी मंगल माधुरी, मोहन रूप रसाल।
बरसु विलास लड़ावनौ, दुलरावन दोउ लाल ॥६२८॥
हियै औरै मुख औरई, कपटी कुछित कुचाल।
सुहृद भजन बिन मानसर, काग महोछैं मराल ॥६२९॥
मानसरोवर सुहृदता, भजन संगमी मराल।
काग कपट संघट जहाँ, कहा विरमत हैं रसाल ॥६३०॥
बिना भजन की सुहृदता, सुजन मराल न मेल।
टिकहि न कौआ रौर में, कुटिल कपट कौ खेल ॥६३१॥
भजन माँझ कपट न मिलै, भजन तहाँ सतभाउ।
सुहृद सुकृति मिलत वस्तु कौ, पकरि देहिगो दाउ ॥६३२॥
दाव दियें फिरै वस्तु कौ, सुकृती सुजन समाज।
अन्त धीर चितवै नहीं, एक भजन सौं काज ॥६३३॥
सुजननि काजव भजन सौं, फिरत वस्तु के चाइ।
विमल भक्ति हिय में धरैं, औरनि कौं अगहाइ ॥६३४॥
छैल छबीलौ भजन है, ओहठी हठीली वानि।
सुजन सजाती भजन बिन, औरनि सौं न पिछानि ॥६३५॥
सुहृद सनेहिन कौ भजन, भजन सुजन सौं मेलि।
वस्तु प्रगट सब गुननि सौं, संगम सुखनि सुहेलि ॥६३६॥
संगम सुखनि सुहेल है, सुजन भजन इकताक।
मुदित परस्पर मिलि चलैं, डारे विमुख वराक ॥६३७॥



दोहा

सबसौं हित, निष्काम मति वृन्दावन विश्राम।
श्रीराधावल्लभ लाल कौ हृदय ध्यान मुख नाम॥

तनहिं राखि सत्‌सङ्ग में मनहिं प्रेम रस भेव।
सुख चाहत हरिवंश हित कृष्ण कल्पतरु सेव॥

निकसि कुंज ठाड़े भये भुजा परस्पर अंस।
श्रीराधावल्लभ मुख कमल निरखि नैंन हरिवंश॥

रसना कटौ जु अन रटौं निरखि अन फुटौ नैन।
श्रवण फुटौ जो अन सुनौं बिनु राधा यश बैन॥

